बाला सुबोधिनी ॥

चौथा भाग ।

प्रथम पाठ ।

शर्मा और राजकुमारों का संवाद ॥

े सुनो महाराज मैं आप को सुहृद्भेद की कथा
क्षिण दिशा में सुवर्णा नाम नगरी तहां एक
निया बड़ा धनवान था । किसी दिन उस ने एक
म्पत्ति देख के अपने मन में बिचारा कि किसी
भी लक्ष्मी इकट्ठी करूं तो भला हो । कहा है ।
बल द्रव्य विद्या देख के किस का म नमलीन नहीं
नी संपत्ति की बढ़ती देखकर कौन मन में अहंकार
क्योंकि धनाढ्य को सब कोई मानता है और यह भी
असाहसी और आलसी को लक्ष्मी त्यागती है और
होकर संतोष करके घर में बैठ रहते हैं तिन
का गी नहीं बढ़ाता । और यह भी लोग कहते
प्त वस्तु के लिये यत्न कीजिये तो वह मिले
चिंता न कीजिये तो न मिले । ऐसा बिचार
मन में कहने लगा कि जो धन पाके न
वह धन कौन काम आवे । बल भये शत्रु को न
बल को लेकर क्या करिये और विद्या रूपके

धर्म न जानिये तो ... है
उपकार न हो तो शरीर ... सुबोधिनी ।
भी उद्यम करने से धन बढ़ता है ... लाभ । फिर शरीर पाव
विना विद्या और धन के जो ... । कहा है कि थोड़ा थोड़ा
के समान है । ऐसे सोच विचार ... बूंद से घड़ा भरजाता है
और नंदक नाम बैलों को गाड़ी में जोत के और लुहार की भा
करके रथ पर चढ़के कशमीर देश की ओर चला । ... संजीव
सामर्थी को क्या भार व्यापारी को क्या विदेश मीठा बोले उस को
कौन पराया है । आगे आधे रस्ते पर जब वे पहुंचे तब दुर्ग नाम
महाबन में संजीवक का पांव टूटा पछाड़ा खाकर भूमि पर गिर
पड़ा उस को गिरा देख महाजन कहने लगा कि कोई कितनहू
उपाय करे फल विधाता के हाथ है ऐसा विचार कर उस बर्धे
वहां छोड़कर बनिया आगे बढ़ा और बर्धा वहां रहा । फिर
दिनों में हरे २ तृण खाय निर्मल जल पी अति बलवान हुआ
समय परमानंद करके डकरा । उस स्थान में एक पिंगल
बाघ राज्य करता था । वह नाहर उस समय जमुना के तीर
पीने गया । वहां जाय संजीवक के डडूकबे का शब्द सुन मन
मन भयमान हो पानी बिन पीये ही अपने स्थान में आकर बै
उस स्थान के निकट दमनक और करटक नाम दो सियार
थे यह चरित्र देख दमनक ने करटक से कहा हे मित्र तुम ने
देखा जो आज जमुना के तीर पर जाय बाघ बिन पानी पीये ...
ठांव दुचिता हो आन बैठा है इसका कारण क्या । करटक
कहा बंधु मेरी तो यह सम्मति है कि जिस की सेवा न
उसकी बात पूछने से क्या प्रयोजन । लोग कहते हैं । जि
में न जाना हो उसकी पैंडा पूछने से क्या । मुझ को
इसकी सेवा करते भी लाज आती है पर आहार के लोभ

हूं । कहा है । कि जो सेवा करके धन चाहते हैं वे अपनी शरीर पराये के हाथ बेचते हैं । और जो दूसरे के हेतु भूख प्यास घाम सीत बर्षा सहते हैं तिन की तपस्या में खोटाई जानना चाहिये । क्योंकि पराधीन परवश का जीना मृतक के समान है । मृतक किस को कहते हैं जो सेवक को स्वामी न चाहे और कहे इधर से उधर जा बोले मत खड़ा रह ऐसे अवज्ञा कर उस का मान मर्द्दन करे तो भी मूर्ख धन के हेतु पराधीन रहे । इसलिये मेरी जान में सेवक के समान मूर्ख जगत में कोई नहीं । दमनक ने कहा मित्र तुम यह बात मत कहो । कहा है । बड़ी जतन करके भले प्रभु की सेवा करनी चाहिये जिस से मनकामना पूरन हो छत्र चामर गज अश्व आदि सब लक्ष्मी के पदार्थ मिलें । जो न सेइये तो कहां से पाइये । इसलिये सेवा अवश्य करना चाहिये । फिर करटक ने कहा कि जो तुम ने कहा उससे हमे क्या प्रयोजन । कहा है । बिन बूझे बूझे किसी के बीच पड़े तो मरे जैसे एक बानर मरा । दमनक ने पूछी यह कैसी कथा है तब करटक कहने लगा । कि मगध देश में शुभदत्त नाम कायथ था उस ने धर्म्मारण्य नाम बन में क्रीड़ामंदिर के बनाने का आरम्भ किया । तहां कोई बढ़ई काठ चीरते २ उस में लकड़ी की कील देकर किसी काम को गया । तब एक बन का बानर चपलई करते २ बिपत्ति का मारा काल बस उसी काठ पर कील पकड़के बैठा और कील को निकालने लगा ज्यों उस ने चंचलता से युक्ति करके कील काढ़ी त्यों दोनों ... दबा और मर गया । इसलिये मैं कहता हूं कि बिना स्वार्थ ... करना चाहिये । दमनक ने कहा मित्र जो प्रधान ... सब काम करे सेवक को ऐसा बिचारना योग्य नहीं । ...ला भाई अपना काम छोड़ और के काम में पड़ना ... । और जो पड़े तो वैसे हो जैसे पराये काज में पड़

के बेचारा गदहा मारा गया । दमनक ने कहा यह कैसी कथा है तब करटक कहने लगा कि बनारस नगर में कोई कर्पूर-पाट नाम धोबी रहता था एक दिन वह अपने घर में सुख नींद में सोता था उस के घर में चोर पैठा और उस के आंगन में एक गदहा और कूकर था । गदहे ने चोर को देखके कुत्ते से कहा अरे यह तेरा काम है कि ठाकुर को जगा दे । उस ने कहा अरे मेरा अकाज मत कर । क्या तू नहीं जानता जो यह मुझे खाने को नहीं देता । सुन । कहा है । जब तक ठाकुर पर आपदा न पड़े तब तक सेवक का आदर भी न करे । फिर गर्दभ बोला सुन रे बावरे जो काम परे मांगे सो कैसा चाकर । उस ने कहा । जो काज परे सेवक को चाहे सो कैसा ठाकुर । सेवक और पुत्र समान हैं इन का पोषण भरण करना स्वामी को उचित है गदहा बोला अरे तू तो महापापी है । जो स्वामी का काज नहीं करता मेरा नाम स्वामिभक्त है इसलिये जिस प्रकार से स्वामी जागेगा सो उपाय मैं करूंगा । फिर स्वान ने कहा अरे स्वामी की सेवा शुद्ध भाव से करनी चाहिये । पर यह स्वामी वैसा नहीं । और जो तू मेरे काज में पांव धरेगा तो मेरा मौन तुझे लगेगा । उसकी बात सुन गदहा वहां से उठ धोबिया के निकट जा कान से मुंह लगा के रेंका । तब वह रजक नींद से चौंक पड़ा । गदहे को कान के समीप देख क्रोधकर लोहांगियों से मारा वुह उस मार से मरगया इसलिये मैं कहता हूं कि और के अधिकार में कभी न पड़ना चाहिये । हमारा काम तो यह है कि आहार खोजें पर आज हमें उस की भी चिन्ता नहीं क्योंकि कल्ह का मांस बहुत सा रक्खा है । उस से हम अनेक दिन पेट भर काटेंगे । दमनक ने कहा जो तू आहार ही के लिये सेवा करता है तो यह भला नहीं । राजा की सेवा से स्वार्थ परमार्थ सिद्ध होता है और मित्र साधु का

उपकार होता है शत्रु और दुष्ट दब जाते हैं इन सब बातों से राजा की सेवा करनी चाहिये। केवल उदर भरने के लिये नहीं। कहा है। संसार में जिस के आश्रय से अनेक लोग जीते हैं उसी का जीना सुफल है और सब सेवक समान नहीं होते सेवक सेवक में भी बड़ा अंतर है देखो कि कोई पांच कौड़ी पर भी काम कर देता और कोई लाख पर भी नहीं मिलता। कहते हैं। कि घोड़ा काठ पत्थर कपड़ा स्त्री पुरुष अन्न इन के मोल २ में बड़ा अंतर है। देखो कुत्ता सूखी हड्डी पावे तो उसी पर संतोष करता है और सिंह आगे सियार खड़ा रहे तौ भी उसे छोड़ हाथी को मारता है। इसलिये मैं कहता हूं कि जो बड़े हैं वे बड़ाही काम करते हैं। फिर देखो कुत्ता पूंछ हिलाता पेट दिखाता तब टुकड़ा पाता है और हाथी अपने स्थान में बंधा आदरपूर्वक आहार पाता है। कहा है। जगत में ज्ञान पराक्रम यश अहंकार सहित एक घड़ी भी जीना भला है और मानरहित कौवे के समान विष्ठा खाके अनेक दिन जीने से क्या जो मनुष्य अपनाही पेट पालके जीता है तो उस में और पशु में क्या भेद है। फिर करटक ने कहा कि कुछ हम तुम इस राजा के सेवक नहीं हैं। फिर दमनक बोला। भाई समय पाकर मंत्री होने का यत्न करना चाहिये। बड़ा पत्थर कष्ट करके उठाना चाहिये और सहज में गिराना चाहिये और अपनी प्रतिष्ठा रखने का उपाय सदा करना चाहिये। फिर करटक बोला भाई तुम कुछ जानते हो कि सिंह आज काहे डरा। दमनक ने कहा। इस में जानना क्या है पंडित बिन कहे ही जान लेता है और कहे से पशु भी जानता है। मेरी जान में राजा की सेवा में रहना चाहिये और जब राजा पुकारे यहां कोई है तब कहना चाहिये महाराज क्या आज्ञा होती है दास बैठा है इस भांति जब पुकारें तब इसी रीति से उत्तर देना

चाहिये और जो कुछ कहे सावधान होकर सुनले आज्ञा उल्लंघन न करें छन भर साथ न छोड़े परछाईं के समान संग लगा रहे। करटक बोला। भाई यह भी कहा है कि अनवसर में राजा के निकट जाय तो निरादर होय। दमनक बोला तौभी स्वामी को सेवक न छोड़े। कहा है कि कर के डर से उद्यम न करना और अजीरन के डर से भोजन न करना कपूत का काम है। करटक ने कहा कि तू राजा से पूछेगा कि तुम क्यों डरे। उस ने कहा पहिले राजा को जाकर देखूंगा कि प्रसन्न हैं अथवा उदास। उस ने कहा यह तू कैसे जानेगा। वह बोला जो ठाकुर सेवक को दूर से आते देख प्रसन्न हो आपही से बातचीत करे और आदर मान करे तो जानिये कि ठाकुर प्रसन्न है और जब राजा सेवक को आते देख आंख चुरावे और बातचीत करने में चित्त न दे तो जानिये कि स्वामी अप्रसन्न है। इसलिये तुम चिंता कुछ मत करो मैं राजा को जैसा देखूंगा वैसा ही बातचीत करूंगा कहा है कि जो मंत्री सयाने होते हैं वे अनीति में नीति औ विपत्ति में संपत्ति करके दिखलाते हैं। फिर करटक बोला भा समय बिन वृहस्पति भी बोले तो अपमान ही पावे मनुष्य क कौन चलावे। फिर दमनक बोला। अरे मित्र तुम मत डरो बिन अवसर न बोलूंगा करटक ने कहा जिस में अपना भला जा सो करो यह सुन दमनक पिंगलक राजा के पास गया और दंडव कर हाथ जोड़ संमुख खड़ा रहा। तब राजा ने हंसकर कहा दमन तू बहुत दिन पीछे हमारे पास आया इतना कहकर उसे बैठाया फिर दमनक ने राजा की अंतर्गत पाकरके और उसे भयमान जानकरके इस प्रकार से कहने लगा कि पृथ्वीनाथ आप से हम से अब तो कुछ काम नहीं है पर हम सेवक हैं हम को यह योग्य है कि जून कुजून आया करें। क्योंकि समय पर दांत कान कुरेदने

के लिये तिनका का काम भी पड़ता है तो जिस को हाथ गोड़ है ता उस से अनेक काम निकल सकते हैं यद्यपि बहुत दिन हुए आप ने मुझ से कुछ मंत्र नहीं पूछा पर मेरी बुद्धि नहीं घटी और अपमान किये जाने पर भी जिस की बुद्धि स्थिर रहे सो पंडित है । इसलिये महाराज आप को सदा विवेक करना उचित है संसार में उत्तम मध्यम अधम तीन प्रकार के लोग हैं जिस को जैसा देखिये उस को वैसा अधिकार सौंपिये और सेवक की सेवा पर दृष्टि कीजिये जो सेवक की सेवा राजा न समझे तो सेवक मन में महा दुखी हो । इसलिये महाराज आभरण और सेवक जहां का हो वहांई सोभा पावे । इतनी बातें जब दमनक ने कहीं तब सिंह बोला अहो दमनक तुम हमारे मंत्री के पुत्र होके हमारे पास कभी न आये ऐसा तुम को न चाहिये और अब आना कैसे हुआ । दमनक ने कहा कि महाराज मैं आप से कुछ पूछने के लिये आया हूं आप की आज्ञा पाऊं तो पूछूं सिंह बोला दमनक निस्सन्देह पूछो तब दमनक बोला आप यमुना के तीर जाय बिन पानी पिये अपने स्थान पर आन बैठे इस का कारण क्या कृपा कर मुझ से कहिये । सिंह बोला भाई यह बात तो किसी से कहने के योग्य नहीं पर तू मेरे मंत्री का बेटा है इसलिये तुझ से कहता हूं कि आज जब मैं पानी पीने को गया तब एक अति भयानक शब्द सुना उस के डर से यहां आकर बैठा हूं और जी में विचारता हूं कि इस बन में कोई महाबली जन्तु आया है । इसलिये इस बन से और जगह जाकर बसूं तो अच्छा है पर यहां रहना भला नहीं । यह सुन दमनक बोला महाराज कुछ कहने की बात नहीं है वह शब्द मैं ने भी जब से सुना है तब से मारे डर के थर थर कांपता हूं परन्तु मंत्री को ऐसा न चाहिये कि पहिलेही जगह छुड़ावे और लड़ाई करवावे और राजाओं को यह उचित है कि

आपदा में इतनों की परीक्षा ले सेवक स्त्री बुद्धि और बल । क्योंकि इन की कसौटी विपत्ति है । नाहर बोला मेरे मन में बड़ी शंका है । तब दमनक अपने मन में कहने लगा कि तुम को शंका न होती तो हम से काहे को बातचीत करते यों चित में समझ बोला । कि धर्मावतार जब तक हम जीते हैं तब तक कुछ भय न कीजिये । मैं करटक आदि सेवकों को बुलालेता हूं । नीति में ऐसा लिखा है कि आपत्ति के समय राजा अपने सब सेवकों को बुलाकर एकमता करके अधिकार सौंपे । इतना कह दमनक करटक को बुला लाया और राजा से मिलाया । फिर राजा ने उन दोनों को वागे पहिराय पान दे उस भय की शांति के लिये बिदा किया । आगे डगर में जाते करटक ने दमनक से कहा कि भाई तुम ने बिना समझे राजा का प्रसाद लिया सो भला नहीं किया क्या जानिये हम से उस भय का निवारण हो सके वा नहीं । कहा है । किसी की वस्तु बिन समझे न लेना चाहिये और [illegible] को विशेषकर न लेना चाहिये । क्योंकि जो काज न सरे तो [illegible] क्रोध करे और न जानिये क्या दुख दे और ऐसा भी कहा है [illegible] राजा की दया में लक्ष्मी बसती है पराक्रम में यश और क्रोध [illegible] काल । इसलिये मनुष्य नृप की आज्ञा में रहे तो भला । क्योंकि पृथ्वीपति मनुष्यरूप कोई बड़ा देवता है । फिर दमनक बोला मित्र तुम चुपके रहो इस बात का कारण हम ने जाना कि यह बैल के डकरबे का शब्द सुनकर डरा है । करटक बोला जो ऐसी ही बात है तो राजा से कहके उन के मन का भय क्यों न दूर किया । दमनक बोला यह बात प्रथमही नरपति से कही होती तो हम को तुम को अधिकार कैसे मिलता । कहा है कि स्वामी को सेवक निचिंत कभी न रक्खे जो रक्खे तो दधिकरण बिलार के समान उस की दशा हो । यह सुन करटक ने पूछा यह कैसी कथा

है तब दमनक कहने लगा कि अर्बुद पर्वत की कंदरा में एक महा विक्रम नाम सिंह रहता था जब वह सोता तब एक मूसा बिल से निकलकरके उस के केश को काटता जब वह जागता तब बिल में भागजाता । उस चूहे की दुष्टता देख बाघ ने मन में बिचारा कि उस के समान का जन्तु लाऊं तो यह मारा जाय नहीं तो उसके हाथ से सोने न पाऊंगा । यह बिचार गांव में जाकर एक दधिकरण नाम बिलार को अति आदर से ल्याकर रक्खा उस कंदरे के द्वार पर वह बैठा रहता और बिलार के डर से मूसा बिल से बाहर न निकलता और सिंह सुख से सोता इसलिये मूसे के डर से बाघ बिलार का अति आदर करता कुछ दिन के पीछे एक दिवस दांव पाय उस मूसे को बिलार मारकर खा गया । जब सिंह ने चूहे का शब्द न सुना तब मन में बिचारा कि जिस के कारण इस को लाया था सो काम तो सिद्ध भया अब इ आपरखने से क्या प्रयोजन । यह बिचार बाघ ने उस का आहार छोड़ कर दिया तब बिलार उस स्थान से भूख का मारा भागा । अर्पाये मैं कहता हूं कि ठाकुर को कभी निचिंत न रखना चाहिये । इतना कह दमनक करटक को एक रूख तरे ऊंची ठौर पर बैठाय कितने एक जंबुक उस के निकट रखके आप अकेला जीवक के पास जाकर बोला तू कहां से आया है । जब उस ने अपनी सब पूर्व अवस्था की कथा कही तब इस ने कहा इस बन का राजा सिंह है तुम यहां कैसे रहोगे फिर भयमान होकर बृषभ बोला तुम किसी प्रकार से मेरी सहायता करो तब दमनक अपनी ओर से अभयवाचा देकर बोला कि मेरा बड़ा भाई करटक राजा का मंत्री है पहिले उन से तुझे मिलाऊंगा पीछे राजा से भी भेंट कराऊंगा । इस प्रकार कहकर दमनक ने उस वलध को करटक के समीप लेजाकर उसके चरणों पर गिराया तब करटक

ने बैल की पीठ ठोककर कहा अब तुम इस वन में निर्भय चरते फिरो और किसी भांति की चिंता मन में मत करो इस भांति उसको डर मिटा साथ ले राजद्वार पर आकर बैठे । कहा है । कि बल से बुद्धि बड़ी है कहां हाथी कहां मनुष्य पर मनुष्य अपने बुद्धि से बस करता है । फिर संजीवक से करटक ने कहा अब तुम यहां बैठो हम राजा के पास से होआवें तब तुम को भी ले चलें । इतना कह वे दोनों सिंह के पास गये और प्रणाम कर हाथ जोड़ संमुख खड़े हुए तब राजा ने उन से पूछा कि जिस कार्य के लिये गये थे उस का समाचार कहो तब दमनक हाथ जोड़ नीचा सिर कर कहने लगा महाराज हम ने उस को देखा वह बड़ा बलवन्त है पर हमारे समझाने से वह आप से मिला चाहता है हम उसे अभी लाते हैं पर आप सावधान होकर बैठिये उस के शब्द से न डरिये शब्द का कारण बिचारिये जैसे एक कुटनी ने शब्द का कारण बिचार कर प्रभुता पायी । सिंह ने पूछा यह कैसी कथा है तब दमनक कहने लगा । श्री पर्वत में ब्रह्मपुर नाम नगर था उस पहाड़ की चोटी पर घंटाकरण नाम एक राक्षस रहता था उस नगर के निवासी उसे जानते थे क्योंकि उस का शब्द सदा सुना करते । एक दिन नगर में से चोर घंटा चोराकर पर्वत पर लिये जाता था उसे वहां बाघ ने मार कर खाया और वह घंटा बानरों के हाथ में पड़ा जब वे बजाते तब नगर निवासी जानते कि वह राक्षस डोलता है । किसी दिन कोई उस मरे मनुष्य को देख आया । उस ने सब से कहा कि अब घंटाकरण रिसाय के मनुष्य को खाने लगे । यह मैं अपनी आंख से देख आया हूं । उस की बात सुन मारे डर के नगर के सब लोग भागने लगे । तब कराला नाम एक कुटनी ने उस घंटे के बजने का कारण जानकर राजा से कहा कि महाराज मुझे कुछ दीजिये तो घंटाकरण को मार आऊं । यह

सुन राजा ने उस को लाख रुपया दिया और उस के मारने के लिये बिदा किया तब उस ने रुपया तो अपने घर में रक्खा और बहुत सी खाने की सामग्री ले बन की ओर चली वहां जाकर देखे तो एक बानर रूख पर बैठा घंटा बजा रहा है उसे देख इस ने एक ऊंचे पर सब सामग्री बिथरादी । वह बानर देखते ही वृक्ष से कूद वहां आया पकवान मिठाई फल मूल देख घंटा पटक खाने को ज्यों उस ने हाथ चलाया त्यों घंटा गिरपड़ा कुटनी घंटा ले अपने घर चली । नगर में आकर उस ने राजा को दिया और यह कहा महाराज उस को मैं मार आयी हूं । यह सुन और घंटा देख राजा ने उस की बहुत प्रतिष्ठा की और नगर के लोगों ने भी उस का बहुत आदरमान किया इसलिये मैं कहता हूं कि महाराज केवल शब्दही से न डरिये पहिले उस का कारण बिचारिये और तब उपाय कीजिये वह तो बैल है । यह सुन दमनक से सिंह ने कहा कि तुम शिष्टाचार करके मुझ से भेंट करावो तब दमनक ने संजीवक बरध से और पिंगलक सिंह से भेंट करवायी दोनों ने अधिक सुख पाया । कुछ दिन पीछे उन में बड़ी प्रीति भई । अब एक दिन स्वेतकर्ण नाम सिंह राजा का भाई वहां आया । तब संजीवक ने राजा से कहा कि आप ने जो आज मृग मारा था उसकी मांस है । सिंह बोला भाई करटक दमनक जानें । फिर संजीवक बोला आप उन से पूछिये कि है वा नहीं । फिर नाहर बोला । हमारे यहां यही रीति है जो लावें सो उठावें तब संजीवक बोला महाराज मंत्री को ऐसा न चाहिये कि जो आवे सो उठावे अथवा राजा की आज्ञा बिन किसी को देदे । आपदा के अर्थ धन बटोरना चाहिये । और मंत्री ऐसा चाहिये कि राजा के धन का संग्रह कर थोड़ा उठावे बहुत जोड़े राजा का भंडार प्रान के समान है सब कोई धन के लिये राजसेवा करता है धनहीन भये घर की

नारी भी नहीं मानती इस संसार में धनही की प्रभुता है जिस के पास है सोई बड़ा है । संजीवक ने जब ये बातें कहीं तब स्वेतकरण बोला भाई तू ने इन स्यारों को अधिकारी किया सो भला न किया तब वह बोला कि भाई जी तुम सच कहते हो ये दोनों मेरा कहा नहीं मानते और मुझे दुख देते हैं । फिर स्वेतकरण कहने लगा कि पुत्र भी कहा न माने तो राजा उसे भी दंड दे और सुनो भाई हम तुम्हारे हित की कहते हैं कि यह संजीवक बड़ा साधु है और तुम्हारा शुभचिंतक है इसलिये जो अपना भला चाहो तो इसी को अधिकारी करो । राजा ने यह बात भाई की सुनकर संजीवक को अधिकारी किया और दमनक करटक से अधिकार छीन लिया तब दमनक ने करटक से कहा अब मित्र क्या करिये यह तो हमारा ही किया दोष है पर मैं इन दोनों में बिगाड़ करादेता हूं । करटक बोला तुम कैसे बिगाड़ कराओगे । दमनक बोला मित्र जो काज उपाय से होता है बल से नहीं । जैसे एक सांप को कौवे ने मरवाया तैसे मैं भी उसे मरवाऊंगा । करटक ने कहा यह कैसी कथा है । तब दमनक कहने लगा कि उत्तर दिशा में विद्याधर नाम पर्वत था वहां एक पेड़ पर एक काग और कागली रहें और उसकी जड़ में एक सांप रहता जब कागली अंडा देती तब सांप रूख पर चढ़ खाजाता और अंडों के लालच से नित वृक्ष पर चढ़ उस के खोंते में जाकर बैठता । फिर कागली गर्भ से भई तब वायस से कहने लगी कि हे स्वामी इस तरवर को तजकर कहीं अन्यत्र बसिये तो भला । क्योंकि कहा है । जिस की स्त्री दुष्ट मित्र सठ सेवक उत्तरदायक घर में नाग का वास उस का मरन निस्सन्देह होगा । इसलिये यहां रहना उचित नहीं । काग बोला हे प्रिये अब तू मत डरे क्योंकि अब मैं ने इस नाग का अधिक अपराध सहा पर अब मैं न सहूंगा । कागली बोली

तू इस का क्या करेगा काग बोला जो काम बुद्धि से होता सो बल से नहीं होता जैसे एक खरहे ने अपनी बुद्धि के प्रभाव से महाबली सिंह को मारा तैसे मैं भी इसे बिन मारे न छोड़ूंगा। कागली बोली यह कैसी कथा है तब काग कहने लगा कि मंद्राचल पर दुर्दन्त नाम एक सिंह था वह बहुत जीव जंतुओं को मारा करता। एक दिन बन के सब जंतुओं ने बिचार कर आपस में कहा कि यह सिंह नित आकर एक जंतु खाता और अनेक मारता है। इसलिये इस के पास चलकर एक जंतु नित देने को कह आवें और बारी बांध के पहुंचावें तो भला। ऐसे वे आपस में बतियाकर सिंह के पास गये और हाथ जोड़ प्रणाम कर मर्याद से उस के सामने खड़े भये। इन को देखकर नाहर बोला तुम क्या मांगते हो इन्हों ने कहा स्वामी तुम आहर के लिये नित जाते हो अधिक मारते हो अल्प खाते हो। इसलिये हमारी यह प्रार्थना है कि हम लोग तुम्हारे खाने के लिये एक जंतु नित यहांहों पहुंचाय जायंगे तुम परिश्रम मत करो। उस ने कहा बहुत अच्छा। इस प्रकार से वे बाघ से वचन कर आये। आगे जिस की पारी आती सो जाता और वह खाता ऐसे कितने दिन पीछे एक बूढ़े खरहे की पारी आयी। तब उस ने अपने जी में बिचारा कि मेरा शरीर छोटा है उस का पेट इस से न भरेगा तब हमारे और भाइयों को खायेगा इस से हमारे सारे कुल का एक दो पारी में नाश होजायगा। इसलिये अपने जीतेही इसका नाश करूं तो भला यह बिचार अपने स्थान से उठकर धीरे २ चलकर उस सिंह के पास पहुंचा इसे देख सिंह क्रोध कर बोला अरे तू अबेर कर क्यों आया। खरहे ने हाथ जोड़ यह कहा कि स्वामी मेरा कुछ दोष नहीं मैं आप के पास चला आता था गैल में दूसरा सिंह मिला उस ने मुझ से कहा अरे तू किधर चला जाता

है मैं ने कहा अपने स्वामी के पास जाता हूं उस ने कहा इस बन का स्वामी ते मैं हूं और स्वामी यहां कहां से आया । फिर मैं ने कहा कि आज के छोड़ कर तो तुम को यहां कधीं नहीं देखा था । इतनी बात के सुनतेही मुझ को बैठा रक्खा तब मैं ने उस से कहा यह सेवक का धर्म नहीं जो स्वामी के काज में विलंब करे । तुम ने मुझे रोका है सो मेरा ठाकुर न जानेगा बरन मेरा कहा झूठ मानेगा और अपने मन में कहेगा कि यह घर जाय सो रहा था और मुझ से आकर मिथ्या भाषता है । इसलिये मुझे तुम मत अटकाओ मैं अपने स्वामी के पास हो आऊं वह मेरी बाट जोवता होगा तुम्हें यह वचन दिये जाता हूं कि मैं स्वामी से कहकर उलटे पांव फिर आता हूं । इस बात के कहने से उस ने वचन बन्ध कर बिदा किया । तब मैं तुम्हारे पास आया । स्वामी इस में मेरा क्या दोष है । इतनी बात सुनकर सिंह बोला अरे मेरे बन में और सिंह कहां से आया तू मुझे अभी देखला उसे बिन मारे मैं भोजन न करूंगा । इस प्रकार की बातें कर वे दोनों वहां से चले आगे २ खरहा पीछे २ सिंह जब चलते २ बन में कितनी एक दूर निकल आये तब खरहा एक कुंए के निकट जाकर खड़ा हो गया । सिंह बोला वह तेरा रोकनेवाला कहां है खरहे ने उत्तर दिया कि स्वामी वह आप के डर से इस कुंए में पैठ गया है। इतना सुन सिंह ने क्रोध कर कुंए के पनघट पर जा जो जल में देखा तो उसे उसी का प्रतिबिंब दृष्ट आया परछाहीं देखतेही जल में कूदा और डूब मरा । तब खरहे ने अपने स्थान पर आकर सब बनबासियों को सुनाया कि मैं सिंह को मारआया तुम्हारे जन्म २ के दुख को दूर किया । यह सुन सब बनबासियों ने उसे आशीर्वाद दिया ॥

इतनी कथा कह काग ने कागली से कहा कि हे प्रिये तुम ने देखा जो काम बुद्धि से भया सो बल से कभी न होता । फिर कागली बोली स्वामी जिस में भला हो सो उपाय करो । तब वायस वहां से उड़कर आगे जाकर देखे तो राजपुत्र किसी सरोवर के तीर पर वस्त्र शस्त्र आभूषण रख के उसमें स्नान करता था उस की मोती की माला लेकर वह उड़ा और अपने खोंते में जा उस माले को सांप के गले में डाल आप अलग बैठा । इस के पीछे लगे हुए राजा के सेवक भी चले आये थे उन्हों ने जब काग के चोंच में हार को न देखा तो उन में से एक रूख पर चढ़गया और देखा कि खोढ़ड़े में एक काला नाग माला पहिरे बैठा है । यह देख राजा के उस सेवक ने मन में बिचारा कि माला तो देखपड़ा पर अब कुछ उपाय करना चाहिये । यह सोच सर्प को सोंटों से मार कर माला लेजाकर राजपुत्र को दिया । इसलिये मैं कहता हूं कि उपाय से क्या बात नहीं हो सकी । फिर करटक बोला भाई जो तुम जानो सो करो । तब दमनक ने वहां से उठकर पिंगलक सिंह के पास जाकर कहा कि महाराज यद्यपि आप के पास हमारा कुछ काम नहीं है पर समय कुसमय आप के निकट हम को आना उचित है । कहा है कि जब राजा कुमार्ग में चले तब सेवक का धर्म है कि राजा को जताय दे और जो राजकाज बिगड़ता देखे और राजा से न कहे तो वह सेवक अधम है । पिंगलक बोला जो तुम कहा चाहते हो सो कहो दमनक कहने लगा पृथ्वीनाथ यह संजीवक आप की निन्दा करता था और कहता था कि अब यह राजा प्रतापहीन होगया प्रजा की रक्षा करनी चाहिये इस बात से महाराज मुझे ऐसा समझ पड़ा कि वह अब आप राज किया चाहता है । यह बात सुनकर राजा चुप रहा । फिर दमनक बोला । धर्मावतार तुम ने ऐसा प्रचंड मन्त्री

किया कि जो राजकाज की मता तुम से न पूछ एकाएकी आपही राज करने लगा जैसे चानक मंत्री ने राजा नन्दक को मारा कहीं वैसा न हो तब सिंह ने पूछा । यह कथा कैसी है तब दमनक कहने लगा कि किसी देश में नन्दक नाम राजा रहता था उस के मंत्री का नाम चानक था । राजा मंत्री को अपने राज काज का भार देकर आप निचिंत हो आनन्द करने लगा । एक दिन वह राजा प्रधान को साथ ले अहेर करने गया । बन में जाकर एक मृग देखा उस के पीछे उन्हों ने घोड़ा दपटा तब और लोग भी झपटे पर इन घोड़ों के समान किसी का घोड़ा न पहुंचा । फिर सब लोग अटपटा कर पीछे रहगये जब हिरन उन के हाथ से बचकर बन में घुस गया तब राजा भी घाम प्यास का मारा घोड़े से उतर कर एक रूख के नीचे बैठा । निदान राजा अपना घोड़ा प्रधान को थम्हाय तृषा का मारा वहां से उठ जल खोजता चला कितनी दूर जाकर देखे तो एक वापी निर्मल जल से भरी दृष्ट पड़ी वह देखतेही प्रसन्न होकर उसमें पानी पीने के लिये उतरा जब पानी पीकर फिरने लगा तब एक पत्थर में यह लिखा देखा कि राजा और मंत्री तेज और बल में समान हों तो दो में से एक को लक्ष्मी त्यागे यह बांचकर पत्थर पर कांदो लगाकर राजा मंत्री के निकट आया फिर मंत्री भी जल पीने उस बावरी में गया और उस पत्थर को देखकर मन में कहने लगा कि यह तो कोई अभी पत्थर पर कांदो लगा गया है । उस पत्थर को धो और उस पर का लिखा पढ़कर मन में सोचा कि राजा ने मुझ से दुराव किया । यह समझ मंत्री पानी पीकर राजा के पास आया राजा सो गया था मंत्री ने उसे मारडाला । इसलिये महाराज मैं आप से कहता हूं कि जो बलवान प्रधान हो तो आपही राज करे । कहा है । विष मिला अन्न दिया दान और दुष्ट मंत्री इन को निकट कभी न

रखिये । महाराज जो सेवक का धर्म था सो मैंने कह सुनाया आगे जैसी आप की इच्छा । मैं सच २ कहता हूं कि वह आप का राज लिया चाहता है । सिंह बोला संजीवक मेरा बड़ा मित्र है वह मेरा बुरा कभी न चाहेगा । फिर दमनक बोला महाराज कोई कितनहू करे पर दुर्जन अपने सुभाव को नहीं छोड़ता जैसे नीम को मधु से सीचिये पर उस का फल कभीं न मीठा होगा । कहा है । मित्र वह जो आपदा का निवारण करे कर्म वह जिस मे अपजस न हो स्त्री और सेवक वह जो आज्ञाकारी रहे बुद्धिमान वह जो गर्व न करे ज्ञानी वह जो तृष्णा न रक्खे और महाराज मंत्री वह जो राजा का हित चाहे । संजीवक आपका सुख देवा नहीं यह दुख का मूल है । शीघ्र इसका नाश कीजिये । इस बात के सुनने से सिंह ने जी में बिचारा कि बिन समझे बूझे किसी को दंड देना उचित नहीं । फिर दमनक बोला पृथ्वीनाथ संजीवक आजही आप के मारने के उद्यम में लगा है दुष्ट का यह स्वभाव है कि पहिले मीठी मीठी बातें कह मन धन हाथ में कर ले पीछे दुष्टता कर सर्वस खोदे । पिंगलक बोला वह हमारा क्या करेगा । फिर दमनक बोला कि महाराज तुम यह मत जानो कि हम बलवान हैं कहा है कि समय पा के छोटा भी बड़ा काम करता है जैसे एक टिटोर ने समुद्र को महा व्याकुल किया । राजा ने पूछा यह कैसी कथा है । दमनक कहने लगा । समुद्र के तीर पर एक टिटोर और टिटिहरी रहैं । जब टिटिहरी गर्भ से भई तब उस ने अपने स्वामी से कहा कि प्रभु मुझे अंडा देने की ठौर बताइये उस ने कहा यह तो भली ठौर है टिटिहरी बोली यहां तो समुद्र की तरंग आती है वह हमे दुख देगा टिटोर बोला जो यह हम को दुख देगा तो हम उपाय करेंगे टिटिहरी हंस कर बोली कहां तुम और कहां समुद्र इसलिये पहिलेही बिचार कर

काज करो तो पीछे दुख न हो फिर टिटोर बोला तुम निचिंताई से अहार करो हम समझ लेंगे। यह बात सुन उस ने वहां अंडा दिया और समुद्र भी उस की सामर्थ्य देखने के लिये लहर से अंडा बहा ले गया। तब टिटिहरी बोली स्वामी अंडा तो सागर बहा लेगया अब जो करना हो सो करो। टिटोर बोला प्रिये तू कुछ चिंता मत करे मैं अभी लेआता हूं। इतना कह वह सब पंछियों को साथ ले गरुड़ के पास गया और गरुड़ ने श्रीनारायण से कहा श्री-नारायण जी ने समुद्र को दंड देकर आज्ञा की समुद्र ने अंडा देदिया। टिटोर सब पक्षियों के साथ अंडा लेकर अपने घर आया इसलिये महाराज मैं कहता हूं कि बिन काम पड़े किसी की सामर्थ जानी नहीं जाती। फिर राजा बोला हम कैसे जानेंगे कि वह हमसे लड़ने को आता है दमनक बोला महाराज उस को सींघ का बल है जब सींघ सामने करे तो जानियो और जो तुम से होसके सो करियो। इतनी बात कह वहां से उठ दमनक संजीवक वरध के निकट गया और मुख मुखाय उसके सन्मुख खड़ा हुआ। तब उसने कुशल पूछी। इस ने कहा मित्र सेवक की कहां कुशल। क्योंकि उस का मन दिन रात चिंता ही में रहता है और विशेष करके राजा का सेवक सदा सर्वदा भयमान रहता है। कहा है कि द्रव्य पाय के गर्व कौन नहीं करता संसार में आकर आपदा कौन नहीं भुगतता काल के हाथ कौन नहीं पड़ता राजा किस का मित्र। जब दमनक ने ऐसी २ उदासी की बातें कहीं तब सजीवक बोला मित्र तुम पर ऐसी क्या गाढ़ पड़ी जो ऐसे उदास वचन कहते हो। दमनक बोला हितू मैं बड़ा अभागा हूं जैसे कोई समुद्र में बूड़ता हो सांप को पाकर न पकड़ सके न छोड़ सके तैसे मैं हूं। एक बात है उसे न कह सक्ता न कहे बिन रह सक्ता क्योंकि कहूं तो राजा रिसाय न कहूं तो मेरा धर्म जाय बड़े सोचसागर में पड़ा हूं।

संजीवक बोला मित्र जो तेरे मन में है सो कह उसने कहा भाई कहता हूं यह बात गुप्त रखियो तुम यहां हमारी सहायता से आये इसलिये अपजस से डर कर अपना परलोक सवांरने को सावधान तुम्हें कर देता हूं तुम चौकस रहियो तुम पर राजा की कुदृष्टि है उस ने आज मुझ से कहा है कि आज संजीवक को मारकर सकल परिवार को तृप्त करूंगा । यह बात सुन संजीवक बहुत दुखित हुआ तब दमनक बोला कि प्रीतम तुम दुख मत करो अब जो बुद्धि में आवे सो करो फिर संजीवक बिचारने लगा कि यह आप से कहता है वा राजा ने ऐसा बिचारा है फिर अपने मन में कहा कि इस की क्या सामर्थ है जो यह आप से कहे उसी ने कहा होगा इस का अब कुछ उपाय नहीं फिर दमनक से कहा कि भाई मैं ने राजा का ऐसा क्या काम बिगाड़ा है जो उस ने ऐसा बिचारा । कहा है । असाधु का उपकार करना और मूर्ख को उपदेश करना वृथा है फिर जैसे चन्दन में सर्प पानी में सेवार आता है तैसे सुख दुख भी आय घटता है । फिर दमनक बोला मित्र दुष्ट जन पहिले दूर से आते देख जो आदर कर बैठाय हित मे प्रिय बचन कहे सो न जानिये पीछे क्या दुष्टता करे । कहते हैं । समुद्र तरने को पोत अंधकार को दीपक गर्मी को बेना माते गज को आंकुस इस प्रकार से विधाता ने सब के उपाय बनाये हैं पर दुष्ट जन के मन का कुछ यत्न न कर सका । फिर संजीवक बोला । मैं घास पानी का खानेवाला होकर इस के बस में क्यों रहूं कहा है कि राजा के चित्त में भेद पड़ा हुआ मिटता नहीं जैसे फटिक का पात्र टूट कर फिर नहीं जुटता तैसे नरपति का मन भी उचट के फिर नहीं मिलता राजा का क्रोध वज्र के समान है वज्र से मनुष्य बचे तो बचे परन्तु भूपाल के क्रोध से नहीं बचता इसलिये दीन होकर मरना भला नहीं संग्राम करके मरना भला है

क्योंकि शूरता में दो बात है जीते तो सुख भोगे और मरे तो मुक्ति पावे । इसलिये इस समय युद्ध करना ही उचित है । फिर दमनक बोला अहो मित्र तुम से हम कहे देते हैं जब वह कान पूंछ उठाकर मुख पसारे उस समय तुम से जो पराक्रम बन आवे सो करियो । कहा है । बलवन्त होकर अपना बल न प्रकाश करे तो निरादर पावे । इतना कह दमनक बोला भाई अभी यह बात मन में रक्खो काम पड़े बूझी जायगी । ऐसे कह दमनक संजीवक से बिदा हो करटक के पास गया उस ने पूछा भाई तुम क्या कर आये वह बोला दोनों में विरोध करादिया करटक बोला इस में सन्देह क्या दुष्ट जन क्या नहीं कर सक्ता कैसाही बुद्धिमान हो पर असाधु की संगति से बिगड़ताही है । इस प्रकार दोनो बतियाये । फिर दमनक पिंगलक के पास गया हाथ जोड़ संमुख खड़ा होकर बोला महाराज सावधान होकर बैठिये पशु युद्ध करने को आता है ज्योंहीं सिंह सम्हल कर बैठा त्योंहीं बैल क्रोध भरा उस बन में पैठा फिर जब उसे देख सिंह उठकर धाया तब इस ने भी पहुंच के सींग चलाया और दोनों पशु यथाशक्ति लड़े निदान सिंह के हाथ से बैल मारा गया । तब सिंह पछताने लगा कि हाय मैंने यह क्या किया जो राज और धन का लोभ कर बपुरे बैल को मार महापाप सिर पर लिया । फिर दमनक बोला महाराजयह कहां की रीति है जो आप शत्रु को मार कर पछताते हैं राजा को शत्रु पर क्षमा न चाहिये इस भांति से दमनक ने सिंह राजा को समझा कर गद्दी पर बिठाया और आप मंत्री होकर सब राजकाज करने लगा ॥

॥ भूगोल का वर्णन ॥

दूसरे भाग में एशिया के देशों का नाम लिख आये हैं उन में से एक नाम ब्रह्मा है इस देश के दो भाग हैं एक का नाम अंगरेजी बर्मा और दूसरे का नाम ब्रह्मा । अंगरेजी बर्मा में अराकान

पैगू तनासरम के सूबे हैं । बंगाले की खाड़ी के पूरब तीर पर अराकान है यहां के लोगों को अंगरेज़ लोग मग के नाम से पुकारते हैं । और बैाद्ध धर्म का इस देश में प्रचार है पैगू देश बर्मा का आगे दक्खिनी सूबा था । यह देश सन् १८५२ ई० में अंगरेजी अधिकार में आगया । इस देश का प्रधान नगर रंगून ऐरावती नदी की पूर्वी धारा पर है ॥

तनासरम का सूबा बंगाले की खाड़ी के पूर्वी तीर बसता चलागया है । इसके प्रधान नगर का नाम मैालमीन है ॥

॥ ब्रह्मा देश का वर्णन ॥

ब्रह्मा देश पच्छिम ओर अंगरेजी बर्मा के और पूरब ओर चीन और सयम के बीच में बसा है । इस देश का मत बैाद्ध है । ऐरावती नदी पर इस का प्रधान नगर आवा बसा है । आवा के निकट एक नगर अमरपुर है जो पहिले इस देश की राजधानी था ॥

॥ सयम देश का वर्णन ॥

पैगू और तनासरम के पूरब ओर सयम खाड़ी के उत्तर सयम देश है । इसके मुख्य नगर का नाम बांकाक है ॥

॥ चीन देश का वर्णन ॥

चीन देश की उत्तर की सीमा एशियायी रूस है पूरब ओर इस के पासफिक महासागर है दक्खिन की सीमा हिन्दुस्तान है और पच्छिम ओर इस के स्वतंत्र तारतार है । इस की राजधानी का नाम पेकिन है और नानकिन भी इस देश में एक बड़ा नगर है । एक नगर का नाम केंटान है जिस में चाह का बहुत बड़ा वाणिज्य होता है इस देश के चारों ओर एक बहुत बड़ी भीत बनी है यहां के लोगों का मत बैाद्ध है ॥

॥ तिब्बत देश का वर्णन ॥

हिन्दुस्तान के उत्तर ओर तिब्बत देश है और चारों ओर बड़े २ ऊंचे पहाड़ों से घिरा है । इस में अनेक झील हैं और ब्रह्मपुत्र गंगा सिंध ये नदियां इसी में से निकली हैं । यहां के लोगों का मत बौद्ध है । लामा गुरु के नाम से बुद्ध की पूजा होती है । राजधानी का नाम लासा है और उसी में लामा गुरु रहता है ॥

॥ जापान देश का वर्णन ॥

चीन देश के पूरब ओर पासफिक महासागर में जापान देश है । यहां के लोगों का मत बौद्ध है और राजधानी का नाम जेडो है ॥

॥ एशियायी रूस का वर्णन ॥

एशिया के उत्तर में एशियायी रूस है इस के दो भाग हैं एक का नाम सैबीरिया दूसरे का नाम काकेसिया

॥ सैबीरिया का वर्णन ॥

इस देश में हिम बहुत पड़ता है और सोने चांदी की इस में खान है यह देश रूस के राजा के अधिकार में है सैबीरिया के पूरब ओर केम्सकेटका एक बड़ा उपद्वीप है इसी देश में अमर नदी के दक्खिन ओर सिंघेलिया नाम एक बड़ा टापू है ॥

॥ काकेसिया देश का वर्णन ॥

पारस देश के दक्खिन ओर यह देश है इसके प्रधान नगर का नाम तिफलिस है ॥

॥ स्वतंत्र तातार अर्थात् तुर्किस्तान का वर्णन ॥

यह देश अफगानिस्तान और पारस देश के दक्खिन ओर है यहां मुसल्मान लोग बसते हैं बोखारा इस देश में बड़ा नगर है

और एक बड़ा भारी नगर समरकन्द है । एक पुराना नगर बल्ख है जो अब उजाड़ हो गया है ॥

॥ अफगानिस्तान् का वर्णन ॥

इस देश की पूरब की सीमा हिन्दुस्तान है उत्तर ओर इस के तातार है दक्खिन ओर बलूचिस्तान और पच्छिम ओर पारस है इस देश में गर्मी में गर्मी बहुत पड़ती जाड़े में जाड़ा । अनार अंगूर बदाम आदि मेवे इस देश में बहुत अच्छे होते हैं । इस के प्रधान नगर का नाम काबुल है एक नगर जलालाबाद है और काबुल नगर के नैरित्य कोणपर गजनी नगर है कंधार नगर भी इसी देश में है ॥

॥ बलोचिस्तान् देश का वर्णन ॥

यह देश अफगानिस्तान और अरब सागर के बीच में है इस के प्रधान नगर का नाम केलट है ॥

॥ पारस देश का वर्णन ॥

इस देश की उत्तर की सीमा कास्पियन सागर और तातार है पूरब ओर अफगानिस्तान और बलोचिस्तान है दक्खिन ओर पारस का कोल है पच्छिम की सीमा एशियायी तुर्किस्तान है । इस देश में नोन की झीलें बहुत सी हैं इस देश के लोग सियाजात के मुसलमान हैं यहां का बादशाह स्वतंत्र है । बिना विचार के भी जिसे चाहे उसे मारडाल सक्ता । इस की राजधानी का नाम तेहरान है खलीफा लोगों के समय में इस्फहान नगर राजधानी था । एक नगर का नाम सीराज है इसी में हाफिज और सेखसादी उत्पन्न हुए थे ॥

॥ अरब देश का वर्णन ॥

इस की उत्तर की सीमा एशियायी तुर्किस्तान है इस के पूरब ओर पारस का कोल है दक्खिन ओर अरब का सागर है और पच्छिम का सिवाना रक्त सागर है । यह देश बहुत ही उजाड़ है कहीं २ यहां अनाज फल आदि उत्पन्न होते हैं । इस देश में घोड़े और ऊंट बहुत अच्छे होते हैं । यहां के लोग मुसलमान हैं । प्रधान नगर का नाम मक्का है । महम्मद साहेब की जन्मभूमि यही है । मुसलमान लोग तीर्थ के लिये यहां आते हैं मक्के से उत्तर ओर मदीना नगर है उस में मुहम्मद साहेब की समाधि है ॥

॥ एशियायी तुर्किस्तान का वर्णन ॥

एशिया में सब से पच्छिम यही देश है पूरब ओर पारस से दक्खिन ओर अरब से घेरा है इस देश में सब से बड़े नगर का नाम स्मर्ना है ॥

॥ योरप खंड का वर्णन ॥

इस की उत्तर की सीमा आर्टिक सागर है पूरब ओर इस के एशिया है दक्खिन का सिवाना काला सागर और मिडीटेरेनियन है इस के पच्छिम ओर आटलांटिक महा सागर है ॥

इस खंड में बहुत से बड़े २ देश हैं परन्तु इस ग्रन्थ में जो बहुत प्रसिद्ध हैं उन्हीं का वर्णन करते हैं ॥

(१) ब्रिटन और ऐरलेंड (२) रूस (३) (फ्रान्स (४) रूम ।

॥ ग्रेट ब्रिटन का वर्णन ॥

इसी देश में महाराणी श्रीमती विक्टोरिया जिन का धर्मराज्य इस हिन्दुस्तान में हो रहा है रहती हैं ॥

यूरप खंड में पच्छिम ओर यह टापू है इस देश के तीन भाग हैं इंगलेन्ड वेल्स और स्काटलेन्ड ॥

इंगलेन्ड और वेल्स की उत्तर की सोमा स्काटलेन्ड है पूरब ओर इस के जरमन महा सागर है दक्खिन का सिवाना इंगलिश चेनल है और पच्छिम ओर इस के आटलांटिक महा सागर है ॥

इस देश में पहाड़ बहुत थोड़े हैं इस देश के उत्तर भाग में टैन और टीस ये नदियां बहती हुई जाकर जरमन् महा सागर में गिरो हैं ॥

इस देश में दक्खिन ओर टेम्स नदी जरमन महा सागर में बहती हुई जाकर मिली है ॥

इंगलेन्ड में सब से बड़ी नदी सेवर्न है ब्रिटिश चेनल में जाकर मिली है और भी कई एक नदियां हैं ॥

यह ठंढा देश है पर आरोग्यदायक है पूरब की अपेक्षा पच्छिम और दक्खिन में गर्मी अधिक पड़ती है और पानी भी अधिक बरसता है ॥

इस देश में लोहा तांबा सीसा आदि बहुत होता है ॥

इन की भूमि उपजाऊ है गोहूं जव आदि की खेतियां विशेष करके होती हैं धान यहां नहीं उगता फल भी बहुत नहीं होता ॥

घोड़े बैल भेड़ी आदि बहुत और अच्छे होते हैं ॥

व्यापार जैसा अधिक इस देश का होता है वैसा सारी पृथ्वी भर में नहीं होता विशेष कर रूई ऊन लोहा और दूसरे धातु पाट चमड़ा साबुन आदि का व्यापार होता है ॥

इस देश में बाहर से व्यापार की ये वस्तु आती हैं अर्थात् रूई चीनी चाह कहुआ तमाखू रेसम ऊन सन अनाज सराब लोल और सहतीर और इस देश से वाणिज्य के ये पदार्थ भेजे जाते हैं अर्थात् रूई ऊनी कपड़े रेसमी कपड़े घड़ी छूड़ी और कोइला आदि ॥

इंगलेण्ड का राज्यनुशासन बादशाह लाठ और सामान्य लोगों के द्वारा होता है । एक कचहरी का नाम हौस आफ लार्डस् है उस में लाठ लोग अधिकारी रहते हैं । एक कचहरी का नाम हौस आफ कामन्स है जिस में सामान्य चुने लोग रहते हैं हौस आफ लार्डस और कामन्स मिलकर पारलियामेन्ट कहलाता व्यवस्था का प्रचार पारलियामेन्ट और बादशाह इन दोनों की संमति से होता है ॥

॥ सेना का वर्णन ॥

श्रीमती महाराणी की सेना में १५०००० मनुष्य हैं इन में से ७०००० सिपाही हिन्दुस्तान में रहते हैं जहाजी सेना सारी पृथ्वी में सब से बढ़कर प्रबल है ६०० युद्ध के जहाज हैं उन सब में १६००० तोप रहती हैं संग्राम के समय सेना और जहाज बढ़ा लिये जाते हैं ॥

महाराणी की साल की आमदनी ७५ करोड़ रुपया है ॥

इंगलेण्ड में विद्या का बड़ा प्रचार है और बड़े २ कवि और पंडित उत्पन्न हुए हैं ॥

अंगरेज लोग सचाई विश्वास परिश्रम और स्वतंत्रता की प्रीति के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं ॥

सारा देश का देश ख्रीष्ट धर्मानुयायी है और बैबिल ग्रन्थ को अपना वेद समझते हैं ॥

इंगलेण्ड की राजधानी का नाम लंडन है सारे संसार में ऐसा कोई सुंदर और समृद्ध और बड़ा नगर नहीं है इस में नाना प्रकार के स्थान और आराम बने हुए हैं कि उन का वर्णन नहीं होसक्ता यह नगर टेम्स नदी के ऊपर बसा है । इस नदी में सात पुल बहुत अच्छे बने हैं और इस नदी के नीचे सुरंग के द्वारा रस्ता बनी है केवल इस नगर में ३० लाख मनुष्य के लगभग हैं ॥

इंगलेन्ड में वायव्य कोण पर एक दूसरा नगर लिवरपूल है इस में भी बड़ा व्यापार होता है इस देश में और भी बहुत से बड़े २ नगर हैं जैसे ब्रिसल सौदाम्पटन, केम्ब्रिज, आक्सफोर्ड, यार्क ग्रीनविच आदि ॥

॥ स्काटलेन्ड का वर्णन ॥

इस देश की उत्तर और पच्छिम की सीमा आटलांटिक महासागर है पूरब ओर जरमन सागर है और दक्खिन का सिवाना इगलेन्ड है ॥

यह पहाड़ी देश है कई एक छोटी २ नदियां भी इस में हैं जैसे ट्वीड फोर्थ टे आदि । इस देश में ठंढ इंगलेन्ड की अपेक्षा अधिक पड़ती है इस के प्रधान नगर का नाम येडिनबरा है । योरप के बहुत अच्छे नगरों में यह भी गिना जाता है । ग्लासगो आदि और बहुत से भी नगर प्रसिद्ध हैं ॥

इंगलेन्ड के वायव्य कोण पर ऐरलेन्ड नाम एक टापू है उस के प्रधान नगर का नाम डबलिन है इस देश में भी महाराणी विक्टोरिया का अधिकार है ॥

॥ योरोपीय रूस का वर्णन ॥

इस देश का उत्तर सिवाना आर्टिक सागर है पूरब ओर इस के ऊरल पर्वत है दक्खिन की सीमा काकेसस पर्वत और तुर्किस्तान है और पच्छिम की सीमा आसट्रिया देश और बालटिक सागर है । नदी भी इस में बड़ी २ हैं डैना और वालगा । इस देश में वायव्य कोण पर लेडोगा और वनेगा नाम दो झील हैं । इस देश में लोहा तांबा नोन संगमर्मर पत्थर प्रधान आकरज हैं यह बहुत बड़ा देश है स्वभाव यहां के लोगों का क्रूर होता है यहां के लोग भी खेष्ट धर्मानुयायी हैं इस देश की राजधानी का

नाम सेन्टपीटर्स बर्ग है ५ लाख मनुष्य के लगभग इस में रहते हैं । रैगा मासको अस्ट्रकान आदि और बहुत से नगर हैं ॥

॥ फ्रान्स देश का वर्णन ॥

इस देस की उत्तर की सीमा इंगलिश चेनल है इस के पूरब ओर जरमनी देश है दक्खिन की सीमा मिडीटेरेनियन सागर है और पच्छिम का सिवाना आटलांटिक महा सागर है । फ्रान्स में बड़ी नदियां ये हैं लोअर सीन रोन इत्यादि । यहां का जल और वायु भी अच्छी है । इस देश में पत्थर नोन लोहा कोइला बहुत होते हैं प्राय: इस देश की भूमि उपजाऊ है गोहूं और अंगूर की खेती विशेष करके होती है । शिल्पकारी में इंगलेन्ड से उतर के यही देश है । अंगूर की शराब जैसी यहां बनती है वैसी कहीं नहीं बनती लोग यहां के शिष्ट बुद्धिमान और सुशील होते हैं । इस देश मे भी ईसवी धर्म का प्रचार है । इस देश की राजधानी पेरिस नगर सीन नदी पर है । योरोप में लन्डन को छोड़कर सब से बड़ा नगर है और भी इस में बहुत से नगर हैं जैसे की लेन्स मारसेलिस तोलोन आदि ॥

॥ रूम का वर्णन ॥

इस देश का उत्तर का सिवाना आस्टरिया और रूस है पूरब ओर इस देश के काला सागर है इस की दक्खिन की सीमा ग्रीस अर्थात यूनान देश है और पच्छिम ओर इस के एड्रियाटिक सागर है । इस देश में डेनूब नदी सब से बड़ी है जल वायु यहां का सामान्यत: अच्छी है । केवल लोहा मुख्य आकरज है ॥

भूमि उपजाऊ है पर खेती थोड़ी होती है लोग यहां के अभीमानी और आलसी होते हैं परंतु शूरता और सचाई में अच्छे होते हैं ॥

यहां के बादशाह को सुलतान कहते हैं तुर्क लोग मुसुलमानी मत रखते हैं। इस देश के राजधानी का नाम कुसतुनतुनिया अथवा इस्तंबोल है। इस नगर में ६५०००० मनुष्य रहते हैं ॥

॥ आफ्रीका खंड का वर्णन ॥

उस की उत्तर की सीमा मिडीटेरेनियन समुद्र है पूरब और रक्त सागर और हिंद का महा सागर है पश्चिम का सिवाना आटलांटिक महा सागर है। इस खंड की व्यवस्था बहुत थोड़ी जानीगयी है। इस खंड में पहाड़ जंगल निर्जल भूमि बहुत हैं। इस खंड में नदियां भी थोड़ीही हैं केवल ये प्रसिद्ध नदियां है नील। सेनीगाल। नैज़र। गेंबिया। इस खंड में जैसी गर्मी पड़ती है वैसी पृथ्वी भर में कहीं नहीं इस खंड में केवल दो ऋतु होती है ग्रीष्म और पावस। सोना बड़ी २ नदियों के बालू में मिलता है। गोहूं जव आदि भी यहां उपजता है। फलवाले पेड़ भी यहां होते हैं। ऊंट बैल भेड़ी घोड़े ज़ुराफा बाघ हाथी गैंडा और नदी के घोड़े आदि इस खंड में प्राय: होते हैं। हबशी लोग यहीं रहते हैं ॥

ईजिप्ट अर्थात् मिसिर देश इसी खंड में ईशान कोण पर है। पानी इस में बहुत थोड़ा बरसता तपन अधिक होती है गेहूं जव आदि पदार्थ भी इस में उत्पन्न होते हैं। लोग यहां के अरबवंशी और तुर्कवंशी हैं और मुसुलमानी मत का यहां प्रचार है। इस देश की राजधानी का नाम कैरो है यह नगर आफ्रीका में सब से बड़ा है और नील नदी [illegible] है एक दूसरा नगर समुद्र के तट पर सिकंदरीया है इस देश में [illegible] शुंडाकार खंभे हैं जिन को देख कर अचरज होता है कि मनुष्यों ने इन को कैसे बनाया होगा ॥

स्वेज नाम बंदर इसी देश में लाल सागर के पश्चमी सिरे पर है और धुंए के जहाज इसी में से होकर इंगलेण्ड और हिन्दुस्तान

में आया जाया करते हैं । इस खंड में एकोसोनिया आदि बहुत से देश हैं उन के वर्णन से कुछ फल नहीं ॥

॥ आमेरिका अर्थात् नयी दुनिया का वर्णन ॥

यह खंड आटलांटिक महासागर और पासफिक महासागर के बीच में स्थित है यूरप एशिया और आफ्रीका से जो पुरानी दुनिया कहलाते हैं अलगाने के लिये इसे अर्थात् आमेरिका को नई दुनिया बोलते हैं । यह नाम आमेरिका का इस लिये रक्खा गया है कि तीन सौ साठ बरस के लग भग हुआ कि यह खंड केवल यूरप के लोगों को ज्ञात हुआ और पृथ्वी के दूसरे खंड बहुत काल से लोगों को ज्ञात हैं क्रिष्टोफर कलम्बस ने सन् १४९२ ई० में पच्छिम ओर आटलांटिक महासागर के पार जहाज पर जाकर आमेरिका को पाया । आमेरिका के दो भाग हैं उत्तर औ दक्खिन। पनामा डमरूमध्य इन दोनों को मिलाता है । उत्तर आमेरिका पनामा डमरूमध्य से लेकर आर्टिक महासागर तक है इस की पूरब की सीमा आटलांटिक महासागर और पच्छिम की सीमा पास्फिक महासागर है । इस के निकट और भी समुद्र की कई एक बड़ी २ खाड़ियां हैं । उत्तर आमेरिका के प्रधान देशों के और उन के मुख्य २ नगरों के नाम नीचे लिखते हैं ॥

देशों का नाम	मुख्य नगरों का नाम
ब्रीटन का अधिकार	क्विबेक सेंट्रियाल
कनाडा	बहेरिकटन्
नया ब्रंजविक	हेलीफाक्स
नोवास्कोसिया	सेंटजान
न्यफौंडलेंड	वाशिंगटन न्यूयार्क फिलाडे
यूनैटेड स्टेट	लफ़िया । बास्टन्

मेक्सिको	मेक्सिको
सेंट्रल आमेरिका	गाटीमाला

उत्तर आमेरिका के प्रदेश जो ब्रिटन के अधिकार में हैं इस महाद्वीप के उत्तर में बराबर सब पड़े हैं। पर वायव्य कोण में एक खंड एशिया के अधिकार में है। आमेरिका का जो खंड रूस के अधिकार में पड़ता है उसे समुद्र का एक संकीर्ण जिसे बेहरिं जलडमरुमध्य कहते हैं एशिया से अलगाता है और यही पासफिक महासागर को आर्कटिक महासागर से मिलाता है॥

उत्तर आमेरिका के सब मध्यवर्ती देश और अति उत्तम २ खंड यूनैटेड् स्टेट्स् में पड़े हैं ये सब बहुत से सूबे हैं॥

यद्यपि इन में से प्रत्येक में भिन्न २ नियम हैं तौभी एक सामान्य राज्यानुशासन के अधीन हैं। कालीफोर्निया जहां थोड़े बरस बीते कि सोना बहुतायत से निकला है यूनैटेड् स्टेट्स् में से एक है यह देश उस महाद्वीप के पच्छिम और पासफिक महासागर के तट पर बसा है। यूनैटेड् स्टेट्स् के दक्खिन और मेक्सिको नामक एक बड़ा देश है॥

॥ पर्वतों के विषय में ॥

उत्तर आमेरिका के कई एक बहुत ऊंचे पहाड़ हैं पर एशिया के पर्वतों के ऐसे नहीं हैं। यहां एक बड़ी श्रेणी है यह श्रेणी उत्तर में आर्कटिक महासागर के तयें से दक्खिन में मेक्सिको तक प्रायः बराबर उस महाद्वीप में से चली गई है। इस के पूरब ओर आलघनी पर्वत है। ये आटलांटिक महासागर के तट से थोड़ी दूर पर यूनैटेड् स्टेट्स् में से चले गए हैं। पनामा डमरुमध्य का पाट जहां अत्यंत संकेता है केवल चौदह कोस का है॥

॥ नदियों के विषय में ॥

उत्तर और दक्षिण आमेरिका इन दोनों में बड़ी २ नदियां हैं पृथ्वी के हर एक दूसरे खंडों की नदियों की अपेक्षा ये बड़ी हैं ॥

एशिया के पहाड़ दुनिया में सब से ऊंचे हैं पर नदियां आमेरिका ही की अत्यंत लंबी हैं । उत्तर आमेरिका में सब से लंबी नदी का नाम मिसीसिपी है । यह नदी यूनैटेड् स्टेट्स् में से बहती हुई दो हजार कोस बहने के पीछे मेक्सिको की खाड़ी में मिलती है । इस नदी के तीर पर इस समय बहुत से नगर बस गये और धुंआकश इस में बहाव और चढ़ाव पर आया जाया करते हैं । उत्तर आमेरिका की दूसरी बड़ी नदी सेंटलारेंस् है । यह नदी कई एक बड़ी २ झीलों में से निकली है । इस का पाट क॰ कोस का है ॥

कनाडा का मुख्य मार्ग सेंटलारेंस है ॥

॥ झीलों का वर्णन ॥

पृथ्वी के सब और खंडो की अपेक्षा उत्तर आमेरिका में बहुत सी अनगिनत झीलें हैं ॥

इन सब में पांच बहुत निकट एक दूसरे के हैं । और उन धाराओं के द्वारा जो एक में से निकल कर दूसरे में जाती हैं संयुक्त हैं । इन पांचो के नाम ये हैं झील सुपीरियर झील ह्यूरन झील मिचि गन ऐरे झील और आंटेरियो । ऐरे झील आंटेरियो में से इस प्रकार से बही है कि पांचों झीलों के पानीयों को समुद्र में पहुंचाती है ।

॥ टापुओं के विषय में ॥

आमेरिका के टापुओं में से बहुत से उस के पूरब और आटलांटिक महासागर में और हिमसागर के सिवाने के भीतर ईशान

कोण की ओर चले गये हैं। आमेरिका के ईशान कोण के निकट बहुत से बड़े २ टापू हैं जो बेफिन के कोल के और उस के आस पास के समुद्रों के जलों से घिरे हैं इन में से सब से बड़े का नाम ग्रीनलेन्ड अर्थात हरित भूमि है। यह टापू बहुत लंबा चौड़ा देश सा दिखलाई देता है पर इस का तट ही लोगों को ज्ञात है॥

और दूर दक्खिन न्युफौंडलेन्ड अर्थात् नव प्राप्त भूमि नाम बड़ा टापू है। यहां पर अंगरेज लोग जाकर बसे हैं॥

न्युफौंडलेन्ड में मछलियां बहुतायत से होती हैं। तीन और दूसरे हैं। उन का नाम हैटी जमेका और पोर्टरीको है। ये परिमाण में बड़े भी हैं और सब बहुत छोटे हैं॥

वेष्टइंडीज के छोटे २ टापुओं में से बहुतेरे ब्रिटन के अधिकार में हैं अर्थात वहां पर ब्रिटन लोग जाकर बसे हैं और ऐसेही जमेका का भी बड़ा टापू ब्रिटन के अधिकार में है॥

॥ देशस्वभाव के विषय में ॥

उत्तर आमेरिका देशस्वभाव के विषय में एशिया के समान है। इस के बाजे प्रदेश बहुत गरम और बाजे बहुत ठंढे हैं इस का कारण वही है कि इस के भी बाजे प्रदेश उष्ण कटिबंध में स्थित हैं॥

॥ मनुष्यों का वर्णन ॥

आमेरिका को जब पहिले कलंबस साहेब ने पाया उस समय उस में इंडियननामक लोग केवल रहते थे। इंडियन लोगों के और दुनिया के दूसरे खंडों के लोगों के चेहरे में भेद होता है। उन के चमड़े का रंग तांबे के रंग के समान होता है इस लिये उन को कभी २ लाल मनुष्य कहते हैं। जैसे लोग हबशियों को काला मनुष्य कहते हैं। इसी प्रकार से हबशी और इंडियन लोग यूरप के मनुष्यों को श्वेत मनुष्य कहते हैं॥

मेक्सिको और मध्य आमेरिका के लोग विशेष करके स्पेनवंश के हैं और स्पेन के लोगों की भाषा बोलते हैं ॥

॥ दक्षिण आमेरिका का वर्णन ॥

उत्तर आमेरिका की अपेक्षा दक्षिण आमेरिका का परिमाण छोटा है और इस का आकार उस की अपेक्षा अधिक सुडौल है ।

आमेरिका के अत्यंत दक्षिणी कोण को केप हार्न कहते हैं । दक्षिण आमेरिका की उत्तर की सीमा करेबियन नाम समुद्र है। इस के पूरब ओर आटलांटिक महासागर और पच्छिम ओर पासफिक महासागर है। दक्षिण आमेरिका के किनारे के उधर थोड़े से टापू हैं । उन में से बड़े परिमाण के अल्प ही हैं। दक्खिन आमेरिका के पच्छिमी किनारे के उधर एक बड़ा प्रसिद्ध टापू है अर्थात् जुआनफरनेंडिज का छोटा टापू है ।

॥ दक्खिन आमेरिका के ये भाग हैं ॥

देशों के नाम	मुख्य नगरों के नाम
वेनज्यूला	करेकस
निवग्रेनाडा	संटफी
दक्केडार	कीटो
पेरू	लैमा
बोलिविया	चुक्कस्का
चिली	संटियागो
लाप्लाटा	ब्यूनसएरीज
ब्राज़ील	रियोजेनीरो
गियाना	जार्जटौन

इन देशों में से सब से बड़ा ब्राज़िल है । यह इस महा द्वीप के पूरब ओर भीतर आमेरिका में बहुत दूर तक फैलता चला गया है ब्राज़ील संपूर्ण यूरप की तीन चौथाई से अधिक बड़ा है । गयाना के तीन भाग हैं । इन खंडों में से एक ब्रिटन के अधिकार में है और दूसरे दो खंड हालेंड और फ्रांस के हाथ में हैं । जो भाग ब्रिटन के अधिकार में है उसे ब्रिटिश गयाना कहते हैं और दूसरे दो भाग डच्चगयाना और फ्रेंच गयाना कहलाते हैं ॥

॥ पर्वतों के विषय में ॥

एशिया के सिवाय भूगोल के दूसरे हर एक खंड की अपेक्षा दक्खिन आमेरिका में बड़े ऊंचे २ पहाड़ हैं । दक्खिन आमेरिका के बड़े ऊंचे पहाड़ों को एंडी कहते हैं ये सब ऊंची पर्वत श्रेणी के आकार के समान इस महाद्वीप के पश्चिम ओर बराबर पासिफिक महासागर के निकट चले गये हैं इन के शिखरों में से सब से अधिक ऊंचा शिखर चौबीस हजार फुट के निकट अर्थात सवा दो कोस ऊंचा है । पर यह वैसा ऊंचा नहीं है जैसा कि हिमालय पहाड़ है ॥

॥ नदियों का वर्णन ॥

दक्खिन आमेरिका की नदियां उत्तर आमेरिका की नदियों के समान दुनिया की बड़ी २ नदियों के मध्य गिनी जाती हैं । दक्खिन आमेरिका की सब से बड़ी नदी का नाम एमेज़न है । यह दो हजार कोस के निकट लंबी है । अर्थात उत्तर आमेरिका की मिसीसीपी नदी से थोड़ी छोटी है । इसलिये मिसीसीपी दुनिया की सब नदियों से लम्बी है । दक्खिन आमेरिका की नदियों में से दूसरी बड़ी नदी लाप्लाटा कहलाती है और तीसरी ओरनिको ये दोनो नदियां बहकर आटलांटिक महासागर में गई हैं । पृथ्वी के इस खंड में बहुत थोड़ी झीलें हैं ॥

॥ मनुष्यों का वर्णन ॥

दक्खिन आमेरिका के आदि रहनेवाले उत्तर आमेरिका के आदि लोगों के समान इंडियन हैं पर इस समय के रहनेवाले में बहुत से लोग यूरप के लोगों की संतान में से हैं। ये लोग इस के भिन्न २ खंडों मे जाकर बसे हैं ॥

॥ व्याकरण ॥

॥ क्रिया के विषय में ॥

क्रिया धातु से बनती है इसलिये धातु का पहिले लक्षण लिखते हैं । धातु उसे कहते हैं जिस के अर्थ से कुछ व्यापार अर्थात् काम समझा जाय । जैसे देखना यह आंख का व्यापार है । भाषा में धातु की चिन्हाटी ना है अर्थात् जिस पद के अंत में ना रहे और उस से कोई व्यापार बूझा जाय तो उसे धातु कहेंगे । कोना और सोना इन शब्दों के अंत में ना है पर इन के अर्थ से व्यापार का बोध नहीं होता इस लिये इन्हे धातु नहीं कहते । धातु दो प्रकार की होती हैं । एक सकर्मक दूसरी अक-र्मक । जिस क्रिया के करने में कर्ता के व्यापर का फल दूसरे में जाता हो उसे सकर्मक कहते हैं जैसा कुम्हार बासन बनाता है यहां कुम्हार कर्त्ता है उस का व्यापार मट्टी बनाना चाक घुमाना आदि है उस का फल बासन का बनना है सो बासन में रहता है इसलिये बनाना यह धातु सकर्मक है । जहां कर्त्ता का व्यापार और उस का फल कर्त्ताही में रहे वह अकर्मक होती है जैसा देवदत्त उठता है । देवदत्त कर्त्ता के उठने का व्यापार और उस का फल उठना ये दोनों बातें देवदत्त में हैं इस लिये उठना यह धातु अकर्मक है । अब क्रिया का लक्षण लिखते हैं । जिस शब्द

के कहने में काल और वचन बूझा जाय उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया दो प्रकार की होती है। एक तो कर्तृप्रधान और दूसरी कर्मप्रधान। कर्तृप्रधान क्रिया उसे कहते हैं जिस का लिंग और वचन कर्त्ता के लिंग और वचन के अनुसार हो। जैसे लड़का खेलेगा। लड़की खेलेगी। और कर्मप्रधान उसे कहते हैं जिस क्रिया का लिंग वचन कर्म के लिंग और वचन के अनुसार हो। जैसे लड़का मारा जायगा। लड़की मारी जायगी। फिर हर एक क्रिया वर्त्तमान भविष्यत् और भूत काल के भेद से तीन प्रकार की होती है। जिस क्रिया का आरंभ हो और समाप्ति न हो उसे वर्त्तमान कालिक क्रिया कहते हैं। जैसे विद्यार्थी पढ़ता है। वर्त्तमान कालिक क्रिया के तीन भेद हैं। सामान्य वर्त्तमान तात्कालिक वर्त्तमान और संदिग्ध वर्त्तमान। जो क्रिया होनेवाली हो उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं। जैसे वह लिखेगा। जिस क्रिया का आरंभ और समाप्ति होगयी हो उसे भूतकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे सूरज निकला। भूत कालिक क्रिया पांच प्रकार की होती है। सामान्य भूत पूर्णभूत संदिग्ध भूत आसन्न भूत और अपूर्ण भूत। अपूर्ण भूत दो प्रकार का होता है एक सामान्य अपूर्ण भूत और दूसरा तात्कालिक अपूर्ण भूत। क्रिया के और भी दो भेद हैं विधि और संभावना। सामान्य वर्त्तमान कालिक क्रिया बनाने की यह रीति है कि जब उत्तम पुरुष पुल्लिङ्ग कर्त्ता का एक वचन रहता है तो धातु के चिन्ह ना को ताहूं आदेश कर देते हैं और बहुवचन में तेहैं आदेश होता है। जहां स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता का एकवचन रहता है वहां तीहूं और बहुवचन मे तीहैं आदेश होता है। और जब मध्यमपुरुष पुल्लिङ्ग का कर्त्ता एकवचन आता है तो धातु के चिन्ह ना को ताहै यह आदेश कर देते हैं। और बहुवचन में तेहो आदेश होता है। और जहां स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता

एकवचन रहता है तोहै आदेश कर देते हैं और बहुवचन मे तो हो । और जब अन्यपुरुष पुल्लिङ्ग कर्त्ता का एकवचन रहता है तो धातु के चिन्ह को ताहै आदेश होता है और बहुवचन में तेहैं आदेश होता है और जब स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता का एकवचन आता है तो तीहै आदेश होता है और बहुवचन में तीहैं आदेश होता है ॥

उदाहरण ॥

सामान्य वर्तमान ।

उत्तम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै देखता हूं	हम देखते हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै देखती हूं	हम देखती हैं

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देखता है	तुम देखते हो

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देखती है	तुम देखती हो

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देखता है	वे देखते हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देखती है	वे देखती हैं

जिस वर्त्तमान काल की क्रिया के कहने से यह ज्ञान हो कि कर्त्ता क्रिया को उसी क्षण में कर रहा है उसे तात्कालिक वर्त्तमान कहते हैं। और उस के बनाने की यह रीति है कि धातु के चिन्ह का लोप करके रहना इस धातु की आसन्न भूत कालिक क्रिया के रूप को पुरुष लिङ्ग और वचन के अनुसार लगा देना चाहिये ॥

जैसे उत्तम पुरुष कर्त्ता ॥

तात्कालिक वर्त्तमान ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं देख रहा हूं	हम देख रहे हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं देख रही हूं	हम देख रही हैं

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देख रहा है	तुम देख रहे हो

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देख रही है	तुम देख रही हो

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देख रहा है	वे देख रहे हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देख रही है	वे देख रहीं हैं

जिस वर्त्तमान काल की क्रिया के कहने से संदेह सूचित हो उसे संदिग्ध वर्त्तमान कहते हैं । इस के बनाने की रीति यह है कि धातु के चिन्ह को वचन लिंग के अनुसार ता ते ती तीं आदेश करके होना धातु की भविष्यत् कालिक क्रिया के रूप को वचन लिंग और पुरुष के अनुसार लगा देते हैं ॥

जैसे उत्तम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै देखता होऊंगा	हम देखते होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै देखती होऊंगी	हम देखतीं होवेंगी

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देखता होवेगा	तुम देखते होओगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देखती होवेगी	तुम देखती होओगी

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देखता होगा	वे देखते होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देखती होगी	वे देखती होवेंगी

भविष्यत्कालिक क्रिया बनाने की यह रीति है कि उत्तम पुरुष पुल्लिङ्ग कर्त्ता के एकवचन में धातु के चिन्ह के पूर्व अकार स्वर हो तो अकार का लोप करके धातु के चिन्ह को ऊंगा आदेश करते हैं। और बहुवचन में आकार का लोप करके धातु के चिन्ह एंगे आदेश करते हैं और जो धातु के चिन्ह के पूर्व अकार से भिन्न स्वर हो तो एकवचन में ना को ऊंगा आदेश होगा और बहुवचन में वेंगे आदेश होगा। और स्त्रीलिङ्ग कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में गा में आ को और गे में ए को गी आदेश कर देते हैं। और मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग कर्त्ता के एकवचन में धातु के चिन्ह के पूर्व जो अकार हो तो उस का लोप करके ना को एगा आदेश होता है और बहुवचन में अकार का लोप करके ओगे आदेश कर देते हैं और जो अकार से भिन्न स्वर हो तो एकवचन में वेगा और बहुवचन में ओगे आदेश होते हैं। और स्त्रीलिङ्ग में गा और गे के आ और ए को ई हो जाता है। और अन्य पुरुष के एकवचन में मध्यम के एकवचन के समान रूप जानो और बहुवचन में उत्तम पुरुष के बहुवचन के समान ॥

उदाहरण ।

भविष्यत्काल ॥

उत्तम पुरुष कर्त्ता ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै देखूंगा	हम देखेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै देखूंगी	हम देखेंगी

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देखेगा	तुम देखोगे

स्त्रीलिङ्ग ।

तू देखेगी	तुम देखोगी

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

वह देखेगा	वे देखेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

वह देखेगी	वे देखेंगी

सामान्य भूत कालिक क्रिया बनाने की यह रीति है कि धातु के चिन्ह के पूर्व में जो अकार रहे तो उस का लोप करके एकवचन में ना को आ कर देते हैं और बहुवचन में ए परंतु जो धातु के चिन्ह के पूर्व में आ अथवा ई अथवा ए आवे तो ना को एकवचन में या और ई कार और एकार को ह्रस्व कर देते हैं ।

और जो धातु के चिन्ह के पूर्व में ऊ अथवा ओ आवे तो भी एकवचन में ना को या और बहुवचन में ए कर देते हैं और स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में ना को यी और बहुवचन में यीं कर देते हैं । और करना होना जाना इन का सामान्यभूत एकवचन पुल्लिङ्ग में किया । हुआ । गया और बहुवचन में । किये । हुए । गये । और स्त्रीलिङ्ग एकवचन में की । हुई । गई । और बहुवचन में । कीं । हुईं । गईं ऐसा होता है । ना के पूर्व जहां अकार है उस का उदाहरण । धातु गिरना पुल्लिङ्ग । एकवचन । गिरा । बहुवचन । गिरे । स्त्रीलिङ्ग गिरी । बहुवचन गिरीं । ना के पूर्व जहां आ है उस का उदाहरण । धातु आना पुल्लिङ्ग एकवचन आया । बहुवचन आये । स्त्रीलिङ्ग एकवचन आयी । बहुवचन आयीं । ना के पूर्व जहां ई है उस का उदाहरण । धातु पीना । पुल्लिङ्ग एकवचन पिया । बहुवचन पिये । स्त्रीलिङ्ग एकवचन पियी । बहुवचन पियीं । ना के पूर्व जहां ए० है उस का उदाहरण । धातु लेना । पुल्लिङ्ग एकवचन लिया बहुवचन लिये । स्त्रीलिङ्ग एकवचन लियी । बहुवचन लियीं । ना के पूर्व जहां ऊ आता है उस का उदाहरण । धातु छूना पु० एकवचन छूया । बहुवचन छूये । स्त्रीलिङ्ग एकवचन छूयी बहुवचन छूयीं । ना के पूर्व जहां ओ आता है इस का उदाहरण । धातु सोना । पु० एकवचन सोया । बहुवचन सोयीं । स्त्रीलिङ्ग एकवचन सोयी । बहुवचन सोयीं ॥

उदाहरण ॥

रहना धातु ।

सामान्य भूत काल ॥

उत्तम पुरुष कर्त्ता ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै रहा	हम रहे

स्त्रीलिङ्ग ।

मै रही	हम रहीं

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू रहा	तुम रहे

स्त्रीलिङ्ग ।

तू रही	तुम रहीं

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह रहा	वे रहे

स्त्रीलिङ्ग ।

वह रही	वे रहीं

पूर्ण भूत उसे कहते हैं जिस में भूतकाल की दूरी समझी जाय इस के बनाने की यह रीति है कि सामान्य भूतक्रिया के आगे पु० एकवचन में था और स्त्रीलिङ्ग एकवचन में थी और पुल्लिङ्ग बहुवचन में थे और स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में थीं लगा देते हैं ॥

उदाहरण ॥

गिरना धातु ।

पूर्ण भूतकाल ॥

उत्तम पुरुष कर्ता ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं गिरा था	हम गिरे थे

स्त्रीलिङ्ग ।

मैं गिरी थी	हम गिरी थीं

मध्यम पुरुष कर्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू गिरा था	तुम गिरे थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू गिरी थी	तुम गिरी थीं

अन्य पुरुष कर्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह गिरा था	वे गिरे थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह गिरी थी	वे गिरी थीं

आसन्न भूत उसे कहते हैं जिस से भूत काल की निकटता पाई जावे । इस के बनाने की यह रीति है कि सामान्य भूत के आगे उत्तम पुरुष एकवचन में हूं और बहुवचन में हैं मध्यम

पुरुष एकवचन में है बहुवचन में हो और अन्य पुरुष एक वचन में है और बहुवचन में हैं लगा देते हैं ॥

उदाहरण ॥

रहना धातु ।

आसन्न भूतकाल ॥

उत्तम पुरुष कर्त्ता ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै रहा हूं	हम रहे हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

मै रही हूं	हम रही है

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू रहा है	तुम रहे हो

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू रही है	तुम रही हो

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह रहा है	वे रहे हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह रही है	वे रही हैं

संदिग्ध भूत उसे कहते हैं जिस भूतकालिक क्रिया के बोलने में संदेह समझी जाय । और संदिग्ध भूतकालिक क्रिया बनाने की यह रीति है कि सामान्य भूत की क्रिया के आगे होना इस धातु की भविष्यत् कालिक क्रियाओं को पुरुष लिङ्ग वचन के अनुसार लगा देते हैं ॥

उदाहरण ।

उत्तम पुरुष कर्त्ता ॥

संदिग्ध भूत काल ।

धातु पहुंचना ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं पहुंचा होऊंगा	हम पहुंचे होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं पहुंची होऊंगी	हम पहुंची होवेंगी

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू पहुंचा होगा	तुम पहुंचे होओगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू पहुंची होगी	तुम पहुंची होओगी

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह पहुंचा होगा	वे पहुंचे होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह पहुंची होगी	वे पहुंची होवेंगी

सामान्य अपूर्ण भूत उसे कहते हैं जिस क्रिया के कहने से भूतकाल पाया जाय पर क्रिया की समाप्ति न पायी जावे । इस के बनाने की यह रीति है कि सामान्य वर्त्तमान की क्रिया पुरुष लिङ्ग वचन के अनुसार बनाकर हूं और है को था और हैं और हो को थे और स्त्रीलिङ्ग में थी और थीं आदेश करते हैं ॥

उदाहरण ।

उत्तम पुरुष कर्त्ता ॥

सामान्य अपूर्ण भूत काल ।

समझना धातु ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं समझता था	हम समझते थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मै समझती थी	हम समझती थीं

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू समझता था	तुम समझते थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू समझती थी	तुम समझती थीं

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह समझता था	वे समझते थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह समझती थी	वे समझती थीं

तात्कालिक अपूर्ण भूत उसे कहते हैं जिस अपूर्ण भूत काल की क्रिया के कहने से यह ज्ञान हो कि कर्त्ता क्रिया को उसी समय में कर रहा था। और उस के बनाने की यह रीति है कि धातु के चिन्ह ना का लोप करके रहना इस धातु की पूर्ण भूत कालिक क्रिया के रूप को पुरुष लिङ्ग और वचन के अनुसार लगा-देना चाहिये।

उत्तम पुरुष कर्त्ता ।

तात्कालिक अपूर्ण भूत काल ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं देख रहा था	हम देख रहे थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
मैं देख रही थी	हम देख रही थीं

मध्यम पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देख रहा था	तुम देख रहे थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
तू देख रही थी	तुम देख रही थीं

अन्य पुरुष कर्त्ता ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देख रहा था	वे देख रहे थे

स्त्रीलिङ्ग ।

एकवचन	बहुवचन
वह देख रही थी	वे देख रही थीं

विधि क्रिया उसे कहते हैं जिस से आज्ञा समझी जाय । और इस के बनाने की यह रीति है कि एकवचन में धातु के चिह्न का लोप कर देते हैं और बहुवचन में धातु के पूर्व जो अकार हो तो उस का लोप करके ओ मिला देते हैं । और जो ना के पूर्व दूसरा स्वर हो तो केवल ना को ओ कर देते हैं । यह क्रिया केवल मध्यम पुरुष ही में बोली जाती है। जैसे मारना धातु एकवचन मार । बहुवचन मारो। होना धातु का रूप एकवचन में हो । बहुवचन में होओ ऐसे और भी जानो । देना और लेना इन के बहुवचन में दो और लो और देओ लेओ ऐसे रूप होते हैं । संभावना की क्रिया से किसी बात की चाहना जानी जाती है और उस के बनाने की यह रीति है कि धातु के चिह्न के पूर्व में

जो अकार रहे तो उस का लोप करके उत्तम पुरुष एकवचन में ना को ऊं और बहुवचन में एं कर देते हैं । मध्यम पुरुष एकवचन में ना का लोप होता है और बहुवचन में ओ । अन्य पुरुष एकवचन में ए और बहुवचन में एं । और जो ना के पूर्व में और स्वर रहे तो उत्तम पुरुष एकवचन में ना को ऊं बहुवचन में वें आदेश करते हैं । मध्यम पुरुष के एकवचन में ना का लोप होता है और बहुवचन में ना को ओ होता है । अन्य पुरुष एकवचन में ना को वे और बहुवचन में वें होता है ॥ जैसे

उत्तम पुरुष	एकवचन	मैं देखूं	मैं खाऊं
	बहुवचन	हम देखें	हम खावें
मध्यम पुरुष	एकवचन	तू देख	तू खा
	बहुवचन	तुम देखो	तुम खाओ
अन्य पुरुष	एकवचन	वह देखे	वह खावे
	बहुवचन	वे देखें	वे खावें

सामान्य वर्त्तमान काल की क्रिया में से हूं है हैं हो इन को निकाल डाल के जो इस पद को क्रिया के पूर्व में लगाते हैं तो हेतु हेतुमत् क्रिया होती है जैसे जो मैं बहुत न खाता तो काहे को बेराम पड़ता ये सब कर्त्तृप्रधान क्रिया हैं ॥

कर्मप्रधान क्रिया बनाने की यह रीति है कि सकर्मकधातु को सामान्य भूत क्रिया के आगे जाना इस धातु के रूपों को काल पुरुष लिंग वचन के अनुसार लगा देते हैं जैसे मैं मारा जाता हूं । हम मारे जाते हैं । वह मारा जावेगा । वे मारे गये इत्यादि ॥

प्रेरणार्थ क्रिया उसे कहते हैं जिस से प्रेरणा समझी जावे । प्रायः इस क्रिया की रचना इस प्रकार से होती है कि जहां धातु के चिह्न के पूर्व में अ रहता है वहां आ को दीर्घ कर देते हैं और जो धातु के आदि में दीर्घ स्वर हो तो ह्रस्व कर देते हैं जैसे

देखना इस धातु की प्रेरणार्थ क्रिया हुई दिखाना । और जहां ना के पूर्व में दूसरा स्वर रहता है वहां धातु के चिह्न के पूर्व आ लगा के आदि स्वर को ह्रस्व कर देते हैं जैसे पीना पिआना सुनना सुनाना लूटना लुटाना आदि । और उस के बनाने की यह भी रीति है कि ना के पूर्व में ला लगा के आदि स्वर को ह्रस्व कर देते हैं जैसे सोना सुलाना देखना दिखलाना पीना पिलाना इत्यादि और खाना इस धातु की प्रेरणार्थ क्रिया खिलाना है । इन धातुओं का रूप सब काल में उक्त धातुओं के समान होता है जैसा मैं उसे सिखाता हूं । वह उसे घोड़े पर चढ़ाता था । तुम ने उसे क्यों सुलाया । पत्थर व्यर्थ गिराया गया इत्यादि ॥

॥ पूर्वकालिक क्रिया का वर्णन ॥

पूर्वकालिक क्रिया उसे कहते हैं जिस का काल दूसरी क्रिया मे लक्षित हो और जिस में लिङ्ग वचन का व्यवहार न हो और इस के बनाने की यह रीति है कि धातु के चिह्न का लोप करके शेष के आगे के अथवा कर वा करके लगा देने से पूर्वकालिक क्रिया होती है । और धातु के चिह्न का लोप कर देने से भी पूर्वकालिक क्रिया होती है । जैसे देखना धातु से देख के देख कर । देख करके । देख । हूं है हो हैं ये वर्तमान काल में कर्त्ता की विद्यमानता दिखलाने को आते हैं जैसे मैं हूं । तू है । वह है । हम हैं । तुम हो । वे हैं । होना इस धातु से ये बनते हैं । था थे थी थीं ये सब कर्त्ता की विद्यमानता भूतकाल में दिखलाने के लिये बोले जाते हैं जैसे मैं था । वह था । हम थे । तुम थे । स्त्रीलिङ्ग । मैं थी हम थीं इत्यादि ॥

सकना और चुकना ये धातु परतंत्र हैं अर्थात् केवल इन धातुओं की क्रिया नहीं आती परन्तु ये जब दूसरी धातु के साथ मिलती हैं तो क्रिया की रचना होती है और जिस धातु के संग

इन का योग होता है उस के धातु चिह्न ना का लोप हो जाता है जैसा मार सकना मार चुकना खा सकना खा चुकना । सकना की जगह में जाना धातु का भी रूप बोला जाता है पर कर्त्ता अनुक्त रहता है अर्थात् कर्त्ता कारक का रूप अपादान का सा रहता है और मुख्य क्रिया का रूप सामान्य भूतकाल का रहता है जैसे मुझ से देखा नहीं जाता अर्थात् मैं देख नहीं सकता । सकना इस क्रिया से कर्त्ता की सामर्थ्य क्रिया के करने में ज्ञात होती है और चुकना इस से क्रिया की समाप्ति ॥

मार सकना ।

सामान्य वर्त्तमान ॥

मैं	मार सकता हूं	हम	मार सकते हैं
तू	मार सकता है	तुम	मार सकते हो
वह	मार सकता है	वे	मार सकते हैं

मार चुकना ॥

मैं	मार चुकता हूं	हम	मार चुकते हैं
तू	मार चुकता है	तुम	मार चुकते हो
वह	मार चुकता है	वे	मार चुकते हैं

और दूसरे कालों में भी सामान्य रूप से जानो ॥

क्रिया की नित्यता अथवा अतिशय दिखाने के लिये सामान्य भूत कालिक क्रिया के आगे करना इस धातु के रूप को पुरुष वचन और लिंग के अनुसार लगा देते हैं । जैसे देखा करना धातु । उत्तम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन मैं देखा करता हूं । चाहना इस क्रिया के रूप के आदि में भी कर्त्ता के व्यापार करने की इच्छा जनाने के लिये सामान्य भूत कालिक क्रिया लगा देते हैं । जैसे मैं मारा चाहता हूं । क्रिया का आरम्भ जनाने के लिये धातु के चिह्न ना के आ को ए करके लगना इस धातु का रूप पुरुष लिङ्ग

और वचन के अनुसार बोलते हैं । जैसे लड़का जाने लगा लड़के जाने लगे । लड़की जाने लगी । लड़कियां जाने लगीं ॥ इस भांति और कालों में भी सब रूप जानो ॥

॥ इति क्रिया ॥

धातु से केवल क्रिया ही नहीं निकलती हैं उन से कर्त्तृवाचक कर्मवाचक भाववाचक और क्रियाद्योतक ये चार संज्ञा भी निकलती हैं ॥

कर्त्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस के कहने से कर्त्तापन समझा जाय । और उस के बनाने की यह रीति है कि धातु के आगे वाला वा हारा लगाकर धातु के चिह्न ना के आ को ए करदेते हैं जैसा करनेवाला करनेहारा । स्त्रीलिङ्ग में आ को ई होजाता है जैसे करनेवाली । ये संज्ञा संज्ञा का विशेषण होके आती हैं और जिस का विशेषण होती हैं उस का कर्त्तापन अपनी क्रिया की अपेक्षा जताती है ॥

कर्मवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस से कर्मत्व भासित हो और उस के बनाने की यह रीति है कि सकर्मक धातु की भूत सामन्य क्रिया ही कर्मवाचक संज्ञा होजाती है जैसा मारा मारी । अथवा भूत सामान्य क्रिया के आगे हुआ लगा देते हैं जैसे किया हुआ । की हुई । कर्मवाचक संज्ञा का रूप क्रिया का सा देखपड़ता है परन्तु क्रिया नहीं है उसे संज्ञा कहते हैं । और यह संज्ञा जिस संज्ञा का विशेषण होती है वह संज्ञा इस संज्ञा की अपेक्षा कर्म रूप होती है परन्तु अकर्मक धातु का ऐसा रूप कर्त्तृवाचक ही होगा जैसा मरा हुआ ॥

भाववाचक संज्ञा । इस का लक्षण पूर्व में लिख आये हैं । व्यापार रूप भाववाचक बनाने की यह रीति है कि बहुधा धातु के चिह्न ना का लोप करने से जो शेष रह जाता है वही

भाववाचक संज्ञा होती है जैसा मार पीट लूट चाह इत्यादि । जो मार का अर्थ है वही मारने का अर्थ है । कहीं २ धातु के ना का स्वर दूर करने से भाववाचक होता है जैसा लेन देन खान पान । कहीं धातु के चिह्न ना का लोप करके अंत में आव लाते हैं जैसा चढ़ाव कटाव फिराव ॥

क्रियाद्योतक संज्ञा उसे कहते हैं जो संज्ञा का विशेषण होके निरंतर क्रिया को जनावे और उस के बनाने की रीति यह है कि धातु के चिह्न ना को ता करने से क्रियाद्योतक संज्ञा होती है जैसा होता करता और उस के आगे हुआ लगाने से भी क्रिया-द्योतक संज्ञा होजाती है । जैसा मारता हुआ लेता हुआ इत्यादि । स्त्रीलिंग और बहुवचन का रूप सामान्य रीति से जानना चाहिये ॥ धातु में भी कारक और वचन होता है परन्तु एकवचन ही होता है जैसा देखने के लिये देखने से इत्यादि ॥

॥ अब अव्यय का वर्णन करते हैं ॥

अव्यय उस शब्द को कहते हैं जिस में लिङ्ग संख्या कारक का चिह्न न रहे जैसे वा अथवा से यद्यपि और पुनि फिर ही भी क्यो हां कि जो तो जों तों पर परंतु न नहीं मानो जैसा वैसा ऐसा कैसा क्योंकि अब कब जब तब क्या कुछ आदि ॥

॥ पदयोजना का क्रम ॥

पिछले लिखे हुए को पढ़कर विद्यार्थियों को पद की शुद्धता और अशुद्धता का ज्ञान होगा परंतु वे उन पदों को यथायोग्य जोड़ भी सकें इसलिये पदयोजना की रीति लिखते हैं ॥

॥ प्रथम विशेष्य और विशेषण का वर्णन करते हैं ॥

मुख्य संज्ञा को विशेष्य कहते हैं और उस के गुणवाचक को विशेषण जैसा मतवाला हाथी यहां हाथी मुख्य संज्ञा विशेष्य है

और उस का गुण बतलानेवाला मतवाला पद है वही विशेषण है ऐसे सर्वत्र जानो। यह भी जान रखना चाहिये कि पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारांत विशेषण हो तो उस के आ को ए होजाता है परंतु कर्त्ता के एकवचन में विशेषण आकारांत ही बना रहता है जैसा अच्छा घोड़ा अच्छे घोड़े । विशेष्य के और कारकों में सर्वत्र आकारांत विशेषण एकारांत होजाता है जैसा अच्छे घोड़े से अच्छे घोड़ों से परंतु अच्छों घोड़ों से ऐसा कभी नहीं बोला-जायगा । स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारांत विशेषण सब कारकों में ईकारांतही होगा जैसा अच्छी घोड़ी अच्छी घोड़ियां अच्छी घोड़ी को अच्छी घोड़ियों को बहुवचन का चिह्न विशेषण में न रहेगा अच्छियां घोड़ियां अच्छियों घोड़ियों को ऐसा कभी न बोलेंगे । एक विशेष्य के जितने आकारांत विशेषण होंगे उन सब के लिये यही रीति है जैसा बड़ा मोटा लट्ठा । बड़े मोटे लट्ठे । बड़े मोटे लट्ठे को । बड़े मोटे लट्ठों को । आकारांत को छोड़ और विशेषण सदा वैसे ही बने रहते हैं जैसे सुंदर लड़का सुंदर लड़के सुंदर लड़के को सुंदर लड़कों को । विभक्ति को मान करके विशेष्य को आदेश हो वा न हो परंतु विशेषण आकारांत होगा तो उसे आदेश अवश्य होगा जैसा भला बालक । भले बालक । भले बालक को भले बालकों को । कर्तृवाचक और कर्मवाचक संज्ञा भी संज्ञा का विशेषण होती है जैसा मारनेवाला देवदत्त मारनेवाले देवदत्त को । मरे हुए सांप ने । मरे हुए सांप को । क्रियाद्योतक संज्ञा जिस पद का विशेषण होती है उस के वाच्य की क्रिया बताती है जैसा दौड़ते हुए घोड़े पै यहां दौड़ता हुआ जो क्रियाद्योतक पद है वह अपने विशेष्य घोड़े की क्रिया बताता है । गुणवाचक पद क्रिया के भी विशेषण होते हैं जैसा घोड़ा धीरे चलता है अर्थात् घोड़े की क्रिया जो चलना है वह धीरे है इसी कारण धीरे

यह शब्द चलना क्रिया का विशेषण हुआ ऐसे ही सुंदर लिखता है यहां सुंदर पद लिखना क्रिया का विशेषण हुआ ॥

गुणवाचक पद विशेषण होता है परंतु कहीं गुणवाचक को छोड़ संज्ञा भी संज्ञा का विशेषण होजाती है उसे उद्देश्य विधेय भाव कहते हैं उन में विशेष्य उद्देश्य और गुणवाचक विधेय कहाता है यहां क्रिया का लिङ्ग वचन उद्देश्य के लिङ्ग वचन के अनुरोध से होता है अर्थात् उद्देश्य पुल्लिङ्ग होगा तो क्रिया भी पुल्लिङ्ग होगी और वह स्त्रीलिङ्ग होगा तो क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग होगी विधेय का चाहे जो लिङ्ग रहे । ऐसेही वचन में भी जानो जैसा इस कुंड का पानी कीचड़ होगया यहां पानी का मैलापन गुण कीचड़ पद से जाना जाता है परंतु कीचड़ गुणवाचक नहीं है बरन संज्ञा है इस कारण यहां उद्देश्य विधेयभाव हुआ और उद्देश्य पानी है उस के लिङ्ग वचन के अनुसार क्रिया का लिङ्ग वचन हुआ । ऐसे ही पूरियां सूखकर काठ होगयीं यह भी जानो ॥

अब वाक्य की रचना लिखते हैं । पद के समूह को जिन से पूरा अर्थ समझा जाय उसे वाक्य कहते हैं ॥

॥ कर्तृप्रधान वाक्य ॥

कारक समेत संज्ञा पद और क्रिया इन के योग से वाक्य बनता है यद्यपि वाक्य में सब कारक आसक्ते हैं परंतु कर्त्ता और क्रिया का होना अवश्य है और कदाचित् क्रिया सकर्मक हो तो उस वाक्य में कर्म को भी रक्खो यह बात कर्तृप्रधान क्रिया की है । पदों की योजना का यह क्रम है कि वाक्य के आदि में कर्त्ता अंत में क्रिया और शेष कारकों की आवश्यकता हो तो उन के बीच में रक्खो परंतु वाक्य में ऐसे पद आवें जिन के अर्थ का आपस में मेल हो और कदाचित् पद अनमिल होंगे तो उन की योजना में से कुछ अर्थ न मिलेगा और वह वाक्य भी अशुद्ध ठहरेगा ॥

॥ शुद्ध वाक्य ॥

राम ने बाण से रावण को मारा ।

इस वाक्य में राम कर्त्ता बाण करण रावण कर्म और मारा सामान्य भूत क्रिया है ये सब पद शुद्ध हैं और एक पद का अर्थ दूसरे पद के अर्थ से मेल रखता है । इस कारण संपूर्ण वाक्य का यह अर्थ है कि राम के बाण से रावण का मारा जाना । सकर्मक धातु के सब भूत कालों में अपूर्ण भूत और लाना भूलना लेजाना बोलना इन क्रियाओं को भी छोड़कर कर्त्ता के आगे ने आता है जब कर्म का चिह्न नहीं रहता तब क्रिया का लिङ्ग वचन कर्म के अनुसार होता है । जैसा मैं ने पोथी पढ़ी मैं ने पोथियां पढ़ी ॥

॥ असंबद्ध वाक्य ॥

बनिया बसुले से कपड़े को सींचता है ।

यद्यपि इस वाक्य में सब पद कारक समेत शुद्ध हैं परंतु एक पद का अर्थ दूसरे किसी पद के अर्थ से मेल नहीं रखता इस कारण वाक्य का कुछ अर्थ नहीं हो सक्ता इसी लिये ऐसे वाक्य को अशुद्ध कहते हैं ॥

॥ कर्मप्रधान वाक्य ॥

कर्तृप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्त्ता का कहना अवश्य है वैसे ही कर्मप्रधान क्रिया के वाक्य में कर्म का होना अवश्य है और कर्त्ता की कुछ अपेक्षा नहीं होती है परंतु वहां कर्म ही कर्त्ता के रूप से आता है और जिन कारकों का प्रयोजन हो उन्हे कर्म और क्रिया के बीच में रखते हैं जैसा घोड़ा मारा गया इस वाक्य में मारा गया यह कर्मप्रधान भूत सामान्य क्रिया है और घोड़ा कर्म कर्त्ता के रूप से है इन्हीं दो पदों से यह वाक्य पूरा हुआ और वाक्य में कारक

की अवश्यकता हो तो और कारकों की योजना करलेते हैं जैसा आटा जांते में पीसा जाता है पहाड़ पर से पत्थर गिराया गया ॥

वाक्य के जिस पद का विशेषण हो उसी पद के पहिले रखना चाहिये क्योंकि ऐसी रचना से वाक्य का अर्थ तुरंत बूझा जाता है और विशेषण अपने २ विशेष्य से पहिले नहीं हो तो दूरान्वय के कारण अर्थ समझने में कठिनता पड़ती है ॥

॥ सविशेषण वाक्य ॥

उस दुष्ट बिल्ली ने अपने चोखे पंजों से इस दीन चूही को मार डाला है ॥

॥ दूरान्वयी वाक्य ॥

बड़े बैठा हुआ एक लड़का छोटे घोड़े पै चला जाता है इस वाक्य का अर्थ विना सोचे नहीं जाना जाता परंतु इस वाक्य में विशेषणों को अपने २ विशेष्य के साथ मिला देने से अर्थ जाना जाता है उस की योजना नीचे क्रम से लिखी है एक छोटा लड़का बड़े घोड़े पै बैठा चला जाता है यद्यपि ऐसे वाक्य अशुद्ध नहीं कहाते पर कठिन होते हैं ॥

जिस पद वा वाक्य के अंत में ही आती है उस का निश्चय अर्थ जाना जाता है जैसा रातही में पानी बरसा था परंतु वह यह इन सर्वनामों के उपरांत ही को ई आदेश हो जाता है और उस के पूर्व स्वर का लोप हो जाता है । जैसा वही यही ॥

॥ समास का वर्णन ॥

समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन आदि शब्द मिलके एक शब्द हो जाता है अर्थात् प्रति शब्द के कारक चिह्न का लोप होके एक शब्द बन जाता है परंतु इतना है कि कारक का अर्थ नहीं जाता जैसा राजपुत्र इस में राज और पुत्र दो शब्द हैं

और उन की पहिली अवस्था यह थी कि राजा का पुत्र परंतु संबन्ध के का चिह्न का लोप करने से राजपुत्र एक शब्द होगया ऐसेही रणभूमि भरतखंड आदि पदों में संबन्ध के पद का लोप जानो । घोड़चढ़ा अर्थात् घोड़े पर चढ़नेवाला । पनभरा पानी का भरनेवाला । समास छ प्रकार के होते हैं । अव्ययीभाव । तत्पुरुष । द्वंद्व । द्विगु । बहुब्रीहि । कर्मधारय । अव्ययीभाव समास उसे कहते हैं जिस में क्रियाविशेषण के संग दूसरे पद का मेल हो जैसे यथाशक्ति प्रतिदिन इत्यादि ॥

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जिस में उत्तर पद प्रधान रहे । जैसे राजपुरुष गंगाजल आदि । इन उदाहरणों में पुरुष और जल शब्द प्रधान है इस कारण कि स्वतंत्रता से उन्ही की अन्वय क्रिया में होती है राज शब्द और जल शब्द की अन्वय क्रिया में नहीं है ॥

जैसे गंगाजल आवेगा इस वाक्य में जल शब्द की अन्वय आवेगा इस क्रिया से है गंगा शब्द की नहीं ॥

द्विगु समास उसे कहते हैं जिस में संख्यावाची शब्द का दूसरे शब्द से मेल हो जैसे त्रिभुवन पंचपात्र इत्यादि ॥

द्वंद्व समास उसे कहते हैं जहां सब समस्त पदों की अन्वय क्रिया में हो जैसे घी चीनी लाओ । इस वाक्य में घी और चीनी दोनों पदों की अन्वय लाओ क्रिया के साथ है अर्थात् घी लाओ और चीनी लाओ ॥

बहुब्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में अन्य पद प्रधान हो अर्थात् समस्यमान पदों का अर्थ और दूसरे पद से संबंध रखता हो जैसे पीतांबर इन पदों का अर्थ है पीला कपड़ा परंतु इस से कृष्ण का बोध होता है अर्थात् पीला वस्त्र है जिस का । इसी भांति लम्बोदर गजानन आदि जानो । कर्मधारय समास उसे

कहते हैं जिस में गुणवाचक शब्द का अथवा दूसरे शब्द का दूसरे शब्द के साथ समानाधिकरण हो । जैसे नील कमल लड़ाकी सेना आदि ॥

सब भाषाओं में प्राय: ऐसा होता है कि कोई २ अक्षर, दूसरे अक्षर के निकट होने से विकृत होजाता है और इस विकार को संस्कृत में संधि कहते हैं । हिन्दी भाषा में बहुत से शब्द संस्कृत के व्यवहृत हो गये हैं और होते जाते हैं उन शब्दों में प्राय: संधि होती है इस लिये इस पुस्तक में संधि का भी कुछ वर्णन आवश्यक है ॥

॥ संधि तीन प्रकार की होती है ॥

स्वर संधि व्यञ्जन संधि और विसर्ग संधि ।

स्वर संधि उसे कहते हैं जहां स्वर में विकार होता है । व्यञ्जन संधि उसे कहते जिस में व्यंजन का विकार हो और विसर्ग संधि उसे कहते हैं जहां विसर्ग का विकार हो ॥

॥ स्वर संधि की रीति ॥

इ उ ऋ ऌ इन स्वरों को चाहे ह्रस्व हों चाहे दीर्घ जब इन के आगे स्वर रहे तो क्रम से य् व् र् ल् अर्थात् इ को य् उ को व् ऋ को र् ऌ को ल् हो जाता है जैसे इति आदि इत्यादि । अति आचार अत्याचार । गोपी अर्थ गोप्यर्थ । सु आगत स्वागत । वधू ऐश्वर्य वध्वैश्वर्य । पितृ आज्ञा पित्राज्ञा ऌ आकृति लाकृति ॥

ए ऐ ओ औ इन स्वरों को स्वर परे रहते क्रम से अर्थात् ए को अय् ऐ को आय् ओ को अव् औ को आव् हो जाता है । जैसे ने अन नयन । नै अक नायक । भो अन भवन । पौ अक पावक ॥

अ और इ ह्रस्व हों वा दीर्घ दोनों मिलकर ए हो जाते हैं जैसे नर इन्द्र नरेन्द्र । रमा ईश रमेश ॥

अ और उ ह्रस्व हों वा दीर्घ दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं जैसे कूप उदक कूपोदक । महा उत्सव महोत्सव ॥

अ और ए अथवा ऐ दोनों मिलकर ऐ हो जाते हैं । जैसे विचार एकता विचारैकता । देश ऐश्वर्य देशैश्वर्य । अ और ओ अथवा औ मिलकर औ हो जाते हैं । जैसे सुंदर ओदन सुंदरौदन । महा औदार्य महौदार्य ॥

जब दो समान स्वर इकट्ठा आते हैं तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं । जैसे दैत्य अरि दैत्यारि । परम आनंद परमानन्द । नदी ईश नदीश । भानु उदय भानूदय । सबोधन के चिह्न के स्वर को कुछ आदेश नहीं होता जैसे अहो ईश हे ईश्वर । यहां ओ को अव् और ए को अय् नहीं भया ॥

व्यंजन अक्षर को जब विकार होता है तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं तवर्गीय और चवर्गीय वर्णों का योग हो तो तवर्गीय वर्णों के स्थान में क्रम से चवर्गीय वर्ण होता है जैसे तत् चित्र तच्चित्र । सद् जात सज्जात इत्यादि । तवर्गीय वर्ण और टवर्गीय वर्णों का योग होय तो तवर्गीय वर्णों के स्थान में क्रम से टवर्गीय वर्ण होजाता है जैसे तत् टीका तट्टीका इत्यादि ॥

वर्गों के प्रथम अक्षरों से अनुनासिक वर्ण पर होवें तो उन के स्थान में निज वर्ग का अनुनासिक होवे जैसे जगत् नाथ जगन्नाथ । वाक् मय वाङ्मय इत्यादि ॥

अनुस्वार से कवर्गादि अक्षर में से कोई वर्ण परे हो तो उस के स्थान में परस्थित वर्ग संबंधी अनुनासिक होवे जैसे संकल्प सङ्कल्प । संचित सञ्चित । संतान सन्तान । संपूर्ण सम्पूर्ण ॥

विसर्ग को जब विकार होता है तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं । विसर्ग के परे च वा छ रहे तो श होवे जैसे निःचिंत निश्चिन्त

इत्यादि । संस्कृत में व्यंजनसंधि और विसर्ग सन्धि का बड़ा विस्तार है परंतु वैसे सन्धिवाले शब्द हिन्दी में थोड़े आते हैं इसलिये उन का विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं किया गया ॥

हिन्दी में तुलसीदास आदि कवियों के ग्रन्थ भी पढ़े पढ़ाये जाते हैं और उन में दोहा चौपाई आदि छंद हैं इसलिये उन का लक्षण भी लिखना उचित दिखायी देता है । इस कारण उन को लिखते हैं ॥

छंद पद्य को कहते हैं अर्थात् जिस में पद मित अक्षर के साथ व्यवहृत हों । वह दो प्रकार का है एक मात्रारूप दूसरा वर्णरूप मात्रारूप उसे कहते हैं जिस में मात्रा की गिनती से छंद बने । और वर्णरूप उसे कहते हैं जिस में वर्ण की गिनती से छंद बने ।

मात्रा से तात्पर्य ह्रस्व का है । और वर्ण से स्वरयुक्त व्यंजन समझना चाहिये । दोहा छंद का वर्णन । इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रथम चरण में तेरह मात्रा दूसरे में ग्यारह तीसरे में १३ चौथे में ११ ॥ जैसे

गिरा अर्थ जल बीचि सम । कहियत भिन्न न भिन्न ॥
बंदों सीतारामपद । जिनहिं परम प्रिय खिन्न ॥

गि—में १ रा में २ अ में २ (संयोग के पूर्व में होने से) र्थ में १ ज में १ ल में १ बी में २ चि में १ स में १ और म में १॥ इस रीति से १२२११२१११ ये सब मिल कर १३ हुए इसी रीति से दूसरे तीसरे चरण में गिन लेना चाहिये ॥

चतुष्पदा छंद जिस को हिन्दी में चौपाई कहते हैं ६४ मात्र का होता है प्रत्येक चरण में १६ मात्रा होती हैं गुरु लघु के आगे पीछे का कुछ नियम नहीं जैसे ॥

कहहिं वेद इतिहास पुराना । विधि प्रपंच गुन अवगुन साना ॥

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥

चौपैया छंद में १२० मात्रा रहती हैं प्रत्येक चरण में समान मात्रा होती हैं अर्थात् चारो चरणों में तीस २ मात्रा होती हैं ॥ जैसे

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गोद्विजहितकारी जय असुरारी सिंधुसुताप्रियकंता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई ॥

११२ मात्रा का उल्लाला छंद होता है प्रति चरण में २८ मात्रा होती हैं ॥

ये दारिका परिचारिका करि पालवी करुनामयी ।
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठो दयी ॥
पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान विधि समधी किये ।
कहि जाति नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिये ॥

४८ मात्रा का सोरठा होता है पहिले चरण में ११ मात्रा दूसरे में १३ तीसरे ११ और चौथे में १३ मात्रा और उलटने से सुंदर दोहा बन जाता है ॥ जैसे

भरत चरन सिर नाइ तुरत गये कपि राम पंह ।
कही कुसल सब जाइ हरषि चले प्रभु यान चढ़ि ॥

१२८ मात्रा का पद्मावती छंद होता हैं इस के प्रत्येक चरण में ३२ मात्रा होती हैं ॥

दिग्गज दहलाने दिगह हलाने अरि महलाने संक बढ़ी ।
थरथर हैं बानी हिये डरानी भाजी जानी छाड़ि मढ़ी ॥
सुनि सुनि धुनि डंका बढ़ी अतंका संका नभरज लेति मढ़ें ।
साकि सिंधु सुखानो शेष सकानो राम चमू चतुरंग चढ़ें ॥

१४४ मात्रा का कुंडलिया छंद होता है ।

तारी गौतम नारि पग परसत ही रघुराइ ।
चढ़ि विमान स्वर्गहिं गयी सोभा कही न जाइ ॥
सोभा कही न जाइ लखन सुरपुर तिय आईं ।
बाजे दिये बजाइ फूल बरषा बरषाईं ॥
चलन लगी है बार भई द्विज की पग धारी ।
तीन लोक जसु बढ़ो राम तिय पाहन तारी ॥

॥ अब वर्ण रूप छंद का वर्णन करते हैं ॥

इस में गणों का प्रयोजन पड़ता है इसलिये पहिले उन का वर्णन करते हैं गण आठ हैं मगन नगन भगन यगन जगन रगन सगन तगन । ऽ इस चिह्न को गुरु कहते हैं और । ऐसे चिह्न को लघु कहते हैं ॥

मगन में तीन गुरु मात्रा होती हैं । नगन में तीन लघु मात्रा होती हैं । भगन में एक गुरु और दो लघु । यगन में एक लघु और दो गुरु । जगन में एक लघु एक गुरु और तब एक लघु । रगन में एक गुरु एक लघु और तब एक गुरु । सगन में दो लघु और एक गुरु । तगन में दो गुरु और एक लघु ॥

तोटक छंद में प्रति चरण में १२ वर्ण होते हैं एक चरण में चार सगन हैं ॥ जैसे

जय राम रमारमनं समनं भवताप भयाकुल पाहि जनं ।
अवधेस सुरेस रमेस विभो सरनागत मांगत पाहि प्रभो ॥

भुजंग प्रयातछंद के प्रतिचरण में १२ वर्ण रहते हैं । प्रति चरण में चार यगन रहते हैं ॥ जैसे

महावीर श्री राम ज्योंही चढ़े हैं । कपी सेन के ठट्ठ आगे बढ़े हैं ।
भिरे खग्ग सों खग्ग कीन्हे अतंका । वठीही संघारी लई जीति लंका ॥

॥ इतिहास ॥

॥ औरंगज़ेब बादशाह की कथा ॥

इसी बादशाह के समय से मोगलवंशी राज्य का ह्रास होने लगा । सन् १६५८ से १७०७ तक ।

औरंगज़ेब ने सोचा कि जब तक दारा और शुजा जीते हैं और उन के पास भारी सेना है तब तक हमारा राज्य स्थिर न होगा । दारा के पास जो बड़ी भारी सेना थी उस के प्रधानों का विश्वास उसे न था कि ये लोग हमारे भाई औरंगज़ेब से लड़ेंगे इसलिये सिन्ध नदी के पार दारा चला गया । अंत को यहां बात हुई कि सब दारा को छोड़ कर चले गये । इस बीच में शुजा बड़ी भारी सेना लेकर बंगाले से इलाहाबाद में आया वहां औरंगज़ेब से सामना हुआ बड़े घोर संग्राम के पीछे शुजा भागकर मुंगेर के दुर्ग में जा छिपा तब तक दारा सिन्ध से फिर आकर गुजरात में गया वहां के अध्यक्ष को मिलाकर एक बड़ी सेना प्रस्तुत की और अजमेर के समीप आके ठहरा । औरंगज़ेब ने बहुत उपाय किया कि उस को वहां से निकाले पर कुछ न बन पड़ा निदान औरंगज़ेब ने उस से छल किया कि अपने उन दो प्रधानों से जिन की सहायता से सुलेमान की सेना को मिलाया था दारा के पास लिखवाया कि हमलोग औरंगज़ेब की सेना छोड़कर आप की सेवा में आया चाहते हैं और कि आप अमुक फाटक को अमुक समय में खोल रखिये तो अपने संगियों को लेकर आप के शरण में हमलोग चले आवें । यद्यपि मंत्रियों ने दारा को समझाया कि औरंगज़ेब ने छल किया है पर उस ने न माना और उन के फंदे में फंस गया और वहां से भागकर कर जिहूनखां के शरण में गया । उस ने छल करके वहां जहांखां से उसे पकड़वा दिया उस ने उसे दिल्ली में भेज दिया औरंगज़ेब ने बड़ी दुर्दशा से उसे

मरवाडाला । अब केवल शुजा रहगया उस के पराजित करने के लिये शाहज़ादे मोहम्मद और अपने वज़ीर मीरजुमला को भेजा । शुजा की एक लड़की से मोहम्मद के मंगनी होगई थी उस लड़की ने चिट्ठी उस के पास लिखी वह पिता की सेना छोड़कर ससुर की ओर चला गया और अपने बाप की सेना से लड़ा परंतु पराजित हुआ फिर औरंगज़ेब ने छल से एक चिट्ठी शुजा के पास भिजवाई उस के पढ़ने से शुजा को संदेह हुआ इसलिये बेटी दामाद को बंगाल से निकालदिया तब शाहज़ादा अपने पिता के शरण में गया उस ने पकड़कर ग्वालियर के किले में बन्द किया सात बरस के पीछे वहीं वह मरा । शुजा भागकर अराकान देश में गया परंतु राजा के उत्पात से लड़केवाले समेत वहीं समाप्त हुआ । दारा का बेटा सुलेमान भाग कर हिमालय पहाड़ पर चला गया था इस प्रकार अब औरंगज़ेब निष्कंटक राज्य करने लगा । इस बीच में शाहजहां औरंगज़ेब का बाप पदच्युत होने पर आठ बरस के पीछे मरा । अब इधर अपना राज्य स्थिर करके सन् १६८६ ई० में अर्थात् अपने राज्य के अट्ठाईसवें बरस में औरंगज़ेब ने डेक्कान में गोलकुंडा और बीजापूर को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया परंतु इस बीच में औरंगज़ेब के बड़े शत्रु मरहठा लोग उठे । मरहठा राज के घराने का स्थापन करनेवाला शिवा जी हुआ इस का पिता शाहजी बीजापूर के बादशाह की सेना में भर्ती हुआ और तनजोर और कर्नाटक में काम करने लगा शिवाजी और उस की मां को पूना में दादा जी के हाथ में छोड़ा । उस ने शिवाजी को युद्ध विद्या सिखलाई सत्रह बरस की अवस्था में बहुत से लोगों को इकट्ठा करके लड़ाई झगड़ा लूट पाट मचाने लगा । यह बात देखकर बीजापूर का बादशाह चौकन्ना भया पर शिवाजी ने अधिक कर देने की प्रतिज्ञा कर के मेल करलिया और अपना

अधिकार बढ़ाता जाता था यहां तक कि बादशाह ने उस के बाप को क़ैद करलिया शिवाजी ने शाहजहां के पास प्रार्थना पत्र लिख कर अपने बाप को छोड़ा लिया था । बीजापूर के बादशाह ने अब्दुल खां को उसे पराजित करने के लिये भेजा शिवाजी ने कहा कि हम आप के अधीन हैं केवल इतना चाहते हैं कि आप से हम से एकांत में भेंट हो उस ने उस बात को अंगीकार किया जब भेंट हुई तब शिवाजी ने इसे छल से कटार से मार डाला । इस के उपरांत दक्खिन और बहुत से देशों को अपने अधिकार में कर लिया और ५०००० पैदल और ७०००० सवार इस के पास हो गये । औरंगज़ेब ने चाहा कि शिवाजी को दबावे इस विचार में शाइस्ता खां को एक अच्छी सेना के साथ भेजा पहिली लड़ाई में शाइस्ता खां कई एक किले और पूना नगर को लिया फिर शिवा जी अपने कुछ शूरवीरों को साथ लेकर इस प्रकार से शाइस्ता खां के छाउनी में घुसा कि उस से कुछ न बन पड़ा एक खिड़की की राह से भागा और बेटा उस का मारा गया तब शिवाजी ने सूरत नगर को लूटा उस समय में कुछ अंगरेज और ओलंदेज़ व्या-पारी लोग अपनी २ कोठियों में थे इस ने अपनी इच्छा पूर्वक लूट पाट मचाया । यह सुनकर औरंगज़ेब को बड़ा कोप हुआ मिरज़ा रज़ा को बड़ी भारी सेना के साथ शिवाजी को पराजित करने के लिये भेजा उस ने जाकर शिवाजी को दबा दिया और कहा कि तुम दिल्ली में चलो तो बचोगे और तुम्हारी बड़ी प्रतिष्ठा होगी शिवाजी उस की बात का विश्वास करके प्रतिष्ठा के लालच से दिल्ली में गया वहां इस का उलटा देखा कि बादशाह ने उस को और उस के बेटे को क़ैद कर लिया पर शिवाजी और उस का बेटा बड़ी चतुरता से भाग कर अपने देश में जा पहुंचे फिर औरंगज़ेब ने बहुत दिन तक दूसरे २ कामों के कारण से

शिवाजी की सुध न ली उस ने जाकर फिर सूरत को लूटा और अंगरेज लोगों की कोठियों को लूटा और अपने को राजा बनाया और गोलकुंडा पर चढ़ाई की और बहुत से देशों का स्वामी बन गया । फिर बादशाही जरनैल दिलेर खां से सामना हुआ उस से पराजित होकर अपनी राजधानी रायरी में चला गया वहां पर ५३ बरस की अवस्था में पांचईं अपरैल को सन् १६८० ई० में मर गया । इस के मरने से मरहठा का राज्य निर्बल हो गया तब उस का बेटा संभाजी उत्पात मचाने लगा फिर बादशाही सेना वहां पहुंची बादशाह ने आज्ञा दी कि सारा दक्खिन का देश जीता जाय । गोलकुंडा और बीजापूर के राज्य लेने के पीछे बादशाह ने आज्ञा दी कि मरहठों को जड़ पेड़ से नाश कर दो । इस बीच में संभाजी पकड़ा गया और मारडाला गया परंतु संभाजी का भाई रामजी कर्नाटक में जाकर के बहुत सी सेना इकट्ठी की इस के पराजित करने में बादशाही सेना को कई बरस लगे । अब इधर औरंगज़ेब का उत्पात और उपद्रव बढ़ने लगा जहां कहीं हिंदू को पाता उन्हें मुसुलमान करता अथवा मार डालता । मथुरा और बनारस के जितने बड़े २ मन्दिर थे उन को गिरवा कर उन की जगह में मसजिद बनवायी । इन बातों से हिन्दू लोग बहुत बिगड़े और इस के महा शत्रु हो गये इस बीच में बादशाह का जेठा बेटा महम्मद मर गया और दूसरा बेटा शाहआलम को चिंता हुई कि सिंहासन किस प्रकार से हम को मिले एक और बेटा अकबर नाम जाकर मरहठों और राजपूतों से मिल गया और दूसरे दो बेटे आज़िम और कामबक्श बादशाह की पिछली बीमारी में उस के पास थे । बादशाह ने देखा कि हमारे मरने के पीछे सिंहासन के लिये घोर संग्राम होगा इसी बिचार में था कि ९४ बरस की अवस्था में ४९ राज करके

फरवरी महीने की २१ तारीख को सन् १७०७ ई० में मरगया । यह बादशाह अपने धर्म का बड़ा पक्ष करता था अन्याय के समय किसी का पक्षपात न करता प्रजा की भलाई में तत्पर रहता परंतु इस के मन में दया थोड़ी थी ॥

॥ शाहआलम का वर्णन ॥

सन् १७०७ से १७१२ तक ।

औरंगजेब के मरने पर भाइयों में राज के लिये झगड़ा उठा शाहआलम की ओर अधिक लोग हो गये उस ने भाइयों से कहा कि हमारी अधीनता अंगीकार करो तो तुम्हें हम बहुत अधिकार देंगे पर उन्हों ने नहीं माना एक लड़ाई में मारा गया दूसरे ने आत्मघात किया शाहआलम बहुत चाहता था कि राज्य में उपद्रव न हो इसलिये मरहटों और राजपूतों को कुछ दे लेकर प्रसन्न रक्खा परंतु नान्हक पंथियों में से एक मनुष्य का नाम बन्दा था उस ने सरहिन्द को अपने अधिकार में करलिया जब सुना कि शाहआलम बड़ी भारी सेना लेकर हम पर चढ़ा आता है तब डाकर पहाड़ी के दुर्ग में चला गया बादशाह ने उस गढ़ को लिया पर बन्दा बचकर हिमालय के जंगल में चला गया शाहआलम बहुत अच्छा बादशाह हुआ है बड़ा उदार और दयालु था और मुसलमानी धर्म पर बहुत आरूढ़ था लाहौर में अपने कम्पू के बीच मरा ॥

॥ जहांदारशाह की कथा ॥

सन् १७१२ से १७१३ तक ।

शाहआलम के चार बेटे थे वे सिंहासन के लिये लड़ने लगे मोइजुद्दीन ने भाइयों को पराजित कर के मारडाला और आप सिंहासन पर बैठा और नाम अपना जहांदारशाह रक्खा यह

बादशाह बहुत ही अयोग्य था अबदुल्लाह और हुसेन दो भाई सैयद घराने के शाहआलम के पोते फररुसेर की ओर हो गये बंगाले में उस ने उत्पात का झंडा खड़ा किया जहांदारशाह और जुल-फिकार दोनों मारेगये और फरुखशेर सिंहासन पर बैठा ॥

॥ फरुखशेर की कथा ॥

सन् १७१३ से १७१८ तक ।

दोनों सैयदों ने फरुखशेर को अपने वश में कर लिया और आप स्वच्छन्द राज्यानुशासन करने लगे इस बीच में बन्दा सिखों का प्रधान सिन्धु नदी के तीर पहाड़ से उतर कर आया और लड़ाई में पराजित हुआ और बड़े दुख से मारा गया उमरा लोग दो सैयदों का अधिकार देखकर कुड़बुड़ाने लगे और बादशाह भी इन की अधीनता को दुखदायक देखा और चाहा कि इन के हाथ से निकल जांय इस बात पर सैयदों ने बादशाह को मार डाला और औरंगज़ेब के दूसरे पोते को सिंहासन पर बिठाया पर पांचही महीने के पीछे मर गया । तब उस के भाई रफीउद्दौला को राज गद्दी पर बैठाया महम्मदशाह सारे राज्य का अधिकारी हुआ पर अयोग्य था उस की चाल चलन ऐसी बिगड़ गयी कि उस के दो मंत्रियों ने निज़ामुल्मुल्क और सआदत खां अपना २ राज्य अलग स्थापन कर लिया अर्थात् निज़ामुल्मुल्क दक्खिन का और सआदत ख़ां अवध का ॥ इसी बीच में मरहठे देश लूटने लगे और राजगद्दी लेने को उद्यत हुए । मालवा गुजरात लेकर आगरे के पास पहुंचे पर सआदत ख़ां ने अवध से आकर उन्हे ऐसा पराजित किया कि वे भागे और जो उन का पीछा करने पाता तो वे फिर कभी इधर मुंह न फेरते । बादशाह ने आगे बढ़ने की आज्ञा न दी । इस से सआदत ख़ां उदास होकर फिर आया और तुरंतही मरहठों ने दिल्ली पर हल्ला किया और लूट

पाट कर मालवा को फिर गये । इस बीच में नादिरशाह ने काबुल कंधार लेता हुआ हिन्दुस्तान के सिवाने पर आ पहुंचा । जलालाबाद के रहनेवालों ने उस के एक एलची को मारडाला यह एलची कुछ नादिर शाह के लोगों के लेने के लिये जो हिन्दुस्तान में भाग आये थे आया था और महम्मदशाह ने उन को नहीं दिया यह समाचार सुनकर नादिरशाह ऐसी शीघ्रता के साथ आया कि जब दिल्ली से चार मंजिल पर पहुंचा तब महम्मदशाह को समाचार पहुंचा । सआदत ख़ां को एक सेना के साथ उस का सामना करने को भेजा नादिरशाह ने उसे पराजित करके कैद करलिया । और दिल्ली को अपने अधिकार में कर लिया दो दिन तक तो कुशल रही तीसरे दिन किसी ने उड़ा दिया कि नादिरशाह मरगया यह सुनकर हिन्दुओं ने उस की सेना के बहुत से लोगों को मारडाला और बड़ा हुल्लड़ मच गया । इस बात से नादिरशाह क्रुद्ध होकर आज्ञा दी कि जो कोई इस नगर का मिले उसे बिना बिचारे मारडालो दो पहर तक गल्लियों में लोहू की धारा बहती रही फिर आज्ञा पातेही लोगों ने अपना हाथ रोक लिया । पैंतीस दिन रात दिल्ली में लूट पाट मची रही कई करोड़ रुपया लूट का उन के हाथ लगा नादिरशाह दिल्ली फिर से महम्मदशाह को देके आप सन् १७३९ में काबुल को लौट गया । हिन्दुस्तान से आठ बरस जाने के पीछे खुरासान में मारा गया इस बीच में इधर महम्मदशाह मरगया और उस का बेटा अहमदशाह गद्दी पर बैठा ॥

॥ अहमदशाह की कथा ॥

१७४२ से १७५५ तक ।

इस के समय बादशाह और वजीर से सदा बखेड़ाही रहा किया अन्त को निजामुल्क के पोते की सहायता पाकर मंत्री के

उत्पात से छुटकारा पाया फिर उसी के निकालने के प्रयत्न में लगा पर उसने होलकर मलहर एक मरहठा प्रधान की सहायता लेकर बादशाह को कैद कर लिया और बादशाह की आंखें फुड़वाडालीं और जहांदारशाह के पोते को आलमगीर दूसरा नाम देकर सिंहासन पर बिठाया ॥

॥ आलमगीर दूसरे की कथा ॥

सन् १७५४ से १७५९

अब राज्य में बड़ा गड़बड़ मचा अफगानों ने लाहौर और मुलतान लिया सिख लोग सब ओर अपनी सेना बढ़ाने लगे जाट और रुहेलो ने भी अपना सिर उठाया और लूट पाट करने लगे। इधर से मरहठे रुहेलखंड तक अपना अधिकार कर लिया। इधर गाजुद्दीन ने मरहठों की सहायता से सहज ही में दिल्ली ली और बादशाह को कैद करके मरवाडाला उस की शरीर को जमना में फेकवा दिया पर गाजुद्दीन के इतने शत्रु उठ खड़े हुए कि उसे जाटों की शरण लेनी पड़ी। अब मुख्य लड़ाई मरहठों और अफगानों के बीच में ठनी। मरहठों ने सिखों की सहायता से दिल्ली आगरा मुलतान और लाहौर तक अपना अधिकार करलिया और अफगानों को भगाकर सिंधु पार करदिया। इस बीच में अहमद अबदुल्लाह ने एक बड़ी भारी सेना लेकर सिंधु के इस पार आया और मरहठों को मार हटाया सारी सेना उन की नष्ट हुई और दत्ता संधिया उन का सेना पति मारा गया। फिर होलकर ने सिकंदरा के निकट सामना किया वह भी ऐसा पराजित हुआ कि कुछ लोगों के संग नंगा भागा फिर एक बरस के भीतरही। ४०००० मनुष्यों की सेना इकट्ठी करके सदाशिव राव पेशवा का भतीजा जाटों की सहायता के साथ दिल्ली पर चढ़आया। अबदुल्लाह से संग्राम हुआ मरहठे हार गये अबदुल्लाह दिल्ली का राज्य

आलमगीर दूसरे के जेठे बेटे आलीगौहर के हाथ में देकर सिंधु-पार चलागया ॥

॥ हिन्दुस्तान में अंगरेज लोगों के आने की कथा ॥

बिलायत में व्यापारियों की एक सभा थी उसे कम्पनी कहते थे वे लोग वाणिज्य के लिये हिन्दुस्तान में आया जाया करते थे सन् १६९८ ई० में उन लोगों ने औरंगज़ेब के बेटे अज़ीमुश्शान से चटानटी गोविन्दपुर और कलकत्ता की जमींदारी मोल ली थी फिर १७१५ ई० में बादशाह फरुखशेर बीमार हुआ उसे डाकटर हेमिलटन साहेब ने चंगा किया इसलिये बादशाह के यहां से कई एक गांव इनाम मिला और बंगाले में जगह मोल लेने की आज्ञा मिली और उन से असबाबों का टिक्कस लेना बन्द किया गया इसलिये कलकत्ता तुरंतही समृद्ध हो गया और फरासीसी लोग भी हिन्दुस्तान में आया जाया करते थे उन लोगों ने अपने व्यापार की कोठी सन् १६६८ ई० में सूरत नगर में बनाई थी बिलायत में आपस की लड़ाई के कारण वह कोठी शीघ्रही छोड़नी पड़ी । फरासीसों ने चाहा कि लंका में और कारमांडल घाट पर सेन्टरामस में अपना अधिकार रक्खें पर ओलंदेज लोगों ने रोक दिया । निदान मारटिन साहेब ने कुछ लोगों को इकट्ठा करके पांडीचेरी में उन को रक्खा फिर जब सन् १६४४ ई० में लड़ाई हुई तब हिन्दुस्तान में केवल पांडीचेरी उन के अधिकार में रही और कई एक छोटी २ कोठियां मालवर के तीर और कारमंडल के तीर और चंदर नगर में उन को रह गयी थीं ॥

॥ कारनाटिक के पहिले संग्राम का वर्णन ॥

सन् १७४४ से १७४८ तक ।

जब बिलायत में फरासीस और अंगरेज में संग्राम आरम्भ हुआ उस समय फरासीसी सरकार से आज्ञा हुई कि हिंदुस्तान में भी

अंगरेजों पर हल्ला करो इस लड़ाई में अंगरेजलोग हारे और फरासीस लोग जीते पर फरासीस प्रधान अपने देश को फिर गया और बीमार होकर मर गया तब डूप्ले साहेब फरासीसियों का चन्द्र नगर का प्रधानाध्यक्ष नियुक्त किया गया फिर पीछेसे पांडीचेरी का गवर्नर हुआ। उस का बिचार था कि अंगरेज़ों को जड़ से निकाल दीजिये इसलिये प्रयत्न करने लगा इस बीच में आरकट के नवाब ने अपने बेटे को १००० सिपाही के साथ अंगरेजों की सहायता के लिये भेजा फरासीसियों के पास केवल १२०० सिपाही थे उन्हों ने नव्वाब की सेना को पराजित किया इस से अंगरेज और फरासीसियों ने जान लिया कि मोगल की शक्ति अधिक नहीं है फिर डूप्ले साहेब चढ़ा परंतु नव्वाब की सेना अचानक उसपर हल्ला करके उसे हटा दिया यहां अंगरेज और फरासीसियों में झगड़ा मच रहा था कि विलायत से समाचार आया कि आपस में मेल होगया इसलिये दोनों जाति के लोग अपने अधिकार में स्थिर रहें॥

॥ हिन्दुस्तानी बादशाह और राजाओं के अधिकार में अंगरेज और फरासीसों के हाथ डालने का वर्णन ॥

यद्यपि विलायत में अंगरेज और फरासीसों में मेल होगया था परंतु यहां के बादशाह और राजाओं की निर्बलता देखकर उन लोगों ने चाहा कि कुछ अपना हाथ फैलावें इस बीच तंजौर के राजा शाहू जी को उस के भाई ने सिंहासन से निकाल दिया था उस ने अंगरेज़ों से सहायता चाही पहिली लड़ाई में उन की सहायता से कुछ न हुआ पर दूसरी बेर लेफटनेंट क्लैब की सहायता से उस ने जीता। सिंहासन अपने अधिकार में रक्खा भाई को पिनसिन देने को कहा और अंगरेज़ों को देवीकोटा। इधर

डेक्कान के सूबादार निज़ामुलमुल्क और करनाटिक के नव्वाब सआदुतुल्लाह के मरने पर नाज़िरजंग और अनवरुद्दीन ने उनके राज्य द्वयों को लेलिया मीरज़फाजंग और चंदासाहेब ये दो और दावीदार खड़े हुए अपनी सेना इकट्ठी करके फरासीसी डूप्ले साहेब से सहायता चाही उस ने १३०० सिपाही दिया लड़ाई में अनवरुद्दीन मारा गया और नाज़िरजंग ने सामना न किया फिर नाज़िरजंग ३००००० सिपाही लेकर मेजर लारेन्स की सहायता से लड़ाई के लिये चला इधर फरासीसियों में आपस में लड़ाई होगयी इसलिये चन्दा साहेब भाग गया और मीरज़फाजंग कैद होगया । डूप्ल का प्रयत्न निष्फल हुआ । फिर फरासीसी फौज ने हल्ला करके नाज़िरजंग को मारडाला इस बखेड़े से दक्खिन हिंदुस्तान में फरासीसी का अधिकार स्थिर हुआ और डूप्ले साहेब गवर्नर नियुक्त किया गया और बहुत से देश उन के हाथ लगे । मीरज़फा जीत कर डेक्कान में आया पर देखा कि अफगानी प्रधान हमारे सामने आता है इसलिये उन पर आक्रमण किया पर पहिली लड़ाई में मारागया तब फरासीसी सेना ने सलाबतजंग को सिंहासन पर बैठाया । इधर चंदा साहेब फिर करनाटिक का नव्वाब होगया अंगरेज़ों ने देखा कि फरासीसी लोग अपना अधिकार बढ़ाते जाते हैं इलिये क्लैव साहेब ने आरकट पर हल्ला किया वहां के लोग घबड़ाकर भाग गये लोग क्लैव का सामना करते थे पर सब को हराता हुआ मंदराज को चला आया बहुत सी लड़ाइयों के पीछे अंगरेज़ों और फरासीसों में मेल होगया और महम्मदअली करनाटिक का बादशाह हुआ ॥

॥ करनाटिक के पिछले संग्राम का वर्णन ॥

सन् १७५८ से १७६१ ई० तक

जब फिर विलायत में अंगरेज और फरासीसों से बिगड़ी तब

फरासीसों ने एक सेना के साथ कौंट लाली साहेब को हिंदुस्तान भेजा वह सन् १७५८ ई० में पांडीचेरी में पहुंचा और उसी दिन संझा समय सेंट डेविड किला पर हल्ला करके लेलिया सिपाहियों को कैद करके गढ़ों को गिरवा दिया । करनाटिक में और कई एक जगहों को लेकर मंदराज को जा घेरा वहां पर अंगरेजों से सामना हुआ फरासीसी हारे और अंगरेज के हाथ खेत रहा और भी बहुत सा बखेड़ा हुआ । अब जिस प्रकार से अंगरेज लोग बंगाल में आये और अपना लगातार अधिकार करने लगे उस का वर्णन करते हैं । सन् १६९८ ई० में बंगाले के सूबेदार अज़ीमुश्शान से चटानटी गोविन्दपूर और कलकत्ता मोल ले चुके थे और फरुख-शेर से दूसरे नगर मोल लेने की आज्ञा हुई थी पर जाफरखां हाकिम ने उन को रोका था पर जब शुजा हाकिम हुआ तो उस ने अंगरेजों पर दया की इस के पीछे सरफराज सूबादार हुआ उसे अलवर्दी खां ने निकाल दिया । मरहठे बहुत उपद्रव और उत्पात आकर बंगाले में मचाया करते थे अलीवर्दी खां ने अपनी बुद्धि-मानी और शूरता से बंगाले को बचा रक्खा यह अंगरेजों का स-हायक था इस ने १२ बरस तक राज्य किया उस के मरने पर उस का पोता सुराजुद्दौला गद्दी पर बैठा यह अंगरेजों पर बुरी दृष्टि रखता था और उन से लड़ने का बिचार किया उन की कासिम बजार की कोठी को नष्ट करने के लिये बड़ी सेना लेकर चला उस समय अंगरेजों के पास केवल ५१४ मनुष्य थे तिन में से भी अंगरेज केवल १७४ थे नव्वाब सन् १७५६ ई० में जून महीने की सोलहवीं तारीख को कलकत्ते के निकट पहुंचा यह देखकर अंगरेजों ने लड़कों और स्त्रियों को जहाज पर भेजदिया उस समय होलवेल साहेब सेनापति थे लड़ाई होने में साहेब लोग पराजित होगये सुराजु-द्दौला ने १४६ अंगरेजों को एक गोदाम में बंद कर दिया दूसरे दिन

भोर को उन में से केवल २३ जीते निकले और सब मर गये । जब यह समाचार मंद्राज में पहुंचा तब वाटसन और क्लैब साहेब एक सेना लेकर आये कुछ नव्वाब के सिपाहियों से लड़ाई हुई उन को पराजित करके तुरंतही बज बज में पहुंचे वहां का किला लेकर कलकत्ते के सामने आगये तोप का शब्द सुनतेही वहां के लोग अंगरेजों के शरणागत होगये यह समाचार जब नव्वाब के पास पहुंचा कि अंगरेजों ने कलकत्ता लेलिया तब १७५७ ई० में जनवरी महीने के अंत में कलकत्ते के पास अपना डेरा डाला क्लैब साहेब फरवरी महीने की पांचवीं तारीख को भोर के समय अपनी सेना लेकर निकले एक भारी लड़ाई के पीछे सुराजुद्दौला पराजित हुआ तब एक औरह ार मानकर मेल किया और यह नियत हुआ कि अंगरेज लोग कलकत्ते को रक्षित करें और व्यापार जैसा आगे करते थे वैसा करें इस बीच में विलायत से समाचार आया कि अंगरेज और फरासीस में लड़ाई होगयी । क्लैब साहेब ने चंद्रनगर के नष्ट करने का विचार किया इस बात में नव्वाब की संमति नहीं हुई पर वह वहां जाकर सन् १७५७ ई० में मयी महीने की १४ तारीख को चंद्रनगर को घेरलिया और वाटसन साहेब की सहायता से फरासीसीयों को दबा दिया । इस बीच में बहुत से लोगों ने मीरजाफर को अपना प्रधान बनाकर नव्वाब को चाहा कि सिंहासन से उतार दें । मीरजाफर और क्लैब साहेब के बीच में लिखा-पढ़ी होने लगी क्लैब ने मीरजाफर से कहा कि तुम हमें ३००००००० रुपया दो तो हम तुम्हें सिंहासन पर बैठावें । अमीचंद ने अंगरेजों को धमकाया कि हमको कुछ दो नहीं तो यह भेद हम खोल देंगे पर क्लैब साहेब ने उसे सत्यानास कर दिया । अंगरेजी सेनापति ने चंद्रनगर में सिपाहियों को बटोरकर १७५७ ई० में जून महीने की तेरहवीं तारीख को कूच किया अंगरेजी सेना में ३०००

मनुष्य थे तिनमें अंगरेज थे नव्वाब की सेना में जो पलासी में पड़ी थी ३५००० पैदल थे १५००० सवार थे क्लैव साहेब ने अपनी सेना को दूसरे दिन उतारा और नव्वाब की सेना की ओर चले जून महीने की २३ तारीख को बड़े सबेरे नव्वाब ने हल्ला मारा बड़ा संग्राम हुआ नव्वाब की सेना भागी क्लैव जीते इस लड़ाई में बहुत से लोग नव्वाब के मारे गये और चालीस तोप छीनी गयी अंगरेजों की ओर केवल २२ मारे गये और पचास जखमी हुए नव्वाब यह दशा देखकर एक ऊंट पर चढ़कर दो हजार सवारों के साथ भागा दूसरे दिन मीरजाफर और क्लैव से भेंट भयी उसे क्लैव साहेब ने बंगाल बिहार और उड़ीसा का नव्वाब बनाया और यह बिचार ठहरा कि सुराजुद्दौला का पीछा करना चाहिये सुराजुद्दौला अपने महल में पहुंच गया था पर जब सुना कि मीरजाफर पिछिआये आता है तब फटहा पुराना कपड़ा पहिनकर और कुछ रत्न अपने साथ लेकर और एक बजड़े पर चढ़ कर चाहा कि पटने चले मल्लाह लोग रात को राजमहल में ठहर गये और सुराजुद्दौला ने एक बाटिका में अपने को छिपाया। वहां पर एक मनुष्य ने जिसे उस ने दुख दिया था पकड़ लिया और मीरजाफर की सेना में देदिया। उन्हों ने पकड़ कर मुर्शिदाबाद भेजदिया वहां पर मीरजाफर के बेटे मीरन की आज्ञा से मारागया। इस बीच में दिल्ली के बादशाह का बड़ा बेटा अपने बाप की ओर से बंगाल बिहार उड़ीसा का सुबेदार नियुक्त किया गया जब वह चला अवध के नव्वाब और इलाहाबाद के सुबेदार उस से मिले यह समाचार सुनकर क्लैव साहेब उन का हल्ला रोकने के लिये पटने की ओर चले अवध के नव्वाब ने इलाहाबाद को लिया सुबेदार को कैद करलिया शाहजादा अकेला पड़ गया तबै उस ने क्लैव साहेब के पास चिट्ठी लिखी कि हमसे जो कुछ रुपया चाहिये लीजिये

इधर न आइये इस प्रकार से शाहज़ादे ने सूबों को बचाया इस बीच में क्लैव साहेब ने सरकारी नौकरी छोड़दी और सन् १७६० ई० में विलायत को गये क्लैव के जाने पर शाहज़ादा और अवध के नव्वाब मिलकर पटना पर चढ़े कप्तान कैलियाड साहेब ने उन को निकालदिया वे फिरकर अवध में आये इस बीच में अंगरेज़ लोग मीरजाफर से अप्रसन्न हुए इसलिये कि वह बड़ा आलसी विषयी और उत्पाती होगया और अंगरेज़ों का यह विचार हुआ कि उस के स्थान में दूसरे को नियुक्त करें उन्हों ने उस से पूछा कि तुम्हारे दमाद मीरकासिम को राज्यप्रबन्ध सौंपे और तुम नव्वाब बने रहो उस ने इस बात को स्वीकार नहीं किया और कलकत्ते में जाकर रहा । मीरकासिम राज्यप्रबन्ध में लगा और अंगरेज़ लोगों का जो रुपया बाकी था सो दिया फिर मोगल नव्वाब के देश पर चढ़ा मेजर कार्नै ने उसे पराजित किया तब तुरन्त सुलहनामा हुआ कि मोगल १४०००० रुपया साल में लिया करें नाम को सूबेदार रहें और काम काज कासिम किया करे । इस बीच में अंगरेज़ों ने मीरज़ाफर को फिर सिंहासन पर बिठाया यह देख कर मीरकासिम ने लड़ने की तयारी की और अपनी सेना को अंगरेज़ी तौर पर बनाया उस के पास २०००० पैदल और ८००० सवार थे और तोपखाना भी अच्छा था उस की सेना गरिया के मैदान में आकर ठहरी मेजर आदम केवल ३००० सिपाही लेकर उस पर चढ़े घोर संग्राम हुआ मीरकासिम सब अपना तोपखाना आदि छोड़कर भागा और उदवा नदी के तीर पर जाकर अपनी छावनी डारी और बहुत दृढ़ता से उसे नदी और पहाड़ों के बीच में बनाया कि उस के लेने में एक महीना लगा तब आदम साहेब मुंगेर पर चढ़े और नव दिन में उसे लिया । कासिम ने अंगरेज़ों के पास संदेसा भेजा कि जो तुम पटने पर चढ़ोगे तो

हम यहां जितने साहेब गोरे आदि हैं मरवाडालेंगे वहां पर ५० साहेब और १०० गोरे थे उन्हों ने सब को मरवाडाला केवल फुलर्टन साहेब अपनी डाकतरी के सबब से बच गये आदम साहेब ने जाकर के पटने को घेरा और नव दिन के पीछे उसे लिया । अब. कासिम अवध में भाग गये और शुजाउद्दौला के शरणागत हुए वहां पर एक मोगल शरणागत था उन तीनों ने मिलकर अपनी सेना इकट्ठी की और अंगरेजी सेना पर चढ़ायी की पर अंगरेजी सेना ने उन्हें पराजित करके अवध में हटा दिया सन् १७६४ ई० मेजर हेक्टर मनरो साहेब सेनापति हुए और शुजाउद्दौला पर चढ़ाई करके बकसर में सन् १७६४ ई० अकतूबर की २३ तारीख को उसे पराजित किया । नव्वाब ने मलहर राव और गाजीउद्दीन की सहायता से अंगरेजों का सामना करने को फिर प्रयत्न किया पर जर्नैल कारनक साहेब ने उन की सेना तित्तर वित्तर कर दिया । नव्वाब अपना राज छोड़कर भागा इस बीच में मीरजाफर मरगया और अंगरेजों ने उस के बेटे नाजिमुद्दौला को गद्दी पर बिठाया । कम्पिनी ने यहां की कौन्सल की चाल चलन से बहुत अप्रसन्न होकर क्लैव को सर्वाधिकारी बनाकर फिर भेजा क्लैव सन् १७६५ के आदि में कलकत्ते में पहुंचा इस बीच में शुजाउद्दौला फिर एक दूसरी सेना बटोरकर जर्नैल कारनक साहेब का सामना करने को आया काल्पी में लड़ाई हुई नव्वाब हारमानकर जमना के पार भाग गया क्लैव साहेब यह समाचार सुनकर इलाहाबाद को चले वहां पर दिल्ली के बादशाह और नव्वाब अपने भाग्य को अगोर रहे थे क्लैव साहेब ने नव्वाब का राज्य नव्वाब को दिया और कड़ा और इलाहाबाद का सूबा बादशाह को दिया इस प्रकार से अंगरेज-लोगों का अधिकार बढ़ता चला ॥

॥ मैसूर के संग्राम का वर्णन ॥

हैदर के समय के पूर्व मैसूर कभी तो मुसुलमानों के हाथ में था कभी वहां के राजाओं के । और ये राजालोग दिल्ली को कर पहुंचाते थे मोगल राज्य के निर्बल होने पर वहां के राजा मंत्रियों के हाथ में होगये मैसूर और अंगरेज से लड़ाई होने के समय दो भाई देवराज और नन्दराज प्रबल होते चले हैदर के पुर्खेलोग पंजाब से आये थे और बहुत गरीब थे उस का बाप फते-मुहम्मद मैसूर के एक प्रधान की सेना में नायक के ओहदे में नियुक्त हुआ किसी लड़ाई में मारा गया और शाहबाज और हैदर उस के बहुत छोटे लड़के थे शाहबाज ने नन्दराज की सेना में नोकरी की पर हैदर किसी नियत स्थान में न रहा पर उस की सूरता और वीरता शीघ्रही प्रकासित होने लगी वह एक छोटी सी सेना का अधिकारी बना जब कर्नाटक में संग्राम का आरम्भ हुआ तो हैदर नन्दराज के साथ तिरिचन.पुल्ली में गया थोड़ेही दिन में प्रधान की पदवी पायी और उस के साथ १५००० सवार और ५००० पैदल सिपाही रहने लगे फिर कुछ दिन के बाद डिंडिगाल फौज-दार नियुक्त किया गया उस के पराक्रम और योग्यता ने उसे राज्य का अभिलाषी किया कुछ दिन के पीछे हैदर की योग्यता से मैसूर का राजा उस के अधीन होगया फिर कुछ लड़ाई झगड़े के पीछे हैदर १७६२ ई० में आपही राजा का अधिकारी होगया और सब ओर अपना राज्य बढ़ाने लगा यहां तक कि मैसूर में बहुत से देशों को मिला दिया इस प्रकार उस का राज्य बढ़ता जाता था परंतु माधोराव मरहठे की चढ़ाई के कारण कुछ काल तक रुक गया और हैदर कई बेर पराजित हुआ अंत ३२०००० रुपया और कुछ देश देकर मेल करलिया पर कालीकट देश को लेकर बड़ी निर्दयता फैलाई जिस के कारण राजविग्रह हुआ ॥

॥ अंगरेज और हैदर की पहिली लड़ाई का वर्णन ॥

सन् १७६७ से १७६९ तक ।

निज़ामअली दक्खिन का सूबेदार अंगरेज़लोग और माधेराव मिलकर उस की शत्रुता करने लगे सन् १७६७ ई० के आदि में इन लोगों की सेना मैसूर की ओर चली माधेराव मैसूर में पहिले पहुंचा फिर हैदर ने ३५०००० रुपया देकरके उस से अपना देश छोड़वा लिया कुछ दिन के पीछे अंगरेज़ लोगों ने चाहा कि हैदर को एक बारगी पराजित कर लें पर हैदर ने उन को कई बेर हटा दिया और एक बेर बड़ी सेना के साथ मन्दराज के निकट आगया जिस से अंगरेज़ लोग घबड़ा गये और उस से सन् १७६८ ई० में सुलह नामा होगया फिर कुछ दिन तक मरहठों और हैदर से लड़ाई होती रही तिस पीछे उस से भी सुलह होगयी तिस पीछे हैदर ने उन देशों को जो उस के हाथ से जाते रहे उन के लेने को चाहा फिर कुर्ग और कालीकट को लिया ॥

॥ अंगरेज और मैसूर की दूसरी लड़ाई का वर्णन ॥

सन् १७८० से १७८३ तक ।

फिर अब हैदर ने मरहठों से मेलकरके चाहा कि अंगरेज़ों को अपने देश से निकाल दें सन् १७८० में जून महीने के आदि में हैदर ९५००० मनुष्य से कुछ अधिक लेकर के कर्नाटिक में चढ़ गया और मन्दराज तक लूटता पाटता चला गया। तब अंगरेज़ों ने चाहा कि अपनी सब सेनाओं को इकट्ठी करें। उस समय हैदर ने करनैल बेली साहेब के २८०० मनुष्यों को टुकड़े २ कर डाला और बेलोर आदि बहुत से जगहों को घेरलिया यह समाचार सुनतेही बड़े लाठ हेस्टिंग साहेब ने कूटे साहेब को पांच छ सै अंगरेज़ी सिपाही देकर हेक्टर मनरो साहेब की जगह पर

भेजा कूट साहिब ने पहुंचतेही ७००० सातहज़ार सिपाही लेकर कद्दालोर के निकट हैदर को पराजित किया फिर एक बड़ा घोर संग्राम हैदर से पालीलूर में हुआ हैदर पराजित हुआ और उस के ५००० सिपाही सन् १७८१ ई० में सितंबर महीने की सत्रहवी तारीख़ को मारे गये फिर हैदर ने तुरंतही करनैल ब्राथवेट साहेब के २००० सिपाहियों पर कोलरून नदी के तीर हल्ला किया उन में से कुछ मारेगये और कुछ कैद भये कोई बच न गया पर हेस्टिंग साहेब को उस की ओर से मरहठों के फोड़लेने का समाचार सुनकर बड़ी चिंता हुई पर फरासीसी ३००० सिपाहियों की सहायता से काद्दालोर को नष्ट करदिया इस बीच में कूट साहेब ने उन को पराजित करके हटा दिया हैदर सन् १७८२ ई० में दिसंबर महीने की सातवीं तारीख़ को अस्सी बरस को अवस्था में मरगया तब उस का बेटा टीपू अपने मंत्रियों के प्रयत्न से गद्दी पर बैठा इधर उधर का प्रबंध करके मंगलोर को घेरा करनैल केम्पबिल साहेब ने बचाया ५६ रोज तक वह जगह घेरी रही इस बीच में मेल हो गया इस नियम पर कि अपना २ पहिला अधिकार रक्खें और टीपू अंगरेज के जो लोग कैद थे उन को छोड़ दें ॥

॥ मैसूर के विजय का वर्णन ॥

टीपू अपने बाप की अपेक्षा मत के विषय में क्रूर था पहिले उस ने कनारा के किरिस्तानों पर जिहाद किया उन में से ६०००० मनुष्यों को मुसुलमान करके श्रीरंगपट्टन में लेगया फिर वहां से कुर्ग में आकर ७०००० मनुष्यों को मुसुलमानी मत पर लाया और आप बादशाह की पदवी धारण की इस बीच में मरहठे और निज़ाम मिलकर तुंगभद्रा की ओर चले और बदामी का किला लेलिया और टीपू से तुंगभद्रा के दक्षिण में लड़ाई हुई परंतु टीपू पराजित हुआ इस बीच में वर्षा काल आगया और कोई लड़ाई

न हुई लोग अपने २ सिवाने पर चले गये फिर टीपू ने तुरंतही उन पर हल्ला किया वे लोग पराजित हुए और टीपू जीता फिर इस नियम पर मेल हुआ कि हैदर का जो ४७०००० रुपया था सो मिले उस में से ३००००० उस ने पाया और कि अदोनी आदि नगर उसे फेर मिले और कि तुंगभद्रा के दक्खिन के देशों का वह बादशाह कहलावे तब टीपू ने मुसुलमानी मत का प्रचार बलात्कार से करने को चाहा इसलिये कालीकट आदि जगहों में गया कहीं जीता कहीं हारा पर अंत को सन् १७९० ई० में अपरैल महीने के आदि में ट्रावंकोर आदि जगहों का स्वामी बनगया। इस बीच में लाट कार्नवालिस ने उस के अभिमान तोड़ने के लिये मरहठों और निज़ाम से मेल करके सुलतान पर चढ़ाई करने का बिचार किया और जरनैल मेडो साहेब को सेना का अधिकार सौंपा और संग्राम का आरम्भ १७९० के जून महीने से हुआ जरनैल से कुछ न बनपड़ी तब लाट साहेब आप सन् १७९१ ई० के जेनवरी महीने में सेना का अधिकार लेकर बंगलोर की ओर चले मार्च की २१ तारीख़ को किले को लेलिया फिर श्रीरंगपट्टन की ओर चलने का बिचार किया इस बीच में निज़ाम के १००० सवार लाट साहेब की ओर आये नाना प्रकार के दुख उठाने के पीछे अंगरेज़ी सेनापति ने राजधानी पर हल्ला किया और सुलतान को पराजित किया इस लड़ाई में अंगरेज़ के ५०० मनुष्य मारेगये और जखमी भये परंतु महंगी बेरामी और नाना प्रकार की आपत्ति ऐसी आन पड़ी कि लाट साहेब को सब सामग्री छोड़कर फिरना पड़ा। जब बंगलोर की ओर आते थे तब परसुराम और हरिपंथ मरहठों से भेट हुई इसी बीच में अंगरेज़ी छाउनी में बिपत्ति भी कम होगई कार्नवालिस साहेब बंगलोर में ठहरे तब कई एक किले पष्ट कर दिये गये पर इस बीच में मंद्राज से रसद पहुंची अंगरेज़ी सेना-

पति ने फिर सन् १७९२ ई० के फरवरी महीने की पहिली तारीख़ को श्रीरंगपट्टन पर २२००० सिपाही और सत्तर अस्सी तोप लेकर चढ़ा और पांचवें तारीख़ को अंगरेज़ लोगों को मालूम हुआ कि टीपू के पास ५००० पैदल और ५००० सवार राजधानी के सामने बड़ी दृढ़ता से पड़े हैं पहिले तो साहेब के बिचार में हल्ला करना असंभव दिखलाई दिया पर कार्नवालिस साहेब ने अपनी सेना का प्रबंध करके रात को चढ़ाई की और भोर होने के पहिलेही अंगरेज़ी सेना ने श्रीरंगपट्टन को चारो ओर से घेर लिया तब टीपू ने मेल के लिये प्रार्थना की लाट साहेब ने कई एक नियमों पर सुलह किया इस बीच में कार्नवालिस साहेब सन् १७९३ में बिलायत चले गये और सर जानशोर साहेब उन की जगह में आये उन के समय कोई भारी लड़ाई नहीं हुई पर टीपू अपनी सेना को बढ़ाता रहा सन् १७९८ ई० में लाटवेल्सली आये जब उन्हों ने देखा कि टीपू फरासीसियों को अपनी सेना में रखता है तब निजाम से मेलकरके संग्राम आरम्भ किया और जेनरल हेरिस को भारी सेना देकरके एक ओर से भेजा और दूसरी ओर जेनरल स्टुआर्ट और निजाम की सेना चढ़ी टीपू स्टुआर्ट साहेब की सेना पर हल्ला करके तुरंतही हेरिस साहेब की सेना की ओर झुका और यह चाहता था कि एक स्थान पर ठहर कर न लड़ै हेरिस साहेब ऐसी बाट से जिधर से टीपू को आशा न थी जाकर श्रीरंगपट्टन पर चढ़ गये तब टीपू उस नगर के क़िले के भीतर जा रहा तो करनैल वेल्सली और कई एक बड़े २ साहेबों ने मिलकर लेलिया उस के लड़केबाले अंगरेजों के हाथ में आगये और पीछे से मालूम हुआ कि वह किसी सिपाही के हाथ से मारा गया उस के देशों में से कुछ अंगरेज़ों ने आप लेलिया कुछ निजाम को दिया कुछ मरहठों को सौंपा और कुछ मैसूर के बीच का देश वहां के पुराने घराने में से किसी को दिया ॥

॥ मरहठों के संग्राम की कथा ॥

शिवाजी के पीछे उस का पोता साहू अवरंगज़ेब के हाथ में पड़गया था उसे बेगम साहेब ने अर्थात् बादशाह की बेटी ने पाला था और बादशाह उसे बहुत चाहते थे उस को दक्खिन में अधिकार मिलगया था और सन् १७०८ ई० में अपने पुर्खों के सिंहासन पर बैठा यह अयोग्य नहीं था पर विषय भोग में लग गया और राज्य का काम बालाजी विश्वनाथ के हाथ में छेदिया और उसे पेशवा की पदवी दी ॥

॥ पेशवा लोगों का वर्णन ॥

बालाजी पेशवा बड़ा योग्य पुरुष था मरहठों के राज को बहुत दृढ़ किया और ६ बरस राज्य करके सन् १७२० ई० में मरगया तब बाजीराव गद्दी पर बैठा उस ने निज़ाम से लड़ाई का विचार किया पर नर्मदा के तीर पर मरगया । दो प्रधान होलकर और सेंधिया जो हिंदुस्तान के राज्य के लिये लड़े पहिले बहुत नीच दशा में थे उन लोगों ने १७२० से १७४० तक राज्य किया बाजीराव के बेटे बालाजी बाजीराव से राघोजी भोसले से सामना हुआ बालाजी ने उसे दबा दिया इस बीच में राघोजी ने कई बेर बंगाल पर हल्ला किया पेशवा कई बरसों तक डेक्कान और कर्नाटक की लड़ाई में अभा रहा इधर सेंधिया और होलकर ने जमुना पार होकर रुहेलखंड पर चढ़ाई की पर अबदुल्लाह अफगान प्रधान ने ऐसा पराजित किया कि सब मरहठे उखड़ा उठे बालाजी पछतावा के मारे मरगया इसी के राज्यानुशासन में साहूजी सन् १७४९ ई० में मरा । बाजीराव ने १७४० ई० से १७६१ ई० तक राज्य किया इस का बेटा माधोराव पेशवा सिंहासन पर बैठा ४ बरस के पीछे माधोराव ने राज्य का प्रबंध अपने हाथ में लिया और सन् १७६५ ई० में हैदर पर चढ़ा फिर बादशाही देश के बीच में अपनी जड़

जमाई सिंधिया रुहेलखंड पर चढ़ गया और मोगल बादशाह और मरहठों के शरणागत हुआ यह पेशवा सन् १७६१ से १७६२ ई० तक राज करता रहा और निःसंतान मरा नरायनराव अपने भाई माधोराव की गद्दी पर बैठा पर एक बरस के भीतरही अपने चचा राघव के उभाड़ने से सिपाहियों के हाथ से मारा गया। राघव सिंहासन पर बैठा तोहीं हैदर के ऊपर चढ़ गया। इधर नरायनराव के बेटे को जो गर्भही में था पेशवा की गद्दी पर बैठाने का विचार किया राघव पूना की ओर लौटा मंत्रियों ने त्र्यम्बकमामा को उस से सामना करने के लिये भेजा परंतु वह मारा गया तब राघव हुल्कर सिंधिया के पास गया इस बीच में नरायनराव की विधवा गंगाबाई को बेटा हुआ ४० दिन की अवस्था में उसे पेशवा बना के प्रकाशित किया बहुत सी राघव की सेना उसे छोड़कर चली गई तब उस ने बंबई में अंगरेज़ों के पास सहायता के लिये प्रार्थना की कर्नेल कीटिंग साहेब २५०० सिपाही के साथ भेजे गये इन को लेकर राघव पूना की ओर चला मरहठों ने मार्ग में उसे रोका पर हटाये गये इधर अंगरेज़ों से कुछ नियम बांधा गया उस से राघव की सेना न्यून होगई और अंगरेज़ों ने रक्षा करने से हाथ खैंच लिया ॥

॥ मरहठों के प्रथम संग्राम का वर्णन ॥

सन् १७७९ से १७८२ तक ।

इस बीच में कोर्ट आफ डिरेक्टर ने एक पत्र गवरमेन्ट के पास भेजा कि तुम लोगों के प्रबंध से हमलोग प्रसन्न हैं यह सुनकर वे नान्हा से बिगड़े और करनैल इगरटन साहेब को ३९०० सिपाही के साथ पूना पर हल्ला करने को भेजा १७७९ में जनवरी की ९ तारीख़ को मरहठों ने ५०००० मनुष्य लेकर अंगरेज़ों को घेरा कि अंगरेज़ों को हटना पड़ा और इस से अंगरेज़ी गवर्नमेंट को ऐसा

क्रोध भया कि कर्नैल इगरटन काकबर्न और कारनेक साहेब पदच्युत कर दिये गये । उधर लेस्ली साहेब को राजपूत सरदारों के साथ लड़ाई में बहुत काल लगा तब हेस्टिंग साहेब ने गाडार्ड साहेब को उस की जगह में भेजा इस ने जातेही अहमदाबाद आदि नगरों को नष्ट करके मरहठों को बहुत धमकाया परंतु उन्हों ने पीछे की ओर से ऐसी चढ़ाई की कि इन को बंबई में हट आना पड़ा हेस्टिंग साहेब ने और सेना भेजी कप्तान पाफन साहेब ने जमुनापार होकर लहर का क़िला नष्ट करके सन् १७८० ई० में अगस्त की तीसरी तारीख़ को ग्वालियर को लिया दूसरी सेना लेकर करनैल केमक साहेब मालवा में पहुंचे सिंधिया ने तुरंतही मेलकर लिया अंगरेज़ों के हाथ बहुत सी जगहें लगीं और राघव को २५००० रुपया महीना पेनसिन नियत करदिया इस प्रकार से मरहठों का पहिला संग्राम समाप्त हुआ ॥

॥ सेंधिया का वर्णन ॥

महदजी सेंधिया बाजीराव की चालपर चलने लगा यह मरहठों में बड़ा सरदार था मालवा का स्वामी बन बैठा और क्रम २ अपना अधिकार बढ़ाने लगा पूरब ओर बुंदेलखंड को लिया पश्चिम ओर राजपुताना के राजाओं पर कर लगाया दिल्ली के बादशाह शाहआलम उस के शरणागत हुए दिल्ली आगरा आदि देश उस के अधिकार में आगये खजाना कम होने से उस ने राजपूतों पर भारी कर लगाया वे बलवा कर बैठे और गुलाम कादिर और महम्मदबेग की सहायता से उसे दो बेर पराजित किया परंतु गुलाम कादिर की निर्दयता से लोगों ने उसे पकड़ कर मारडाला और सिंधिया ने फिर सब राज्य पाया एक फरासीसी साहेब को रखकर अंगरेज़ी तौर पर अपनी सेना को कवायद सिखलाया फिर पूना के लेने का बिचार किया यद्यपि नाना

फरनाविज उस के विरोध में था तोभी छोटे पेशवा की दया उस ने प्राप्त की और मरहठों का पंच नान्हा को बनाने को था पर इस बीच में सन् १७९४ ई० में फरवरी महीने की १२ तारीख को मरगया और उस का भतीजा दौलतराव सेंधिया जो १५ बरस का था उस का उत्तराधिकारी हुआ ॥

॥ पेशवा का वर्णन ॥

माधोराव दूसरा नरायनराव का बेटा राघव के विरोधी लोगों की सहायता से जन्मतही गद्दी पर बैठायागया । नान्हा फरनाविज ने जो इस समय पूना की सभा का कार्याध्यक्ष था अपनी अधीनता में उसे रक्खा इस राजा और बाजीराव राघव के बेटे से बड़ी मित्रता हुई इस से नान्हा को बड़ा क्रोध हुआ उस ने बाजीराव को बहुत तंग किया और माधोराव को बहुत सा परुष बचन कहा माधोराव क्रोध और पछतावे से छत परसे गिरकर मरगया माधोराव के मरने पर बाजीराव दूसरा मसनद पर बैठा और नान्हा फरनाविज बहुत से बड़े २ काम करके और अपनी कीर्त्ति छोड़ के मरा ॥

॥ होल्कर सिंधिया के संग्राम का वर्णन ॥

इस बीच में सिंधिया और होल्कर में बिगाड़ हुआ एक घोर संग्राम इंदौर के निकट हुआ होल्कर पराजित हुआ परंतु सिंधिया की अनवधानता से होल्कर ने तुरंतही सेना बटोर के पूना पर चढ़ाई की सिंधिया और पेशवा को पराजित कर दिया होल्कर ने अब अंगरेज़ों से सहायता चाही परंतु पेशवा अंगरेज़ों से आगेही से प्रबंध कर चुका था गवर्नर जेनरल ने जो २ नियम किया उसे पेशवा नहीं मानता था यहां तक कि होल्कर से लड़ाई हुई और पेशवा पराजित हुआ तब पेशवा ने अंगरेज़ों के नियम को अंगीकार किया तब १८०२ ई० के अंत में बेसीन नगर में सुलहनामा हुआ

जिस का विशेष नियम यह था कि जैसा पेशवा था वैसेही कर देगे और उस के बदले में ३६०००० रुपये आमदनी का देश अंगरेज़ों को मिला ॥

॥ मरहठों के दूसरे संग्राम का वर्णन ॥

सन् १८०३ से १८०५ तक ।

सिंधिया को और राघोजी भोंसला बरार के राजा को अंगरेज़ों की वृद्धि से ऐसा डर और द्वेष भया कि सुलहनामे को तोड़ने का उन लोगों ने बिचार किया और पूना का अधिकार लेने को फिर बहुत सी सेना इकट्ठी की अंगरेज़ों ने जब उस को बोलाया तब बहाना करके न आया और बरार के राजा से मेल करलिया तब जनैल वेलेजली को और लेक साहेब को इन दोनो के देश पर चाढ़ई करने के लिये बड़े लाट साहेब की आज्ञा हुई । दक्खिन में अहमदनगर सरकार के हाथ में आगया इस से गोदावरी पर का सब देश सिंधिया के हाथ से जाता रहा लेक साहेब कनौज से कूच करके अलीगढ़ में सिंधिया की सेना को पराजित किया और दिल्ली की ओर बढ़े वहां पर सिंधिया की सेना से लड़ाई हुई ३००० मनुष्य उस के मारे गये और सेना भागी फिर यहां पर लेक साहेब ने शाहआलम से भेंट कियी कुछ सिपाही और अक्टरलोनी साहेब को वहां छोड़कर आप जाके मरहठों से आगरा छीन लिया फिर लासवारी में पहुंच कर मरहठों को ऐसा पराजित किया कि सिंधिया ढीला होगया उधर दक्खिन में अहमदनगर बुरहानपूर आदि नगरों को लेलिया और नागपूर के राजा को भी दबादिया पर नागपूर के राजा ने कटक देश देकर अंगरेज़ से मेल कर लिया सिंधिया ने भी अहमदनगर और भड़ौच देकर प्रतिज्ञापत्र लिख दिया कि फिर कभी सरकार के विरुद्ध न होंगे ॥

अब इंदौर के राजा जसवंतराय होल्कर पर चढ़ाई हुई सामना होने पर होल्कर की सेना ने धोखा देकर उन को घेरलिया और सरकारी सेना नाना प्रकार का दुख उठाकर आगरे में पहुंची इस बात से होल्कर को बड़ा घमंड हुआ २०००० सिपाही को लेकर दिल्ली को जाकर घेरलिया पर अकटरलोनी साहेब ने थोड़ी सी सेना से उन का सामना किया अंत को मरहठे हट निकले फिर डीग में एक बड़ी भारी लड़ाई हुई मरहठे हारे सरकार की जीत हुई फिर लेक साहेब ने फरोखाबाद के पास जाकर उसे घेरा और लड़ाई हुई पर वह बचकर भाग गया भरथपूर के राजा रणजीतसिंह ने होल्कर को शरण में लिया इसलिये सरकार ने उन का डीग का क़िला छीन लिया सन् १८०५ ई० में जनवरी महीने की ३ तारीख़ को लेक साहेब ने भरथपूर को घेरा और चारो ओर ऐसी धधक बनी थी कि सरकार के हज़ारों मनुष्य नष्ट होगये फिर एक किले पर चढ़े उस में भी सरकारी सेना बहुत मारी गयी गोला बारूद रसद सब चुक गई इस से सरकारी सेना पीछे को हटी। इस बीच में भरथपूर के राजा ने होल्कर से कहा कि तुम यहां से अभीं चलेजाव। मैं अंगरेज़ों के शत्रु को नहीं रखसक्ता और अपने बेटे कुंअर रणधीरसिंह को लेक साहेब के पास भेजदिया कि हम आप से लड़ाई नहीं करसक्ते २०००० रुपया लड़ाई का खरचा लेक साहेब ने लेकर सुलहनामा करलिया। इस बीच में लाट कार्नवालिस साहेब जो १७९३ में यहां से विलायत चलागया था फिर कलकत्ते में आया परंतु भगवान की इच्छा ऐसी हुई कि सन् १८०५ ई० में अकतूबर की पांचवीं तारीख़ को गाज़ीपूर में आकर मरे। उन के मरने पर जारज बारलो साहेब लाट का काम करने लगे। फिर पंजाब में होल्कर से अहदनामा हुआ सन् १८०७ ई० जुलाई के अंत में लाट मिंटो साहेब गवर्नर

जेनरल होकर आये और बारलो साहेब मंद्राज चलेगये सन् १८१२ ई० में कालिंजर का किला सरकार के हाथ में आया । अब इन्ही दिनो में पंजाब में रणजीतसिंह राजा हुए और सब ओर देश दबाते चलेजाते थे यहां तक कि अपनी सेना सतलुज के इस पार लाया और अपने राज की सीमा जमुना को बनाने को चाहा पर अकटरलोनी साहेब सेना समेत जब लुधियाने में पहुंचा तो यह समाचार सुनकर सरकार से सन् १८०९ ई० में मित्रता का प्रबंध करलिया और अपने राज्य की सीमा सतलुज तक रक्खी । इसी बीच में मन्द्राज में हिंदुस्तानी सिपाही के प्रधानों में और गोरों में कुछ झगड़ा होगया पर लार्डमिंटो साहेब ने झगड़े को रोक रक्खा ॥

इधर नैपाली लोग अपना राज्य बढ़ाने लगे और अंगरेज़ी देशों में अधिकार करना आरम्भ किया तब पहिले अंगरेज़ों ने समझाया पर उन्हों ने नहीं माना राजा वहां का उस समय में लड़का था और राजकाज भीमसेन करता था सन् १८१४ ई० में जरनैल जिलेस्पी ३५०० सिपाही साथ लेकर देहरादून में गये वहां से कलंगा नाम किले पर हल्ला किया उस में नैपाली थोड़े से थे पर उन्हों ने जरनैल जिलेस्पी साहेब को मारडाला और सरकारी सेना पीछे हटआई फिर दिल्ली से भारी २ तोपें वहां गयीं गोला चलने लगा किले में बहुत से लोग मारेगये और बाकी एक ओर से भागगये फिर जैतक के किले के लेने के लिये गये पर कुछ न बन पड़ी जरनैल ऊड साहेब ४५०० सिपाही के साथ गोरखपूर के सरहद से पालपा का किला लेने को चले राह ऐसी बुरी थी कि लौटकर गोरखपूर की छावनी में चलेआये फिर जरनैल मारलो साहेब ८००० सिपाही लेकर बेतिया की राह से नैपाल पर चढ़े सिबाने पर पहुंचतेही संग्राम हुआ सरकारी सिपाही मारेगये

और जरनैल साहेब बेतिया में हट आये उधर कर्नैल गाईनर साहेब आलमोढ़ा का किला नैपालियों से छीन लिया पर कप्तान होयसी पराजित होकर नैपालियों के हाथ में पड़गये तब तक में जरनैल अकटरलोनी साहेब ने नालागढ़ नैपालियों से लेलिया इस समय में नैपालियों का राज बहुत बढ़ा था सब पहाड़ी राजा उन्हें कर देते थे इस बीच में जरनैल अमरसिंह थापा ३००० सिपाही लेकर रामगढ़ बचाने के लिये आया पर यह किला १८१५ ई० में सरकार के अधिकार में आगया और कई गढ़ों के लेने में कई एक साहेब मारेगये अंत को रैला और देवथल सरकार के अधिकार में आगया दूसरे दिन भक्तसिंह फौज़लेकर आया सरकारी तोपों से जंजीरी गोले चल रहे थे पर नैपाली लोग ऐसी शूरता से लड़े कि केवल दो तीन साहेब और इतनेही गोलंदाज बचगये दो घंटे तक घोर संग्राम रहा भक्तसिंह मारागया इस के मारे जाने से नैपाली लोग ढीले होगये और मेल का संदेसा भेजा पर इन्हों ने नहीं माना अकटरलोनी साहेब ने फिर चढ़ाई का हुकुम पाया बड़ी चतुराई से फौज़ लेगया बड़ी भारी लड़ायी हुई ५०० नैपाली मारेगये भीमसेन के भाई ने कहला भेजा कि महाराज ने आप लोगों की आज्ञा के अनुसार संधिपत्र पर स्वाक्षर करदिया निदान इस संधिपत्र के अनुसार नैपाल की पच्छिम सीमा काली नदी ठहरी और सिकम पूरब ओर और यह भी नियत हुआ कि काटमांडो में एक सरकारी रजीडेन्ट रहा करे ॥

यद्यपि मरहठों का पराक्रम सरकार ने तोड़दिया पर उन के मन में शत्रुता बनी रही । पेशवा चाहता था कि सरकार को दबावे परंतु आपही दबगया दक्खिन में एक जाति पिंडारे कहलाते थे उन में हिंदू मुसुलमान सब लोग थे काम उन का यह था कि देश २ नगर २ गांव २ लूटते और कभी एक नगर में जाकर पड़ते

कधीं दूसरे में । तीस पैंतीस कोस का धावा एक दिन में करते लोग उन के हाथ से बहुत दुख पाते थे धन्य ईश्वर है कि अंगरेज़ लोगों ने उन का पीछा किया बहुतसी सेना भेजकर उन का नाश ऐसा करदिया कि अब उन की कथा मात्र रहगयी है। फिर इधर ब्रह्मा देशवाले अपना राज्य बढ़ाने के लिये अराकान मनीपूर और आसाम के विजय करके कंचार पर चढ़ आये वहां का राजा भाग कर अंगरेज़ों की शरण ली। सरकार ने उस की सहायता चाही ब्रह्मावालों ने कहला भेजा कि चटगांव ढाका आदि देशों के जो हमारे पुरखों का है छोड़ दो। यह बात सुनकर साहिब लोग तो चुप रहे पर उन्हों ने सरकारी कई एक चैाकीदारों के मारडाला। इस पर सन् १८२४ में मार्च महीने की पांचई तारीख़ के सरकार ने लड़ाई का इश्तिहार किया और एक भारी सेना भेजी उन में से कुछ लोगों ने आसाम देश लिया और दूसरों ने अराकान लिया और ११०० सिपाहियों ने जहाज़ों पर सवार होकर रंगून के घेर लिया वहां से ब्रह्मा की राजधानी आवा लेने के बिचार से सेना आगे बढ़ी जितनी लड़ाइयां होती गयी उन में सरकारही की जीत रही पर जल वायु अच्छी न थी और देश भी अनजान था इसलिये मनुष्य और रुपया दोनो की हानि हुई। चटगांव के ज़िले रामू के बीच कुछ सरकारी सिपाही मारे गये इस से राजा के बड़ा घमंड हुआ जाना कि फिरंगियों के हम ने जीत लिया पर जब सरकारी सेना उन्हें पराजित करती हुई एडाबू में जापहुंची तब सन् १८२६ ई० में राजा ने करोड़ रुपया देकर संधि कर ली। और आसाम अराकान आदि देश अंगरेज़ को देदिया॥

फिर इधर सन् १८२३ ई० में भरथपूर का राजा रणजीतसिंह निस्संतान मरगया बलदेवसिंह उस का भाई गद्दी पर बैठा उस का

भतीजा दुर्जनशाल गद्दी लेने को उद्यत हुआ बलदेवसिंह ने अकटरलोनी साहेब की सहायता चाही उन्हों ने उस के बेटे बलवंतसिंह को गद्दी पर बिठा दिया सन् १८२५ ई० में बलदेवसिंह मरा तब दुर्जनशाल बलवंतसिंह को कैद करके आप गद्दी पर बैठा इस में अकटरलोनी साहेब ने लड़ाई की तयारी की परंतु भगवान की इच्छा ऐसी हुई कि ये साहेब मेरट में जाकर मरगये दुर्जनशाल का उपद्रव सुनकर कंबरमियर साहेब २०००० मनुष्यों को साथ लेकर भरथपूर के सामने आपहुंचे और क़िला को तोड़ कर दुर्जनशाल को पकड़लिया और बलवंतसिंह को फिर से गद्दी पर बिठाया ॥

फिर सन् १८२८ ई० में लार्डबेंटिक गवर्नर जेनरल होकर आये इन के समय में कुछ टंटा बखेड़ा नहीं हुआ सती होना इन्हीं के समय से बंद हुआ सन् १८३५ ई० में इन के जाने पर लाट आकलेंड साहेब आये इसी लाट साहेब के समय में काबुल से और सरकार से बखेड़ा होगया पहिले सरकार ने वहां के अमीर दोस्त महम्मद को कैद करके कलकत्ते भेजदिया और लाट मेकनाटन साहेब बहुत सी सेना लेकर वहां रहे इस बीच में दोस्तमहम्मद के बेटे अकबरखां ने धोखा देकर लाट साहेब को मारा और कई एक साहेबों को कैद करलिया सब सरकारी पलटनें नष्ट होगयीं फिर अंगरेज़ी पलटन जाकरके वहां के लोगों को मार देश को अपने अधिकार में करलिया और कुछ दिन रहकर और जो साहेब कैद थे उन को छोड़ाकर और दोस्तमहम्मद को देकर सेना समेत साहेब लोग चलेआये इस लड़ाई में सोलह सत्रह करोड़ रुपया खरच पड़ा इधर रणजीतसिंह और लाट आकलेंड की भेट हुई इस के थोड़ेही दिन पीछे रणजीतसिंह बीमार हुआ और सन् १८३९ ई० में जून महीने की २७ तारीख़ को ५८ बरस की

अवस्था में मरगया सचमुच यह बड़ा राजा हुआ है इस ने अपने बाहुबल से सारा पंजाब अपने अधिकार में करलिया बड़ा उदार चित्त सूर और बुद्धिमान था कहते हैं कि कई एक रानियां उस के साथ सती होगयीं । उस के पीछे उस का बेटा खड़गसिंह गद्दी पर बैठा परंतु पुराने वज़ीर राजा ध्यानसिंह ने उस के बेटे नवनिहालसिंह को गद्दी पर बिठलाया और खड़गसिंह को नजरबंद करदिया वह बीमार होकर मरगया जब उस का बेटा नवनिहालसिंह उसे जलाकर फिरता था एक*फाटक उस पर टूट कर गिरा और वह भी मरगया तब खड़गसिंह की रानी चंदकुंअर गद्दी पर बैठी फिर लड़ाई झगड़ा होकर रणजीतसिंह का दूसरा बेटा शेरसिंह गद्दी पर बैठा पर उसे ध्यानसिंह की ओर से खटका रहा और एक दिन लहनासिंह और अजीतसिंह ने महाराज शेरसिंह को समझाया कि ध्यानसिंह आप को मारा चाहते हैं इस बात से शेरसिंह कुछ नहीं डरा । इन लोगों ने छल से ध्यानसिंह को मारने का आज्ञापत्र लिखवालिया वहां से आकर ध्यानसिंह से महाराज के मारने के लिये लिखवालिया । फिर थोड़ेही दिन के पीछे लहनासिंह और अजीतसिंह सिंधावाले दोनो भाई कुछ सवार लिये एक बाग में जहां महाराज थे आये और वाहगुरुजी की फतह बोले । महाराज शेरसिंह उन से बात चीत करने लगे इस में अजीतसिंह ने एक दो नली बंदूक जिस में गोलियां भरी थीं दिखलायीं जब महाराज ने देखने को मांगा तुरंतही अजीतसिंह ने महाराज की छाती पर लगाकर दाग दिया गोली के लगतेही महाराज अचेत होकर गिर पड़े केवल इतना मुंह से निकला । छल हुआ । तब उस हत्यारे ने महाराज का सिर काट कर जहां शेरसिंह का बेटा प्रतापसिंह था यात्रा की लहना सिंह ने तलवार उठा कर उस लड़के को मारना चाहा वह गोड़ पर गिर कर

गिड़गिड़ाने लगा पर उस कसाई ने उस का सिर काटही डाला। अजीतसिंह लाहोर की ओर चला और लहनासिंह भी उस के पीछे चला आता था बीच में ध्यानसिंह से भेट भयी अजीतसिंह ने उस से कहा कि कार्य सिद्ध भया। किले में चलकर बंदोवस्त कीजिये। जब किले में गये अजीतसिंह ने एक सिपाही से इशारा किया उस ने ध्यानसिंह के एक गोली मार दी तिस पीछे अजीत-सिंह ने धंधोरा पिटवादिया कि दलीपसिंह महाराज हुए और लहनासिंह वज़ीर हुए। यह समाचार सुनकर ध्यानसिंह के बेटे हीरासिंह ने सेना को अपनी ओर करलिया और सो जरब तोप लेकर किले को घेर लिया सारी रात तोप चलती रही प्रात समय हीरासिंह ने शपथ खायी कि जब तक अपने पिता के मारनेवालों को न मारूंगा तब तक अन्न जल मुझे गोमांस है। ध्यानसिंह की रानी सती होने के लिये चितापर बैठने के चाहती थीं कि इस में हीरासिंह ने पुकार के कहा कि सती होना तब चाहिये कि जब मेरे पिता के मारनेवालों का सिर काट कर मेरी मां के चरण के नीचे रक्खा जावे। इस बात के सुनकर सेना के लोगें के मन में क्रोध की आग ऐसी धधकी कि सिपाही लोग किला के भीतर जापहुंचे और चटपट अजीतसिंह का सिर काटकर ध्यानसिंह की रानी के चरण के पास ल्याकर रखदिया उस का सिर देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई और बारह तेरह स्त्रियों के साथ सती होगई। तब दलीपसिंह महाराज हुए हीरासिंह वज़ीर बने फिर कुछ दिन में हीरासिंह की चाल ऐसी बुरी हुई कि सेना के लोग उस से बिगड़े वह भागा पर रस्ते में मारा गया उस का सिर लाकरके लाहोर के दरवाजे पर लटका दिया फिर जवाहिरसिंह मंत्री हुआ। इस बीच में पिसैारासिंह ने अटक का किला लेलिया जवाहिरसिंह के लोगें ने छल करके उसे भी

मारडाला । यह समाचार सुनकर सारी सेना बहुत क्रुद्ध हुई सन् १८४५ ई० में सितम्बर महीने की २ तारीख को दिल्ली दरवाजे के निकट आयी और जवाहिरसिंह को मारडाला और राज्य में बड़ा गबड़ा मचा दलीपसिंह की मां रानी चंदाकुंअर राजा लालसिंह की संमति से राज काज करने लगी पर सेना किसी के कहने में न थी इस में सभों की संमति ठहरी कि अंगरेजों से लड़ना चाहिये । सेना के उत्पात से वहां के प्रधानों को इच्छा हुई कि अंगरेजो से लड़ाई होगी तो सेना मारी जायगी अथवा उधरही रहेगी इस में सन् १८४५ ई० की तेईसवीं नवंबर को राजा लालसिंह ने बाइस हजार सवार और बहुत सी तोपें लेकर लाहौर से कूंच किया कुछ दिन के पीछे सरदार तेजसिंह भी आकर इन से मिले जब लाठ साहेब को यह समाचार मिला तो धाई धावा पलटन और रिसाले इधर से भी कूच होने लगे। सिक्खों की सेना ८०००० के लग भग थी जब उन्हों ने सुना कि अंगरेज़ी सेना चली आती है तो राजालालसिंह १२००० सवार और बहुत सी तोपें लेकर मुद्की के पास आपहुंचे अंगरेजी सेना में संग्रामी बिगुल बजाया गया गवर्नर जेनरल और जंगी लाठ साहेब घोड़ों पर सवार होकर चले अठारहीं दिसंबर को लड़ाई का आरम्भ भया इस में बहुत से बड़े २ साहेब मारे गये पर खेत सरकार ही के हाथ रहा । फिर दिसंबर की इक्कीसवीं तारीख को अंगरेज़ी सेना ने सिक्खों के मुरचों पर जो फिरोजशाह के निकट था हल्ला किया रात दिन लड़ाई होती रही इस में भी कई एक बड़े २ साहेब मारे गये पर सिख लोग बहुत से कटे और जो बचे सो सतलुज की ओर भागे । सुबरांव के पास हरिकापट्टन पर पहुंच कर डेराडंडा डाला सतलुज में पुल बनालिया सरकारी सेना भी वहां पर जा पड़ी महीने भर तक कुछ लड़ाई न हुई

अंगरेज़ लोग अपनी तैयारी में रहे और सिख लोग समुझते थे कि अब मेल होगा । इस बीच में जरनैल हेरी स्मिथ साहेब लोधियाने के निकट आपहुंचे आलीवाल में सरदार रणजोरसिंह से सामना हुआ साहेब जीते सिख हारे । इसी समय राजा गुलाबसिंह भारी सेना के साथ जंबू से लाहौर में आये फिर सन् १८४६ ई० में फेब्रवरी की दसवीं तारीख को सरकारी हल्ला हुआ इस लड़ाई में ऐसा सिक्खों का बलदान हुआ कि सब घबड़ा कर भागे उन का कुल भी टूट गया कई हज़ार सिख डूब गये यह बड़ा घोर संग्राम हुआ तुरंतही सरकारी सेना सतलुज पार होगयी और लाहौर की ओर चली । इस बीच में राजा गुलाबसिंह लाट साहिब के पास आया और महाराज दलीपसिंह को भी लेआया। बीसवीं फेब्रवरी को सरकारी सेना के साथ लाट साहेब लाहौर में पहुंचे आठईं मार्च को दरबार हुआ दलीपसिंह सब सरदारों के संग आये और नवीन नियमपत्र लिखा गया उस पर दोनो ओर से स्वाक्षर हुआ । इस सन्धिनियम के अनुसार सतलुज के इधर के सब देश सरकार के अधिकार में आया और राजा गुलाबसिंह को कश्मीर का सारा राज्य मिला और राजा गुलाबसिंह स्वतंत्र हुआ और यह नियम ठहराया गया कि सरकारी सेना लाहौर में रहे और एक साहेब रज़ीडंट होकर रहे और रानी चंदाकुंअर को डेढ़ लाख रुपया नगद्द बरिस में मिला करे । इस से रानी नाना प्रकार का उत्पात मचाने में प्रवृत्त हुई यह बात सुनकर उसे सेखूपूर में नजरबन्द कर दिया सन् १८४७ ई० के अंत में मुलतान का नाज़िम मूलराज लाहोर में आया और अपने उहदे को छोड़ने को कहा यह बात अंगीकार हुई और अगन्यू साहेब और अंडरसन साहेब २५०० अढ़ाई हज़ार सिपाही और छ तोप के साथ इस अभिप्राय से भेजे गये कि कान्हसिंह को नाज़िम का काम सुपुर्द कर दें

सन् १८४८ ई० के अपरैल महीने की उन्नीसवीं तारीख को दोनों साहेब किले में पहुंचे प्रबन्ध सब होगया जब साहेब लोग किले में से निकलने लगे किसी सिपाही ने अगन्यू साहेब और अंडरसन साहेब को बरछी और तलवार से घायल किया साहेब लोग हटा कर डेरे में आये और उधर किले से अंगरेज़ी सेना पर गोला बरसने लगा और अंगरेज़ी सेना मूलराज से जाकर मिलगयी और कई मनुष्यों ने आकर उन घायल साहेबों को जीव से मारडाला । जब यह समाचार लाहौर में पहुंचा तो रानी चंदाकुंअर ने ऐसा बांधनू बांधा कि सब साहेब लोग एकही दिन मारे जांय । यह बात खुल गयी रानी को कैद करके बनारस में भेजदिया और बहुत से लोगों ने फांसी पाया और एडवर्ड साहेब और कई एक प्रधान लोग सेना और तोपखाना लेकर मुलतान की ओर चले । तब तक हज़ारे को ओर सरदार चतरसिंह बागी होगया और उस का बेटा लाहौरी सेना के साथ मूलराज से जाकर मिल-गया पर मूलराज ने इस का विश्वास न कर किले से निकलवा दिया शेरसिंह अपनी सेना लेकर अपने बाप के पास हज़ारे में चला गया और छोटे बड़े बहुत से राजा बिगड़ खड़े हुए पंजाब में सब ओर उत्पात फैला इस बीच में अमीर दोस्त महम्मद के भायी सुलतान महम्मद ने छल से कई एक साहबों को चतरसिंह के हाथ में देदिया बंबई और सिन्ध आदि देशों से सेना दौड़ा दौड़ जरनैल ह्वीलर साहेब की सहायता के लिए मुलतान में पहुंचीं जेनवरी महीने की २२ तारीख को लड़ाई का आरम्भ हुआ पर मूलराज आपही से जरनैल साहेब के शरण में आगया उसे कैद करके लाहौर में भेजदिया और शेरसिंह के सामना के लिये सरकारी सेना चली रामनगर और चेलियानवाले में बड़ा घोर संग्राम हुआ हज़ारों मनुष्य इधर उधर के मारे

गये । पिछली लड़ाई जो गुजरात में हुई उस में सिक्खों का बल टूटगया और वे लोग अटक की ओर भागे जरनैल गिलबर्ट साहेब उन को रगेदे चले गये । सिख लोग ऐसा तंग हुए कि चौदहवीं मार्च को सरदार चतरसिंह और उस का बेटा शेरसिंह सब उत्पातियों को संग लेकर जरनैल साहेब के शरणागत हुए और हथियार उन के चरन के सामने रखदिया निदान सब ओर सरकार की जय की धुनि सुन पड़ने लगी । जब लाठ साहेब को यह बात भली भांति से ज्ञात हुई कि जब तक सिख लोगों में कुछ भी अधिकार रहेगा तब तक उत्पात और बखेड़ा बन्द न होगा इसलिये आज्ञा हुई कि पंजाब का सारा देश सरकारी अमलदारी में मिला दिया जाय और दलीपसिंह को पांच लाख रुपया पिंसन मिला करे और सब दुष्टों को दंड उन के कर्तब का मिला । इसी बीच में लाठ हार्डिंग साहेब सन् १८४८ ई० में अठारहवीं जेनवरी को विलायत गये और उन की जगह में लाठ डेलहौसी साहेब नियुक्त हुए ॥

॥ लखनौ की कथा ॥

इस देश के बादशाह का प्रबंध बहुत दिनों से अच्छा न था नाना प्रकार का उत्पात और उपद्रव होता था प्रजा को पीड़ा पहुचती थी अंधेर नगरी चौपट राज यहीं था जब सरकार ने भली भांति जाना कि देश का प्रबंध बादशाह से कभी न होसकेगा इसलिये सन् १८५६ ई० में फेरवरी की सातवीं तारीख को जरनैल ऊटरम साहेब रजीडंट को आज्ञा हुई कि अवध का सूबा अंगरेज़ी अमलदारी में मिला दिया जाय और बादशाह को पंद्रह लाख रुपया साल पिंसन मिला करे बादशाह कलकत्ते में जाकर रहे और उन की मां और भाई बिलायत में नालिश करने के लिये गये पर मृत्यु भूखी थी इन को ग्रास कर गयी ॥

॥ सिपाहियों के संग्राम की कथा ॥

ईश्वर की गति कुछ जानी नहीं जाती कैसाही अच्छे से अच्छा राज्यनियम हो पर उस में भी एक न एक प्रकार का बखेड़ा और उपद्रव खड़ाही होजाता है मनुष्य के मन और उस की क्रिया का भी कुछ ठिकाना नहीं है अज्ञानता दुःख का मूल कारण है नासमझी से नाना प्रकार का क्लेश मनुष्य भोगता है सन् १८५७ ई० के हिंदुस्तानी सिपाही के बलवा का समाचार कुछ इस ग्रन्थ में वर्णन करते हैं । नासमझी और अविश्वास जो चाहे सो करे । उन दिनों में बंदूक के टोंटे बनाये जाने की आज्ञा हुई थी उन के बनाने में चिकनयी का प्रयोजन पड़ा करता है विलायत में उन्हें चर्बी से बनाते हैं उस देश के लोग चर्बी को अशुद्ध नहीं समझते इसलिये वहां चर्बी से टोंटा बनाते हैं और इस देश में घी तेल मक्खन अथवा भेड़ बकरी की चर्बी लगाकर बनाते हैं एक दिन का संयोग यह है कि दमदमे में किसी सिपाही से एक खलासी ने पानी का लोटा मांगा उस ने कहा कि तुझ म्लेच्छ से अपना लोटा नहीं छुआ सक्ता यह सुनकर खलासी ने उत्तर दिया कि हम से तो तुम लोटा नहीं छुआते पर सूअर और गाय की चर्बी लगे हुए टोंटे दांत से कैसे काटोगे । यह बात उस पलटन में फैलगयी कि चर्बीदार टोंटे बनते हैं और सब सिपाही घबड़ाये कि अब हमारी जाति जायगी । यह समाचार जब साहेबों के कान में पड़ा तो उन्हों ने आकरके सिपाहियों को समझाया कि वे टोंटे गोरों के लिये बनते हैं और तुम्हारे टोंटों में तेल और मोम लगाया जायगा यह बात झपट्ट सिपाहियों के मन में न बैठी । और बरहामपूर में उन्नीसवीं पलटन को उन लोगों ने जाकर बिगाड़ा उन्नीसवीं फेब्रुरी की रात को उस पलटन के सिपाही बिगड़कर परेट पर जाकर इकट्ठे हुए यह समाचार सुनतेही साहेब लोग दो तोप और

कुछ सवार परेट पर लेजाकर सिपाहियों से पूछने लगे उन्हों ने खोल के कहदिया कि जो चर्बी लगा टोंटा हम लोग दांत से न काटेंगे तो आप हम लोगों को तोप पर उड़ा देंगे पर करनैल साहेब ने समझा बुझाकर उन से हथियार रखवा लिया और टोंटा भी मंगवाकर दिखला दिया किसी ने सच जाना किसी ने झूठही माना । परेट पर बिना सेनापति की आज्ञा के बटुरने के अपराध से वह सारी पलटन छुड़ा दीगयी । यह समाचार सुनकर सब हिंदुस्तानी पलटन के सिपाहियों के मन में संदेह हुआ कि सरकार हम लोगों का धर्म नष्ट किया चाहती है सेना के मन बिगड़ने का समाचार सब ओर से गवर्नर जेनरल के पास पहुंचने लगा । बारिकपूर में चौंतीसवीं पलटन के एक सिपाही ने अपने अफ़सर पर हथियार चला दिया और जो सिपाही वहां थे उस को पकड़ा नहीं इस अपराध पर वह पलटन छुड़ायी गयी और वह सिपाही फांसी दिया गया । इस समाचार के सुनने से पलटनों में सिपाहियों का मन और भी बिगड़ता चला ॥

छठवीं मयी को मेरट में तीसरे रिसाला के ८५ सवार ने कवाइद के समय टोंटा काटने को स्वीकार न किया उन सभों का भारी दंड हुआ यह बात उन के संगी साथी सह न सके बलवा कर दिया छाउनी में आग लगा दी और मेम लोगों को साहेबों को और उन के छोटे २ बच्चों को जो सामने पड़े मारडाला और ऐसी सासत से उन को मारा कि उस का वर्णन करते रोयें खड़े हो आते हैं और ऐसी निर्दयता सुनकर अचरज होता है । आगे उन्हों ने जेहलखाने में जाकर उन सवारों को छोड़ा दिया और नाना प्रकार का उपद्रव करने लगे फिर दिल्ली की ओर सब सेना चली दूसरे दिन वहां भी बहुत से साहेब बीबी और बच्चों को मारडाला वहां की पलटनों ने भी मेरटवालों का संग दिया वहां

के जेहलखाने में से कैदियों को छोड़ाया बहुत से वहां के लोग बरन सब सिपाहियों की ओर होगये बहादुरशाह जो पिंसनदार थे बादशाह बने ॥

फिर तो जहां कहीं पलटनें यों बिगड़ना आरम्भ किया और उन का यही काम था कि बंगलों को फूंक देते साहेबों और उन के बालबच्चों को मारते और जेहलखानों से कैदियों की बेड़ी काटकर उन्हें छोड़ देते और आप दिल्ली को सिधारते यह सब समाचार सुन करके बनारस में भी सैंतीसवीं पलटन के लोगों का मन बिगड़ा पर करनैल नील साहेब ने उन के हथियार रखवाने के लिये परेट पर तोपें लगवाईं जब तिलंगों ने यह दशा देखी तो गोरों पर हल्ला किया गोरों ने तोपों में बत्तियां दी इधर उधर बहुत से लोग मरे और सिपाही जौनपूर की ओर भागे बनारस में नगर के बदमाश केवल गबिन साहेब के रहने से न बिगड़े । बनारस का समाचार सुनकर इलाहाबाद में भी बलवा होगया और बहुत से लोग मारे गये फिर उधर कान्हपूर में भी पलटनैं बिगड़ीं और बाजीराव पेशवा का पुष्य पुत्र नान्हाराव उन का अध्यक्ष बना उस समय में जरनैल ह्वीलर साहेब वहां थे उन से और सिपाहियों से बीस बाईस दिन तक लड़ाई होती रही अंत को गोली बारूद और रसद सब चुक गयी जरनैल साहेब ने लाचार होकर नान्हाराव से प्रार्थना की कि हम लोगों पर दया करो उन्हों ने पहिले तो बचन दिया पर पीछे से धोखा देकर सब को ऐसी दुर्दशा से मारा कि कुछ वर्णन नहीं किया जाता और कुछ अंगरेज लोग फतहगढ़ से एक नाव पर भागे आते थे कान्हपूर में जब पहुंचे तो वे लोग भी बड़े दुख से नान्हा के हाथ से मारे गये । अब पलटनों का देखा देखी और भी भले बुरे लोग इधर उधर बिगड़ने लगे । सूबे अवध की भी सब पलटनें बिगड़ गयीं वहां भी दिल्ली की नाईं वाजिद-

अलीशाह का बेटा बिरजीसक़दर गद्दी पर बैठा वह तो लड़का था पर उस की मां इस उत्पात की जड़ थी । अब सब जगहों से अर्थात् दानापूर गोरखपूर आज़मगढ़ जौनपुर इलाहाबाद आदि स्थानों से पलटनें लखनौ में इकट्ठी हुईं और एक बड़ा भारी मूरचा बंधा उधर झांसी आगरा सागर ग्वालियर आदि की बिगड़ी पलटनें दिल्ली में इकट्ठी हुईं अब ये दो स्थान अर्थात् दिल्ली और लखनौ रणभूमि बने प्रायः हिंदुस्तानी राजा और प्रधान लोग अंगरेज़ लोगों की ओर हुए और उधर पंजाब में श्री जानलारन्स साहेब की बुद्धिमानी और उपाय से हिंदुस्तानी पलटनें बिगड़ने नहीं पाईं बरन वहां के छोटे बड़े सिख लोग सरकार के सहायक होगये । इस बीच में जरनैल निकलसन साहेब अंगरेज़ी और सिक्खों की कई एक पलटन लेकर दिल्ली पर चढ़े परंतु फ़ौज इतनी न थी कि एका एकी बलवाइयों का सामना करें इसलिये वहां पर ठहर गये । इस बीच में सिपाहियों के उत्पात का समाचार विलायत में पहुंचा वहां से चटपट तीस पलटनें गोरों की चलीं और इधर लाठ साहेब की आज्ञा से कई एक मंदराजी पलटनें और नैपाल से गोरखा की पलटनें आईं और उधर से जरनैल हेवलाक़ साहेब पहुंचे बनारस होते हुए इलाहाबाद में गये वहां पर बहुत से बलवाइयों को मारकाट कर नगर में पूर्ववत राज्यानुशासन स्थापित कर दिया । वहां से बढ़कर फ़तहपूर में गये वहां पर भी बिगड़ैल सिपाहियों को पराजित करके राज्य स्थित किया फिर तब कान्ह-पूर में गये वहां पर भी दुष्टों को मार भगाया । और राज्य यथावस्थित किया अब बड़ा संग्राम लखनौ में के राजद्रोहियों से आनपड़ा क्योंकि वहां पर बलवाई सिपाही और तालुक़ेदार बहुत इकट्ठे थे तब तक इस बीच में विलायत से घाघरावाली पलटन गोरों का रिसाला और बहुत सी पैदल पलटनें पहुंच गईं और उधर से

जंगबहादुर आप कई एक पलटनों के साथ सरकार की सहायता के लिये आपहुंचे और जरनैल औटराम साहेब भी झट पट कई एक पलटनों के साथ हेवलाक साहेब की सहायता के लिये पहुंच गये थे उन्नीसई सितंबर को नाव का पुल बनाकर गंगा के पार हेवलाक साहेब उतरे उस समय हेवलाक साहेब के पास पैदल सवार केवल ३००० थे और बलवाई लोग ४०००० थे सितंबर महीने की इक्कीसवीं तारीख को मंगरवार गांव में लड़ाई हुई बलवाई हारे साहेब लोग जीते और साहेब लोग लखनै तक बे रोक टोक चले गये २५ तारीख को बेलीगारद के साहेब मेम और बाबा लोगों को छुड़ा लया फिर और कई एक लड़ाइयां हुईं उन में बहुत से गोरे साहेब और जरनैल नील साहेब मारे गये तब तक नये जंगी लाट केम्पबिल साहेब पहुंच गये विलायत से जो गोरों की पलटनें आई थीं उन को लेकर और २०० तोप के साथ इधर से लाट साहेब चढ़े और उधर से जंग बहादुर सात आठ हज़ार गोरखे लेकर लखनै में पहुंच गये छठयीं से संग्राम का आरम्भ हुआ ग्यारहवीं को लोहे का पुल सरकार के हाथ में आया चौदहवीं से लेकर सोलहवीं तक तीन दिन रात महा घोर संग्राम रहा अंत को सब बलवाई पराजित हुए और नान्हा बेगम और बिरजिस कदर और बचे खोचे बलवाई लोग भागकर नैपाल की तराई में चले गये उधर जरनैल निकिलसन साहेब के पास और बहुत सी फौज तोपखाना पहुंच गया उन्हों ने १४ सितंबर को नगर पर हल्ला किया और अपना मुर्चा नगर में जमाया पंद्रहवीं से अठारहवीं तक दिन रात घोर संग्राम रहा हजारों लोथ गल्लियों में पड़ी थीं उन्नीसवीं को सरकारी सेना किले में जा पहुंची बलवाई लोग कई हजार मारे गये और जो बचे सो भाग निकले। डिल्ली में सरकार का राज हुआ इस लड़ाई में सरकारी ४०००

मनुष्य घायल हुए और मारे गये बादशाह अपनी बेगम के साथ कैद होगये। इस लड़ाई में जरनैल निकिलसन साहेब भी घायल होके मरे। कई दिन तक लूट मार मची रही फिर जैसा राज पहिले था वैसाही होगया दिल्ली और लखनो के टूटने से और जहां कहीं उत्पात और उपद्रव होरहा था सब बंद होगया इस बलवे के होने से यहां के सब लोगों ने अंगरेजी और हिंदुस्तानी राज्य के अंतर को भली भांति से जाना कि अंगरेजी राज्य में कैसा सुख है और हिंदुस्तानी राज में कैसा दुख है आगे विलायत में पारलियामेंट में यह संमति ठहरी कि कम्पनी से राज्य लेलिया जाय और श्री महाराणी श्री मती विकटोरिया का राज्य हिंदुस्तान में हो ॥

॥ सूर्य्य बुध शुक्र आदि ग्रहों का और चंद्रमा का वर्णन ॥

धन्य परमेश्वर है कि क्या २ अद्भुत काम किये हैं कि यह सूर्य्य जिससे हमलोगों का सारा काम चलता है तेज का पिंड है इस पृथ्वी से चार करोड़ पचत्तर लाख कोस दूर है सूर्य्य का व्यास साढ़े चार लाख कोस के निकट है और घेरा इस का १३ लाख कोस के लगभग है और यह सूर्य्य ठहरा हुआ है चलता नहीं पृथ्वी के चलने के कारण चलता हुआ दिखलाईदेता है जैसे कि नदी में नावपर जानेवाले लोगों को सामने के पदार्थ चलते दिखलाईदेते हैं यद्यपि सूर्य्य का पिंड लाखों कोस का लंबा चौड़ा है परंतु दूर होने से छोटा देख पड़ता है ॥

॥ बुध ग्रह का वर्णन ॥

यह ग्रह १८५०००००० लाख कोस दूर है यह ग्रह एक घंटे में ५२५०० कोस चलता है जैसे इस पृथ्वी पर सूर्य्य के प्रकाश से घाम होता है तैसे वहां भी सूर्य्य के तेज से प्रकाश होता है वहां

पर भी नानाप्रकार के जीव जंतु बसे हैं इस पृथ्वी की अपेक्षा वहां के लोगों को सूर्य्य सातगुना बड़ा देख पड़ता है ॥

॥ शुक्र ग्रह का वर्णन ॥

यह ग्रह सूर्य्य मंडल में दूसरा गिना जाता है ३४०००००० कोस सूर्य्य से दूर है इस का व्यास ३८४५ कोस का है ये दोनो ग्रह अर्थात् बुध और शुक्र कभी सांझ और कभी सबेरे दिखाई देते हैं और तारों की अपेक्षा शुक्र में प्रकाश अधिक है ॥

॥ पृथ्वी का वर्णन

यह भी बुध शुक्र के समान एक ग्रह है सूर्य्य से ४७५०००००० लाख कोस दूर है और तीनसौ पैंसठ दिन छ घंटे में सूर्य्य के आसपास घूमआती है इसी को बरस कहते हैं पृथ्वी का व्यास ४००० कोस के लगभग है और घेरा १२००० कोस के लगभग है इस पृथ्वी के चलने का वेग तोप के गोले के चाल से एकसौबीस गुना अधिक है बड़ा अचरज यह है कि हम सब लोग समुद्र वायु आदि जो कुछ इस से संबन्ध रखता है उड़ा चला जाता है पृथ्वी नारंगी के समान गोल है और दो चाल रखती है एक अपने कील पर घूमती है दूसरी आगे बढ़ती हुई सूर्य्य की परिक्रमा देती है इन सब बातों को देखकर और सोचकर परमेश्वर की बड़ी अपरंपार लीला झलकती है ॥

॥ चंद्रमा का वर्णन ॥

चंद्रमा इस पृथ्वी के संग चला जाता है और इस में भी प्रकाश सूर्य्य का है देखने में छोटा है तौभी उस का व्यास ११४० कोस का है धरती से १२०००० कोस दूर है और पृथ्वी की परिक्रमा उंतीसदिन बारह घंटे में करता है एक घंटे में ११४५ कोस चलता है चंद्रमा में जो श्यामता देख पड़ती है सो पहाड़ है वह

पहाड़ हिमालय आदि पहाड़ों से बहुत बड़ा है और उस में यह एक बड़ा अचरज है कि उस के आर पार एक छेद है ॥

॥ मंगल का वर्णन ॥

मंगल ग्रह भी सूर्य्य की परिक्रमा करता है और रंग उस का लाल है ६२५००००० कोस दूर है यह ग्रह एक घंटे में २७५०० कोस चलता है मंगल का व्यास २१०० कोस का है जैसे हमारी पृथ्वी पर एक चंद्रमा देखपड़ता है वैसेही मंगल पर दो चंद्रमा देख पड़ते हैं ॥

॥ बृहस्पति का वर्णन ॥

बृहस्पति का व्यास ४५ हजार कोस का है यह ग्रह पृथ्वी से चौदह सौ सत्तर गुना बड़ा है सूर्य्य से २५ करोड़ कोस दूर है और इस ग्रह पर ४ चंद्रमा दिखलाई देते हैं यह ग्रह एक घंटे में १४५०० कोस चलता है ॥

॥ शनैश्चर का वर्णन ॥

इस ग्रह का व्यास १४५०० कोस का है वह पृथ्वी से ६ सौ गुना बड़ा है सूर्य्य से ४५ करोड़ कोस दूर है जो सूर्य्य पर से तोप का गोला छोड़ें तो २१५ बरस में सनीचर में पहुंचेगा सूर्य्य के आसपास ३० बरस में घूमजाता है उस में ७ चंद्रमा देखपड़ते हैं उस के चारो ओर एक बहुत बड़ा प्रकाश मंडल है । और भी कई एक ग्रह हैं उन का वर्णन करने से ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा इसलिये नहीं करते ॥

॥ पूछल तारों का वर्णन ॥

पूछल तारे भी एक प्रकार के ग्रह हैं ये सूर्य्य के आस पास आजाया करते हैं परंतु नियत काल में नहीं आते उन की जो पूंछ दिखलाई देती है सो एक प्रकार की वायु है कधीं ऐसा भी होता है कि कोई २ ग्रह उस के पूंछ में से होकर निकल जाता है धन्य ईश्वर है और उस की माया अपरंपार है इन ग्रहों की चाल में तनिक भी चल बिचल होजाय तो पृथ्वी आदि की सत्यानासी होजाय यह विद्या बहुत बड़ी है संक्षेप से हमने इसग्रन्थ में कुछ वर्णन किया है ॥

॥ जलावतारक यंत्र का वर्णन ॥

यह यंत्र घंटे के आकार का होता है और लाभ इस से यह है कि नदी समुद्र गहिरे स्थानों में कदाचित् कोई बहुमूल्यक पदार्थ गिरपड़े तो इसी यंत्र में बैठकर पानी के नीचे जाकर और उस पदार्थ को खोज कर निकाल लेते हैं अथवा जब पुल किसी प्रकार का बनाना होता है तो इसी में बैठ कर तीन पहर चार पहर तक बनाते हैं सामान्य लोगों को इस बात के सुनने से बड़ा अचरज होगा कि तीन चार पहर तक जल में कैसे कोई बैठ सकेगा और कोसों तक गहिरे जल में कैसे जा सकेगा इस-लिये इस के बनाने और उस में बैठने और ठहरने की रीति लिखते हैं । यह नियम प्रकृति का है कि एक स्थान में और एकी समय में दो पदार्थ नहीं रह सक्के देखो जिस जगह में और जिस समय में जो वस्तु रक्खीरहती है तो उसी जगह में और उसी समय में बिना उस वस्तु के हटाये दूसरी वस्तु नहीं रक्खी जा सक्ती यह बात सब कोई जानते और देखते हैं कि घड़े अथवा हंडे को मुंह के बल पानी में डुबोओ तो कभी नहीं डूबेगा तो इस का कारण यही है कि उस के भीतर वायु भरी रहती इस-लिये ऊपर के नियम के अनुसार पानी भर नहीं जा सक्ता और कोई ऐसा कहे कि जब घड़ा सीधा रहता है तब भी तो वायु भरी है उस में पानी कैसे जायगा पर इतना सोचना चाहिये कि जब घड़ा पानी में मुंह के बल उलटाकर रक्खा जाता तो वायु के निकलने का अवकाश नहीं मिलता और जब सीधा करके रखते हैं तो वायु किसी प्रकार से निकल जाती है और पानी उस में भर जाता है । अब यह समझना चाहिये कि एक बड़ा सा पात्र घंटे के आकार का बनाया जाय कि उस में तीन चार मनुष्य बैठ सकें और उसे पानी के भीतर डालें तो घड़े के समान पानी के

भीतर जायगा परंतु पानी उस के भीतर वायु भरी रहने के कारण भर न जायगा इतना है कि वायु अपने स्वाभाविक भाव से कुछ दब जायगी और कुछ दूर तक पानी चढ़ जायगा अब ज्यों २ घंटा जल के नीचे जायगा त्यों २ घंटे के भीतर की वायु पर पानी का दबाव बढ़ने से वायु दबती जायगी और पानी चढ़ता जायगा यहां तक कि जो बहुत नीचे जा रहे तो पानी घंटे में बहुत ऊपर तक चढ़ आवेगा इसलिये उस में एक नली इस प्रकार की लगाते हैं कि ऊपर से किसी यंत्र के द्वारा घंटे के भीतर उस नली में से वायु पहुंचे और पानी किसी विशेष स्थान से ऊपर न चढ़ सके और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि यह यंत्र बहुत भारी धातु का बने और वह यंत्र बहुत मोटा भी बने कि पानी के दबाव से टूट न जाय और उस में ऐसा भी उपाय रहता है कि उस के भीतर की वायु को जब चाहते हैं तब बदल देते हैं देखो विद्या का कैसा प्रताप है कि साहेब लोग ऐसे २ यंत्र बनाकर कैसे २ काम करते हैं मानभद्र के पुल और जमुना के पुल के बनाने में यह यंत्र मुख्य उपकारक था इस यंत्र को पहिले पहिल डाकटर हेली साहेब ने बनाया एक बेर सन् १६८७ ई० में आटलांटिक महासागर में एक जहाज टूट गया था उस के संग ३० लाख रुपया भी डूब गया फिप्स साहेब ने इसी यंत्र में बैठ कर समुद्र में गये और २० लाख रुपया निकाल लाये इस यंत्र का चित्र देखने से और भी भली भांति इस का विषय समझा जायगा ।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र का वर्णन ।

यह यंत्र छोटी वस्तु के देखने के लिये बहुत ही उत्तम है इस से संसार के बड़े २ काम निकलते हैं भगवान की अद्भुत लीला झलकती है देखो एक बूंद पानी में कई हजार छोटे २ कीड़े

होते हैं यह बात किसी के मन में कधीं न आवेगी ऊपर के चित्र को देखो वे सब एक बूंद पानी में के कीड़े हैं यह सुनकर और अचरज होगा कि मनुष्य जब एक कटोरा पानी पीता है तब कई लाख कीड़े उस के संग पिये जाते हैं और इन कीड़ों को कोई किसी प्रकार अलग किया चाहे तो अलग नहीं हो सकते और उन की छोटाई का अंत नहीं है हज़ारों कीड़ों को इकट्ठा करो तौभी बालू के एक किनके के समान न होंगे प्रत्येक का आकार अलग २ है कोई लंबा कोई पतला कोई सर्प के समान और कोई गोल कोई चिपटे कोई तिकोने और कोई २ नली के समान होते हैं यह बात और भी बहुत अचरज की है कि जब पानी सूखजाता तब कीड़े बहुत दुबले होजाते स्वरूप उन का बदल जाता और मरे हुए जान पड़ते हैं पर जब पानी पाते हैं तब फिर चलने फिरने लगते हैं चाहो एक बरस बीत जाय तौभी जल पाने से फिर जी उठते हैं भगवान की महिमा अपरंपार है उन के लिये एक बूंद ही ब्रह्मांड है इस से यह जान पड़ता है कि भगवान ने सब जगह एक न एक प्रकार का जीव बनाया। यह भी ज्ञात हुआ है कि उन के अंडे हवा में चारो ओर उड़ा करते हैं जल के संयोग होतेही कीड़े होजाते हैं जैसे भगवान बड़ी से से बड़ी वस्तु बनाते गये हैं उसी भांति छोटी से छोटी वस्तु उन्हों ने बनाई है इस सूक्ष्मदर्शक यंत्र के द्वारा यह भी बात जानी गयी है कि बालू के किनके में छेद होते हैं और उन में भी कीड़े रहते हैं अब अचरज यह है कि इन कीड़ों को हाथ गोड़ आंख मुख तो नहीं होते परन्तु उन की शरीर पर सूई के समान लंबे २ नोकीले रोएं भी रहते हैं और जो कोई पदार्थ आंख से नहीं देख पड़ते उन को इस यंत्र के द्वारा देखिये तो अपरंपार लीला ईश्वर की झलकती है इस विद्या का विस्तार बहुत है कहां तक लिखें ॥

॥ बेलून अर्थात् गुब्बारे का वर्णन ॥

गुब्बारा भी एक प्रकार का रथ है इस के चलाने में घोड़े बैल आदि का प्रयोजन नहीं पड़ता और पृथ्वी से ऊपर आकाश में जाता है दो अढ़ाई कोस से अधिक ऊपर नहीं जासक्ता और जिधर चाहें उधर लेजांय यह भी नहीं होसक्ता इस के चलने का मुख्य कारण एक प्रकार की वायु है पहिले पहिल सन् १७८३ में फरासीस देश के पारिस नगर के मांटगालफिअर साहेब ने इस वायुरथ को प्रकट किया इस के बनाने की रीति और उड़ने का कारण यह है कपड़े अथवा पाट का एक बड़ा सा झोला बनाते हैं और नीचे उस के बैठने की बहुत अच्छी जगह बनालेते हैं छोटा बड़ा सब प्रकार का बन सक्ता है प्रायः पांच चार आदमी के बैठने की जगह रखते हैं हलकी वायु गरम करके उस में भरते हैं और उस थैले के नीचे आग भी रक्खी रहती है चारो ओर की वायु से उस के भीतर की वायु जब गर्मी के कारण बहुत हलकी होजाती है तब वह ऊपर उठने लगता है इस के ऊपर चढ़ करके साहेब लोग कई बेर डेढ़ डेढ़ दो दो कोस ऊपर गये हैं
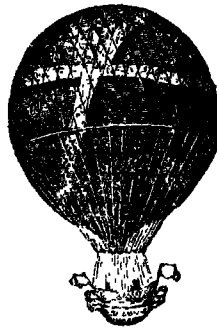
कलकत्ते में इस का तमाशा प्रायः होता है और विलायत में तो इस पर चढ़ कर दो एक बार समुद्र पार गये हैं पर इस में जीव का जोखिम भी रहता है कभी समुद्र में गिरपड़ता कभी जंगल में गिरता यह सवारी सब से बढ़ के है पर पछतावा इतना है कि जिधर चाहे उधर नहीं लेजासक्ते । अंगरेज लोगों की बुद्धि की विलक्षणता देखकरके हम को पूरा विश्वास है कि कुछ दिन में आकाश में जिधर चाहेंगे उधर इस रथ को लेजांयगे जो रामा-

यथा आदि पोथियों में विमान की कहानियां सुनते हैं सो अब आंखो के सामने देखते हैं ॥

॥ शीतला के विषय में ॥

शीतला अर्थात् माता जिस को लोग चेचक भी कहते हैं एक रोग है संस्कृत में इस रोग का नाम विस्फोटक है अर्थात् बहुत से फोड़े । निकल आने पर इस का कुछ औषध नहीं है यह रोग छ महीने के लड़के से लेकरके अठारह बीस बरस तक के वयस वालों को प्राय: होता है और इस से अधिक वयवालों को भी होता है इस रोग के रोकने की उपाय अर्थात् कि जिस में शीतला निकलवही न करे यह बहुत अच्छी है कि बच्चों को जब बरस डेढ़ बरस के रहते हैं तभी छपवादे और फिर दो बरस के उपरांत छपवावे इस भांति ३,४ बार छपवाने से फिर कभी नहीं निकलती और छापने की अंगरेजी रीति बहुत अच्छी है कि बांह पर कहीं सूई से अथवा छूड़ी के नोक से उभाड़ दे जब लोहुआय आवे तब माता की खुट्टी फरचे पानी में रगड़कर जिस जगह में लोहुआय आया है लगा दो । और यह भी जानना चाहिये कि दोनो बांह में दो दो तीन २ जगह छूड़ी की नोक से उभाड़ कर खुट्टी रगड़कर लगादेवे इस बात के करने से ऐसा होता है कि तीन चार दिन के पीछे उसी जगह में पहिले लाल होजाता है फिर तनिक २ बड़ी फुंसी निकल आती है और सातवें आठवें दिन कुछ ज्वर होआता है और उन फुनसियों में जल भर आता है और मुर्झा कर पानी बह जाता है और वह फुंसी सूख जाती है यह जल जो बह जाता है सो माता के निकलने का कारण है जिस को माता छापी नहीं रहती तो उस के पेट में वह विकार रहता गर्मी पाकरके फूट निकलता है यह ऐसा रोग है कि इस से हाजारों बच्चे तीस चालिस कोस के भीतर मरजाते हैं जब से सरकार ने,

यह प्रबंध करदिया है कि छोटे २ लड़के अवश्य छापे जांय और छापने के लिये छपहारे नियुक्त करदिये हैं तब से शीतला कम निकलती है और मरते भी थोड़े हैं पहिले तो छापे हुए लड़के को माता निकलती नहीं जो दैवसंयोग से निकले तो उतना जोर नहीं होता जितना कि बेछापे हुए लड़कों को होता है । इस बात को हम ने भली भांति से देखा है और अपने लड़कों को और अपने मित्रों के लड़कों को छपवा दिया और देखा है कि बहुतों को माता निकलीही नहीं और किसी को निकली भी तो उतना जोर न था कि अचेत होजाय अथवा बक्कु झक्कु । हिंदुस्तानी छापा भी अच्छा है पर उस में लड़कों को पीड़ा पहुंचती है ॥

आगे इस देश में जो इस रोग को लोगों ने देवी ठहरा ली है सो केवल दुःख के समय की पुकारमात्र है आगे होता वही है जो श्री भगवान चाहते हैं ॥

इस रोग में यह बात अवश्य करनी चाहिये कि जब घर म किसी को माता निकले तो और लड़को कों दूसरी जगह में रखना चाहिये क्योंकि इस रोग में छूत होती है जहां इस का पानी अथवा वायु दूसरे लड़के को लगी तहां दूसरे को भी निकल आती है जब घर में एक लड़के को निकलेगी तो निस्संदेह दूसरे तीसरे को भी निकलेगी ॥

॥ वैद्य और औषधियों के विषय में ॥

प्रायः हिंदू वैद्यलोग जो कि मिसरानी दवा करते हैं परंपरा की चालपर औषध भी देते हैं जैसे की किसी को पित्तज्वर आता है और किसी को वातज्वर आता है और किसी को संनिपात-ज्वर आता है तब सब को एकही प्रकार का औषध देते हैं जिस को भाग्य बल से औषध रोग के अनकूल पड़ा तो अच्छा हुआ

नहीं तो दुख भोगता अथवा मर जाता कारण इस का यह है कि इन दिनों के हिंदू वैद्यलोग वैद्यक के सब ग्रन्थों को भली भांति नहीं पढ़ते और यह भी है कि कोई अच्छा पढ़ानेवाला नहीं है ग्रंथों में औषधियां बहुत अच्छी २ लिखी हैं रस बनाने का और धातु मारने का प्रकार भी अच्छा है। और हकीम लोग यूनानी दवा अर्थात् फारसी अरबी के ग्रंथों के अनुसार करते हैं वैद्यों की अपेक्षा इन लोगों का विचार और औषध बहुत अच्छा होता है पर औषध का गुण झटपट नहीं होता क्रम से होता है एक गुण यह है कि औषध प्राय: मीठा होता है कड़ुआ नहीं होता ॥

जानना चाहिये कि जिस प्रकार से अंगरेज लोगों की विलक्षणता सब विषयों में है उसी प्रकार से डाक्टरी विद्या में भी है ऐसे १ रोगियों को चंगा करते हैं कि दूसरे धन्वन्तरि और पतंजलि हैं कई जगह हमारे देखने में आया है कि ऐसे रोगी को डाक्टरों ने चंगा किया है कि मानो मृतक को जिलादिया है फोड़े के चीरने फाड़ने में और शरीर के किसी प्रकार के घाव लगने में ऐसा मलहम पट्टी और काट छांट करते हैं कि चटपट लोग चंगे होजाते हैं और बहुत से रोगों के ऐसे औषध हैं कि जिन के खातेही गुण होता है जैसे सीतरस अर्थात् हैजे में एक गोली देते हैं और उस का गुण बहुत होता है यहां तक कि जो २० मनुष्य बीमार पड़ें तो सत्तरह अठारह अच्छे होजांयगे और दो एक कदाचित् मरेंगे इस गोली में ये औषध रहते हैं कपूर अफीम हींग मिरिच इन सभों में कपूर को इकट्ठा रखते और शेष वस्तुओं को समान जैसे कि बारहमासे अफीम और १२ मासे हींग और १२ मासे मिरिच लेंगे तो कपूर १८ मासे लेंगे इन सब को एक खल में कूट के मटर बराबर गोली बनाते हैं और उस गोली को दारचीनी की बुकनी में लपेटते हैं इस गोली को हम भी बनवाकर बांटते हैं ॥

॥ पहेली अर्थात् बुझौअल कहानी ॥

पानी में निस दिन रहै जा को हाड़ न मांस ।
काम करै तरवार कौ फिर पानों में बास ॥

॥ कुम्हार का डोरा ॥

स्याम बरन पीताम्बर कांधे मुरलीधर नहि होय ।
बिनु मुरली बहु नाद करत है बिरला बूझै कोय ॥

॥ भंवरा ॥

स्याम बरन पर हरि नहीं जटा धरे नहिं ईस ।
ना जानूं पिय कौन है पंक लगाये सीस ॥

॥ कसेरू ॥

जल में रहै झूंठ नहि भाखै बसै सो नगर मझार ।
मच्छ कच्छ दादुर नहीं पंडित करौ बिचार ॥

॥ घड़ी ॥

इक तरवर अरु आधो नाम । अर्थ करौ के छाड़ो गाम ॥

॥ नीम ॥

बांबी वाकी जल भरी ऊपर जारी आग ।
जबै बजाई बांसुरी निकस्यौ कारौ नाग ॥

॥ हुक्का ॥

सीस केस बिनु चोटिया तीन । अवगुन लेत पराये छीन ॥
जोइ जाय उन के दरबार । ताके मूड़ न राखै बार ॥

॥ बिछौना ॥

रात पड़े तब पड़ने लागी । दिन को मुई रैन को जागी ॥
उस का मोती नाम बताया । बूझो तुम मैं बूझ सुनाया ॥

॥ ओस ॥

कर बोलै करही सुनै स्रवन सुनहि नहि ताहि ।
कहे पहेली बीरबल सुनिये अकबर साहि ॥

॥ नाड़ी ॥

स्याम बरन अरु सोहनी फूलन छाई पीट ।
सब पुरषन के गल परत ऐसी लंगर ढीट ॥

॥ ढाल ॥

सिर पर सोहै गंग जल मुंड माल गल मांहि ।
बाहन वाको वृषभ है सिव कहिये के नाहि ॥

॥ रहट ॥

रंग बिरंग एक पंछी बना । छोटी चोंच अरु कांटे घना ॥
तीस २ मिल बिल में बसैं । जीव नाहिं अरु उड़ के डसैं ॥

॥ तीर ॥

देखी एक अनोखी नारी । गुन उस में एक सब से भारी ॥
पढ़ी नहीं अरु अचरज आवै । मरना जीना तुरत बतावै ॥

॥ नाड़ी ॥

फाट्यो पेट दरिद्री नाम । उत्तम घर में वाको ठाम ॥
श्री को अनुज बिष्णु को सारो । पंडित होय सो अर्थ बिचारो ॥

॥ संख ॥

बारे से वह सब को भावै । बढ़ा हुआ कुछ काम न आवै ॥
मैं कह दीया उस का नाम । अर्थ करो के छाड़ो गाम ॥

॥ दिया ॥

आदि कटे तें सब को पारै । मध्य कटे तें सब को मारै
अंत कटे तें सब को मीठा । सो खुसरो में आंखों दीठा

॥ काजल ॥

पंक्षी एक सेत औ हरौ । निस दिन रहै बाग में परौ ॥
ना कछु पीवै ना कछु खाय । अस्व बराबर दौरो जाय ॥
॥ चकसुआ ॥

मुरदा उगलै निर्मल पानी । पिवै मुसुलमान सुचि जानी ॥
आखर तीन कहै सब कोइ । उलटा किये किरिया होइ ॥
॥ मसक ॥

दो० । विपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिय सोइ आजु ।
राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुर काजु ॥

चौ० । सुनि सुरबिनय ठाढ़ि पछितानी । मातु सरोजबिपिन हिमरानी
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी । मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी
बिस्मय हर्षरहित रघुराऊ । तुम जानहु रघुबीर सुभाऊ
जीव कर्मबस दुख सुख भागी । जाइय अवध देव हित लागी
बार बार गहि चरन सकोची । चली बिचारि बिबुधमति पोची
ऊंच निवास नीच करतूती । देखि न सकहिं पराइ बिभूती
आगिल काज बिचारि बहोरी । करिहैं चाह कुसल कवि मोरी
हरषि हृदय दसरथपुर आई । जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई

दो० । नाम मंथरा मंदमति चेरि कैकयी केरि ।
अजस पिटारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥

चौ० । देखि मंथरा नगर बनावा । मंगल मंजुल बाजु बधावा
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलक सुनि भा उर दाहू
करै बिचारि कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाज कवन बिधि राती
देखि लाग मधु कुटिल किराती । जिमि गंव तकै लेउं केहि भांती
भरत मातु पहं गइ बिलखानी । का अनमनि हसि हंसि कह रा
उतर न देइ सो लेइ उसांसू । नारि चरित करि ढारति आंसू
हंसि कह रानि गाल बड़ तोरे । दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे
तबहु न चेरि बोलि बड़ि पापिनि । छाड़ै स्वास कारि जनु सांपिनि

दो० । सभय रानि कह कहसि किन कुसल राम महिपाल ।
भरत लखन रिपुदमन सुनि भा कुबरीउर साल ॥

चौ० । कत सिख देइ हमहिं कोउ माई । गाल करब केहि कर बल पाई ॥
रामहिं छाड़ि कुसल केहि आजू । जाहि नरेस देत जुबराजू ॥
भा कौसिल्यहिं विधि अति दाहिन । देखत गर्ब रहत उर नाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सब सोभा । जो अवलोकि मोर मन छोभा ॥
पूत बिदेस न सोच तुम्हारे । जानति हौ बस नाह हमारे ॥
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूपकपट चतुराई ॥
सुनि प्रिय बचन कुटिल मन जानी । झुकी रानि अरहू अरगानी ॥
पुनि अस कबहुं कहसि घरफोरी । तौ धरि जीह कढ़ावौं तोरी ॥

दो० । काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि ॥

चौ० । प्रिय वादिनि सिख दीन्हेउं तोहीं । सपनेहुं तोपर कोपन मोहीं ॥
सुदिन सुमंगलदायक सोई । तोर कहा फुर जादिन होई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुलरीति सदाई ॥
राम तिलक जौ सांचहुं काली । मांगु देउं मनभावत आली ॥
कौसल्या सम सब महतारी । रामहिं सहज सुभाव पियारी ॥
मोपर करहिं सनेह विशेषी । मैं करि प्रीति परिच्छा देखी ॥
जौ विधि जन्म देइ कर छोहू । होंहिं राम सिय पूत पतोहू ॥
प्रानतें अधिक राम प्रिय मोरे । तिनके तिलक छोभ कसतोरे ॥

दो० । भरतसपथ तोहिं सत्य कहु परिहरि कपट दुराव ।
हर्षसमय विस्मय करसि कारन मोहि सुनाव ॥

चौ० । एकहि बार आस सब पूजी । अब कछु कहब जीह करि दूजी ॥
फोरै योग कपार अभागा । भलो कहत दुख रौरेहु लागा ॥
कहहि झूठ फुर बात बनाई । ते प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई ॥
हमहुं कहब अब ठकुर सुहाती । ना तो मौन रहब दिन राती ॥
करि कुरूप विधि परबस कीन्हा । बोवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी । चेरि छाड़ि अब होब कि रानी ॥
जारै योग सुभाव हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
तातें कछुक बात अनुसारी । छमब देबि बड़ि चूक हमारी ॥

दो० । गूढ़ कपट प्रियवचन सुनि तीय अधर बुधि रानि ।
सुर मायाबस वैरिनिहिं सुहृद जानि पतिआनि ॥

चौ० । सादर पुनि पुनि पूछति ओही । सबरी गान मृगी जनु मोही ॥
तसि मति फिरी अहै जसि भावी । रहसी चेरि घात भलि फावी ॥
तुम पूछहु मैं कहत डेराऊं । धरेउ मोर घर फोरी नाऊं ॥

सजि प्रतीति गढ़ि बहुविधि छोली । अवध साढ़साती अनु बोली
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी । रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी
रहे प्रथम अब सो दिन बीते । समय पाइ रिपु होहिं पिरीते
भानु कमलकुल पोषननिहारा । बिनु जल जारि करै सोइ छारा
जर तुम्हारि चह सवति उपारी । रुंधहु करि उपाइ बरवारी

दो० । तुमहिं न सोच सुहागबल निज बस जानहु राउ ।
मन मलीन मुंह मीठ नृप राउर सरल सुभाउ ॥

चौ० । चतुर गंभीर राम महतारी । बीच पाइ निज काज संवारी
पठये भूप भरत ननिऔरे । राममातुमत जानव रौरे
सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके । गर्वित भरत मातु बल पीके
साल तुम्हार कौसिल्यहिं माई । चतुर कपट नहिं परत लखाई
राजहिं तुम पर प्रीति बिसेखी । सवति सुभाव सकै नहि देखी
रचि प्रपंच भूपहिं अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई
इहि कुल उचित राम कहं टीका । सबहि सुहाय मोहि सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डर मोहीं । देउ दैव फिरि सो फल ओही

दो० । रचिपचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोध ।
कहेसि कथा सत सौति कर जातें बढ़ै विरोध ॥

चौ० । भावी बस प्रतीति उर आई । पूछि रानि निज सपथ दिवाई
का पूछहु तुम अजहुं न जाना । हित अनहित निज पसु पहिचाना
भये पाख दिन सजत समाजू । तुम सुधि पायेहु मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहे नहि दोख हमारे
जो असत्य कछु कहब बनाई । तौ विधि देइहि मोहि सजाई
रामहिं तिलक कालि जो भयऊ । तुम कहं बिपतिबीज विधि बयऊ
रेखा खैंचि कहौं बलु भाखी । भामिनि भइहु दूध की मांखी
जो सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई

दो० । कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख तुमहिं कौसिला देव ।
भरत बंदिगृह सेइहैं रामलषन कर नेव ॥

चौ० । कैकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकै कछु सहमि सुखानी
तनु पसेव कदलि जिमि कांपी । कुबरी दसन जीभ तब चांपी
कहि कहि कोटिक कपटकहानी । धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू । जिमि न नवै फिरि उकठि कुकाठू
फिरा कर्म प्रिय लागु कुचाली । बकिहिं सराहति मनहुं मराली

सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि आंखि नित फरकति मोरी ॥
दिन प्रति देखौं राति कुसपना । कहौं न तोहि मोहबस अपना ॥
काह करौं सखि सुद्ध सुभाऊ । दहिन बाम जानौं नहिं काऊ ॥

दो० । अपने चलत आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहि अघ एकहि बार मोहिं दैव दुसह दुख दीन्ह ॥

चौ० । नैहर जन्म भरब बरु जाई । जिअत न करब सवतसेवकाई ॥
अरिबस दैव जिआवै जाही । मरब नीक तेहि जियब न चाही ॥
दीन बचन कह बहु विधि रानी । सुनि कुबरी तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना । सुख सुहाग तुम कहं दिन दूना ॥
जो राउर अस अनभल ताका । सो पाइहि यह फल परिपाका ॥
जब तें कुमति सुना मैं स्वामिनि । भूखन बासर नींद न जामिनि ॥
पूछा गुनिन्ह रेख तिन खांची । भरत भुआल होब यह सांची ॥
भामिनि करहु तो करौं उपाऊ । हैं तुम्हरे सेवा बसराऊ ॥

दो० । परौं कूप तव बचन लगि सकौं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥

चौ० । कुबरी करी कुबलि कैकेई । कपटछुरी उरपाहन टेई ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे । चरै हरित तृन बलिपसु जैसे ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुं मधु माहुर घोरी ॥
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं । स्वामिनि कहेहु कथा मोहि पाहीं ॥
दुइ बरदान भूप सन थाती । मांगहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहिं राज रामहिं बनवासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति रामसपथ जब करई । तब मांगहु जेहि बचन न टरई ॥
होइ अकाज आजु निस बीते । बचन मोर प्रिय मानहु जीते ॥

दो० । बड़ कुघात करि पातिकिनि कहेसि कोप गृह जाहु ।
काज सवांरहु सजुग सब सहसा जनि पतिआहु ॥

चौ० । कुबरिहिं रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तोहिं सम हित न मोर संसारा । बहे जात कर भयिसि अधारा ॥
जौ बिधि पुरब मनोरथ काली । करौं तोहिं चखपूतरि आली ॥
बहु बिधि चेरिहिं आदर देई । कोप भवन गवनी कैकेई ॥
बिपति बीज बर्षा ऋतु चेरी । भुइं भइ कुमति कैकई केरी ॥
पाइ कपट जल अंकुर जामा । बर दोउ दल फल दुख परिनामा ॥

कोपसमाजसाज सजि सोई । राज करत तेहिं कुमति बिगोई
राउनगर कोलाहल होई । यह कुचालि कछु जान न कोई

दो० । समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासुपदकमलयुग बंदि बैठि सिर नाइ ॥

चौ० । दीन्ह असीस सासु मृदुबानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमित मुख सोचति सीता । रूपरासि पतिप्रेमपुनीता
चलन चहत बन जीवननाथा । कवन सुकृत सन होइहि साथा
की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतब कछु जात न जाना
चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी
मनहु प्रेमबस बिनती करहीं । हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राममहतारी
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सासु ससुर परि जनहिं पियारी

दो० । पिता जनक भूपालमनि ससुर भानुकुल भानु ।
पति रबिकुल कैरवबिपिन बिधु गुनरूपनिधान ॥

चौ० । मैं पुनि पुत्रबधू प्रियपाई । रूपरासि गुन सील सुहाई
नयन पुतरि इव प्रीति बढ़ाई । राखेउं प्रान जानकिहि लाई
कल्पबेलि जिमि बहु बिधि लाली । सींचि सनेहसलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भये बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा
पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सीय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा
जीवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊं । दीपबाति नहि टारन कहेऊं
सो सिय चलन चहति बन साथा । आयसु कहा होइ रघुनाथा
चन्द्रकिरनरसरसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकै किमि जोरी

दो० । करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिषबाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनमूरि ॥

चौ० । बन हित कोल किरात किसोरी । रची बिरंचि बिषयरस भोरी
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिनहिं कलेस न कानन काऊ
कै तापस तिय कानन योगू । जिन तप हेतु तजा सब भोगू
सिय बन बसिहि तात केहि भांती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती
सुरसर सुभग बनज बन चारी । डाबर योग कि हंस कुमारी
अस बिचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउं जानकिहि सोई
जो सिय भवन रहै कह अंबा । मो कहं होइ प्रान अवलंबा

सुनि रघुबीर मातुप्रियबानी । सील सनेह सुधा जनु सानी ॥

दो० । कहि प्रियबचन बिबेकमय कीन्ह मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहिं प्रगटि बिपिनगुनदोष ॥

चौ० । मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समय समुझि मन माहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू । आन भांति जिय जनि कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जौं चहहू । बचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई । सब बिधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहितें अधिक धर्म नहि दूजा । सादर सासुससुर पद पूजा ॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझायेहु मृदु बानी ॥
कहौं सुभाव सप्त सत मोहीं । सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं ॥

दो० । गुरु श्रुतिसम्मत धर्म फल पाइय बिनहिं कलेस ।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥

चौ० । मैं पुनि करि प्रमान पितु बानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहि लागहि बारा । सुंदरि सिखवन सुनहु हमारा ॥
जौं हठ करहु प्रेमबस बामा । तौ तुम दुख पाउब परिनामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घाम हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मगु कंकर नाना । चलब पयादेहि बिनु पद त्राना ॥
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जांहि निहारे ॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दो० । भूमि सयन बलकल बसन असन कंद फल मूल ।
तेकि सदा सब दिन मिलहिं समय समय अनुकूल ॥

चौ० । नर अहार रजनीचर करहीं । कपटभेष बिधि कोटिन धरहीं ॥
लागै अति पहार कर पानी । बिपति बिपिन नहि जाति बखानी ॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा । निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आये । मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये ॥
हंसगवनि तुम नहिं बन योगू । सुनि अपजस मोहिं देइहिं लोगू ॥
मानस सलिल सुधाप्रतिपाली । जियइ कि लवनपयोधि मराली ॥
नव रसालबन बिहरन सीला । सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदय बिचारी । चन्द्रबदनि दुख कानन भारी ॥

दो० । सहज सुहृद गुरु स्वामिसिख जो न करै हित मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हितहानि ॥

चौ० । सुनि मृदुबचन मनोहर पी के । लोचन नलिन भरे जल सी के ॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसे । चकइहिं सरदचांदनी जैसे ॥
उतर न आव बिकल बैदेही । तजन चहत मोहि परम सनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरि धीरज उर अवनि कुमारी ॥
लागि सासुपद कह कर जोरी । छमबि देबि बड़ि अविनय मोरी ॥
दीन्ह प्रान पति मोहि सिख सोई । जेहि बिधि मोर परमहित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं । पिय बियोग सम दुख जग नाहीं ॥

दो० । प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुमबिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥

चौ० । मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवार सुहृद समुदाई ॥
सासु ससुर गुरु सुजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहं लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहिं तरनि तें ताते ॥
तन धन धाम धरनि पुर राजू । पति बिहीन सब सोक समाजू ॥
भोग रोग सम भूषन भारू । यम जातना सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम बिनु जगमाहीं । मो कहं सुखद कतहुं कोउ नाहीं ॥
जियबिनु देह नदी बिनु बारी । तैसहिं नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे । सरद बिमल बिधु बदन निहारे ॥

दो० । खग मृग परिजन नगर बन बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदन सम पर्नसाल सुखमूल ॥

चौ० । बन देवी बनदेव उदारा । करिहैं सासु ससुर समसारा ॥
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु संग मंजु मनोज तुराई ॥
कंद मूल फल अमिय अहारू । अवध सौधसुख सरिस पहारू ॥
छन छन प्रभुपद कमल बिलोकी । रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभुवियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
अस जिय जानि सुजानसिरोमनि । लेइय संग मोहि छाड़िय जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

दो० । राखिय अवध तो अवधि लगि रहत जो जानिय प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥

चौ० । मोहि मगुचलत न होइहि हारी। छन छन चरन सरोज निहारी ॥
सबहिं भांति पिय सेवा करिहौं । मारगजनित सकल स्रम हरिहौं ॥
पांव पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहौं बायु मुदित मन माहीं ॥
स्रमकन सहित स्याम तनु देखे । का दुख समय प्रानपति पेखे ॥
सम महि पर तृनपल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि ताप बयारि न मोही ॥
को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा । सिंहबधुहिं जिमि ससक सिआरा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू । तुम्हहिं उचित तप मोकहं भोगू ॥

दो० । ऐसेहु बचन कठोर सुनि जो न हृदय बिलगान । ॥
तौ प्रभु बिषम बियोगदुख सहिहैं पांमर प्रान ॥ ॥

॥

चौ० । अस कहि सीय बिकल भइ भारी । बचन बियोग न सकी संभारी ॥
देखि दसा रघुपति जिय जाना । हठि राखे राखिहि नहिं प्राना ॥
कहेउ कृपालु भानुकुलनाथा । परिहरि सोच चलहु बन साथा ॥
नहि बिषादकर अवसर आजू । बेगि करहु बनगवन समाजू ॥
कहि प्रिय बचन प्रियहिं समुझाई । लगे मातुपद आसिष पाई ॥
बेगि प्रजा दुख मेटहु आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ॥
फिरिहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी । देखिहौं नैन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होई । जननी जियत बदन बिधु जोई ॥

दो० । बहुरि वच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बुलाइ लगाइ उर हरषि निरखिहौं गात ॥

चौ० । लखि सनेह कातरि महतारी । बचन न आव बिकल भइ भारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना । समय सनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासु पग लागी । सुनिय माय मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा । मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जनि छाड़ब छोहू । कर्म कठिन कछु दोष न मोहू ॥
सुनि सियबचन सासु अकुलानी । दसा कवन बिधि कहौं बखानी ॥
बारहिं बार लाय उर लीन्ही । धरि धीरज सिख आसिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा । जब लगि गंग यमुन जलधारा ॥

॥ श्री सूरदास के पद ॥

जसुदा हरि पालनें झुलावै । हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोई कछु गावै । मेरे लाल कों आउ निंदरिया काहे न आनि सुवावै । तूं काहे न बेग री आवै तोकों कान्ह बुलावै । कबहुं पलक हरि मूंदलेत हैं कबहुं अधर फरकावै । सोवत जानि मौन ह्वे ह्वे रहि कर करि सेन बतावै । इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरै गावै । जो सुख सूर अमरमुनि दुर्लभ सो नन्द भामिनि पावै ॥ १ ॥ पालनें स्याम हलावति जननी । अति अनुराग परस्पर गावति प्रफुलित मगन मुदित नंद घरनीं । उमंग उमगि प्रभु भुजा पसारत हरषि जसोमति अंकम भरनी । सूरदास प्रभु मुदित जसोदा पूरन भई पुरातन करनीं ॥ २ ॥ प्रात समय दधि मथति जसोदा अति सुख कमल नयन गुन गावति । अतिहि मधुर गति कंठ सुघर अति नंद सुवन चित हितहि करावति ॥ नील वसन तन सजल जलद, मनो दामिनि विधि भुजदंड चलावति । चंद्र बदन लट लटकि छबीली मनहुं अमृत रस राहु चुरावति ॥ गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिनि धुनि सुनि स्रवन रमावति । सूर स्याम अंचरा धरे ठाढ़े काम कसोटी कसि दिखरावति ॥ किहि विधि करि कान्हे समझैहों । मैंहीं भूलि चंद दिखरायो ताहि कहत मोहि दै मैं खैहों ॥ अनहोनी कहुं होत कन्हैया देखी सुनी न बात । यह तो आहि खेलौना सब को खान कहत तेहि तात ॥ यहै देत लवनी नित मों कों छिन छिन सांझ सवारे । बार बार तुम माखन मांगत देउं कहां तें प्यारे ॥ देखत रहो खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई । सूर स्याम लिये महरि जसोदा नंदहिं कहत बुझाई ॥ जा की जैसी टेव परी री । सो तो टरे जीव के पाछे जोइ जोइ धरनि धरी री ॥ जैसे चोर तजै नहिं चोरी बरजेहु वहै करी री बरज्यो जाइ हानि पुनि पावन कतहों बकत मरी री ॥ जद्यपि

ब्याध बधे मृग प्रगटहिं मृगिनी रहै खरी री । ताहू नादबस्य ज्यों दीनौ संका नहीं करी री ॥ जद्यपि मैं समझावति पुनि पुनि यह कहि कहि जु लरी री । सूर स्याम दरसन तें इकटक टरत न निमिष घरी री ॥

॥ श्री तुलसीदास के पद ॥

मन मैं मंजु मनोरथ हो री । सो हरि गौरि प्रसाद एक तें कौसिक कृपा चौगुनो भो री ॥ पन परिताप चाप चिंता निसि सोच सकोच तिमिर नहि थोरी । रविकुलरवि अवलोकि सभा सर हित चित वारिजबन बिगस्यौ री ॥ कुंअर कुंअरि सब मंगलमूरति नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी । राज समाज भूरिभागी जिन्ह लोयन लाहु लह्यौ एक ठौरी ॥ ब्याह उछाह राम सीता को सुकृत सकेलि बिरंचि रच्यौ री । तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जाउर बसति मनोहर जोरी ॥ राजत रामजानकी जोरी । स्याम सरोज जलद सुंदर बर दुलहिनि तड़ित बरन तन गोरी ॥ ब्याह समय सोहत बितान तर उपमा कहुं न लहति मति मोरी । मनहुं मदन मंजुल मंडप मंह छबि सिंगार सोभा सोउ थोरी ॥ मंगलमय दोउ अग मनोह ग्रथित चूंदरी पीत पिछोरी । कनक कलस कंह देत भांवरी निरखि रूप सारद भइ भोरी ॥ मुदित जनक रनिवास रहस बस चतुर नारि चितवहिं तृन तोरी । गान निसान वेद धुनि सुनि सुर बरखत सुमन हरष कह कोरी ॥ नयनन को फल पाइ प्रेम बस सकल असीसहिं ईस निहोरी । तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यों रसना बरनै सुख सो री ॥ दूलह राम सिया दुलही री । घन दामिनि बर बरन हरन मन सुन्दरता नख सिख निबही री ॥ ब्याह बिभूषन बसन बिभूषित सखिअवली लखि ठगि सी रही री । जीवन जन्म लाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यौ आजु

सही री ॥ सुखमा सुरभि सिंगार छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दही री । मथि माखन सिय राम संवारे सकल भुवन छवि मनहु मही री ॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल न जाति कही री । रूप रासि बिरची बिरंचि मनो सिलालवनि रति काम लहीरी ॥ प्रातकाल रघुबीर बदन छबि चितै चतुर चित मेरे । होहि बिबेकबिलोचन निरमल सुफल सुसीतल तेरे ॥ भाल बिसाल बिकट भृकुटी बिच तिलक रेख रुचि राजै । मनहुं मदन तम तकि मरकत धनु जुगल कनक सर साजै ॥ रुचिर पलक लोचन जग तारक स्याम अरुन सित कोए । जनु अलि नलिनकोस मंह बंधुक सुमन सेज सजि सोए ॥ बिलुलित ललित कपोलनि पर कच मेचक कुटिल सोहाए । मनो बिधु मंह बनरुह बिलोकि अलि बिपुल सकौतुक आए ॥ सोभित स्रवन कनक कुंडल कल अवलंबित भुज मूले । मनहुं केकि तकि गहन चहत जग उरग दुदु प्रतिकूले ॥ अधर अरुन तर दसन पांति बर मधुर मनोहर हांसा । मनहुं सोन सरसिज मंह कुलिसनि तडित सहित कृत बासा । चारु चिबुक सुक तुंड बिनिंदक सुभग सुउन्नत नासा ॥ तुलसिदास छबिधाम राम मुख सुखद समन भवत्रासा ॥

मिश्र गणित ।

मिश्र संख्या उसे कहते हैं जो अपने भाग के कई एक जाति के संख्या से मिलकर के बनी हो जैसे १९ रुपया ५ आना ६ पाई यह मिश्र संख्या है ।

यह जानना अति अवश्य है कि कितने पाई से एक आना बनता है और कितने आनों का एक रुपया होता है और छटाक सेर आदि में क्या संबंध है इसलिये पहिले इन संबंधों का वर्णन करते हैं ।

	२ दमड़ी	=	१	दुकड़ा
	२ दुकड़ा	=	१	अधेला
	२ अधेला	=	१	पैसा
	४ पैसा	=	१	आना
और	१२ पाई	=	१	आना
	१६ आना	=	१	रुपया
	१०½ रुपया	=	१	गिन्नी

। तोल की संख्या ।

आठ चावल	=	१	रत्ती
८ रत्ती	=	१	मासा
१२ मासा	=	१	तोला
४ तोला	=	१	छटांक
२ छटांक	=	आधपाव	
४ छटाक	=	पावभर	
२ पाव	=	आधसेर	
४ पाव	=	सेर भर	
४० सेर	=	१	मन

माप ।

३ अंगुल	=	१	गिरह
८ गिरह	=	१	हाथ
२ हाथ	=	१	गज

---

२० कचवांसी	=	१	बिस्वांसी
२० बिस्वांसी	=	१	बिस्वा
बीस बिस्वा	=	१	बीघा

खेत मापने में बीघा बिस्वा आदि की आवश्यकता पड़ती है ।

अंगरेज़ी समय का भाग ।

६० सेकंड	=	१	मिनिट
६० मिनिट	=	१	घंटा
२४ घंटा	=	१	दिन
७ दिन	=	१	हफ़ा
* ३० दिन	=	१	महीना
१२ महीना	=	१	बरस
३६५ दिन	=	१	अंगरेज़ी बरस

उच्च जाति की संख्या को हीनजाति की संख्या में लाने की रीति ।

दियी हुई संख्या में की सब से उच्च जाति की संख्या को उस के नीचे की हीन जाति संख्या के जितने अंको के तुल्य इस उच्च जाति का १ है उस से गुणो और दिये हुए अंको में इसी हीन जाति का कोई अंक हो तो उसे ऊपर की रीति से गुणने मे जो मिला हो उस मे मिला दो और यदि इस से नीचे की और भी हीन संख्या हो तो इसी रीति से करते जाव जब तक कि वह हीन संख्या न मिले जिस में सब संख्या लाना है ॥

उदाहरण — २५ रुपये १३ आने और ९ पाई को पाई के रूप में लिखो ।

रु॰		आ॰		पा॰
२५	—	१३	—	९
१६				
१५०				

---

* अनेक प्रकार के महीनों आदि का वर्णन तीसरे भाग में हो चुका है ।

```
  २५
 ────
 ४००    आना
  १३
 ────
 ४१३    आना
  १२
 ────
४९५६            पाई
   ९
 ────
४९६५            पाई   उत्तर
```

यहां रुपयों की संख्या सब से उच्च जाति की संख्या है और उस के नीचे की हीन जाति की संख्या में आनों की संख्या है १ रुपये में १६ आने होते हैं इसलिये ऊपर लिखी हुई रीति के अनुसार २५ को १६ से गुणा तो ४०० मिला अर्थात् २५ रुपये में ४०० आने हुए इस में १३ मिला दिया तो ४१३ हुआ अब क्योंकि १२ पाई का एक आना होता है इसलिये ४१३ को १२ से गुणा तो ४९५६ प्राप्त हुआ अर्थात् ४१३ आने अथवा २५ रुपये १३ आने में ४९५६ पाई हैं इस में ९ जोड़ दिया तो ४९६५ हुआ २५ रुपया १३ आना और ९ पाई में ४९६५ पाई हैं ।

प्रश्न ।

(१) २५१ रुपया ९ आना ४ पाई में कितनी पाइयां हैं?

उत्तर ४८३०४ पाई

(२) ६ मन ३३ सेर ३ पाव और १ छटांक कितने छटांकों के तुल्य हैं?

उत्तर ४२८१ छटांक

(३) ५५ मन १३ सेर में कितने पाव हैं?

उत्तर ८८९२ पाव

(४) तीन आना और तीन दुकड़े में कितनी दमड़ियां हैं ?
उत्तर १०२ दमड़ी

(५) १५ तोला ७ मासा और ६ रत्ती में कितनी रत्तियां हैं ?
उत्तर १५०२ रत्ती

(६) ३५ गज ७ गिरह में कितने अंगुल हैं ?
उत्तर १७०१ अंगुल

(७) ५५ बीघा १० विस्वा ३ विस्वांसी और १६ कचवांसी कितने कचवांसियों के तुल्य हैं ? उत्तर ४४६८७६

(८) २३ दिन २१ घंटा ३७ मिनिट में कितने सेकंड हैं ?
उत्तर २०६५०२०

(९) २ अंगरेजी बरस और ३ हफ्तों में कितने घंटे हैं ?
उत्तर १८०२४

(१०) ३ महीने और १५ दिन में कितने घंटे हैं ?
उत्तर २५२०

हीन जाति संख्या को उच्च जाति की संख्या में लाने की रीति ।

दिये हुए हीन जाति के जितने अंकों के तुल्य उस के पीछे की उच्च जाति संख्या का १ हो उस से दिये हुए अंक को भाग दो जो बच जावे वह दियी हुई हीन जाति के संख्या का अंक होगा और जो भागफल हो वह उस से बड़ी उच्च जाति के संख्या में का अंक होगा, इसी प्रकार से करते जाव यहां तक कि वह उच्च जाति आजावे जिस में दिये हुए अंक को लेजाना है ।

उदाहरण । ३५६० पाई में कितने रुपये आदि हैं ?

```
१२ |३५६०
   |------
१६ |२९६—८
   |------
    १८—२
```

इसलिये १८ रुपया २ आना ८ पाई उत्तर है ।

यहां पर पूर्वोक्त रीति के अनुसार ३५६० को १२ से भाग दिया क्योंकि १२ पाई का एक आना होता है तो २९६ भागफल हुआ और ८ शेष बचा तो उत्तर में ८ पाई आवेगी, अब यह जानते हैं कि १६ आने का एक रुपया होता है इसलिये २९६ को १६ से भाग दिया तो १२ मिला और २ शेष बचा तो दो आना है और १२ रुपया है इसलिये ३५६० पाई में १२ रुपया २ आना और ८ पाई हैं ।

प्रश्न ।

(१) ५९३६ पाई में कितने रुपये आदि हैं?

उत्तर ३०॥॥=)

(२) ५२३ रत्ती में कितने तोले आदि हैं ?

उत्तर ५ तो॰ ५ मा॰ ३ र॰

(३) ४०९०३ छटांक में कितने मन आदि हैं ?

उत्तर ६३ म॰ ३६ से॰ ७ छटांक

(४) ५०३ गिरह में कितने गज़ आदि हैं?

उत्तर ३१ गज ७ गि॰

(५) ५०६८९ कचवांसी में कितने बीघे आदि हैं ?

उत्तर ६ बिगहा
६ बिस्वा १४ बि॰ ९ क॰

(६) ५०७८९३० सेकंड में कितने अंगरेजी बरस आदि हैं ?

उत्तर १ महीना २८ दिन १८ घं॰ ४९ मि॰ ५० से॰

मिश्र संकलन ।

जिन संख्याओं को जोड़ना हो उन सब को इस क्रम से लिखो किसी एक मिश्र संख्या के सब से उच्च जाति के अंक को पहिले लिखो और उस के पीछे उस से हीन जाति का अंक रखो और इसी प्रकार से सर्वदा हीन जाति के अंक को उच्च जाति के अंक

के पीछे रखो और सब संख्याओं को इस के नीचे इस प्रकार से लिखो कि एक जाति के अंक के नीचे उसी जाति का अंक रहे फिर सब के नीचे एक लकीर खींच कर सब से हीन जाति के अंकों को जोड़ो यदि इस जोड़ने से जो अंक मिले वह परम भाग * से न्यून हो तो सब को उसी जाति के अंको के नीचे लिख दो यदि परम भाग के तुल्य वा उस से अधिक हो तो इस जोड़ मे प्राप्त हुई संख्या को परम भाग से भाग देदो और जो शेष बचे उसे सब से हीन जाति की संख्या के नीचे लिखो और भाग देने से जो उच्च जाति की संख्या (जो कि भागफल है) मिली हो उसे हाथ लगा समझो फिर रीति के अनुसार दूसरे स्थान की संख्या को जोड़ कर उस में हाथ लगा मिला देकर पहिले प्रकार के सदृश देखो कि जोड़ने से जो अंक प्राप्त हुआ है वह परम भाग से न्यून है वा नहीं और पहिली रीति के अनुसार करते जाव यहां तक कि सब जाति की सख्या जोड़ जांय ॥

उदाहरण—इन संख्याओं को जोड़ो १५ रु॰ ११ आना ९ पाई; ३३ रु॰ ९ आ॰ १० पा॰; २१ रु॰ ६ आ॰ ७ पा॰ ॥

रु॰		आ॰		पा॰
१५	—	११	—	९
३३	—	९	—	१०
२१	—	६	—	७
रु॰ ७०	—	१२	—	२

यहां पर पूर्वोक्तरीति के अनुसार पहिले १५ रुपये का अंक लिखा फिर आना और फिर पाई लिखा अब ९ पाई के नीचे १० पाई और उस के नीचे ७ पाई लिखा, तब ११ आना के नीचे ९

* एक हीन जाति के जितने अंकों के तुल्य उस से अधिक उच्च जाति का १ हो उसे परम भाग कहते हैं ॥

आना और उस के नीचे ६ आना लिखा और तब रुपयों के नीचे रुपयों की संख्या लिखकर एक आड़ी लकीर खींचा अब पाई के अंको के जोड़ने से २८ मिला यह १२ * से अधिक है इसलिये २८ को १२ से भाग दिया तो दो शेष बचा इस को पाइयों को नीचे लिखा, और जो २ भागफल मिला उसे हाथ लगा माना तब आनों को जोड़ने से २६ हुआ उस में २ मिलाया तो २८ हुआ इस को १६ से भाग देने से १२ शेष बचा उसे आनों के नीचे रखा और १ (भागफल) हाथ लगा, रुपयों को जोड़ा तो ६९ हुआ उस में १ मिलाया तो ७० हुआ उसे रुपयों के नीचे लिखा ॥

प्रश्न ।

नीचे लिखी हुई संख्याओं को जोड़ो

(१) १३२॥~) १०, ५२॥≡) ४, ४८॥≡) ८ ।

उत्तर २३३॥≡) १०

(२) १० मन, ३२ सेर ७ छटांक—४५ मन ९ सेर ३ छटांक—८८ मन २६ सेर ५ छटांक—१४१ मन ३८ सेर ११ छटांक ।

उत्तर २८७ मन २७ सेर १० छटांक

(३) ३ गज़ ७ गिरह २ अंगुल; १५ गज़ ३ गिरह, १९ गज़ १ अंगुल, ५५ गज़ ।

उत्तर ९ गज़ ११ गिरह

(४) १३ बीघा १६ विस्वा १७ विस्वांसी; १९ बीघा १४ विस्वा विस्वांसी ८ कचवांसी; ५५ बीघा १२ विस्वांसी १ कचवांसी

उत्तर ८८ बी० ११ बी १८ विस्वांसी ९ कचवांसी

(५) २३ घंटा, १६ मिनिट ३५ सेकंड,—१८ घंटा ३५ मिनिट

* १२ पाई का एक आना होता है इसलिये १२ परम भाग है ।

७ सेकंड–२ घंटा २६ मिनिट ९ सेकंड–१४ घंटा १८ मिनिट ५५ सेकंड–१९ घंटा ३३ सेकंड ।

उत्तर २ दिन ९ घं॰ ३७ मि॰ १९ से॰

(७) ४ बरस ६ महीना २० दिन–२९ बरस ११ महीना, दो दिन–४८ बरस ३ महीना १६ दिन–५८ बरस ९ महीना १७ दिन–५७ बरस ८ महीना ३ दिन ।

उत्तर २०० ब॰ २ म॰ १८ दिन

॥ मिश्र व्यवकलन ॥

जिस संख्या में से घटाना हो पहिले उसे लिखो, फिर जिस संख्या को घटाना हो उसे इस के नीचे इस प्रकार से लिखो कि किसी एक जाति के अंक के नीचे उसी जाति का अंक रहे पहिले सब से हीन जाति के अंकों को लो यदि ऊपर का अंक नीचे के अंक से अधिक हो तो उस में नीचे के अंक को घटाने से जो मिले उसे उसी जाति के अंकों के नीचे लिखो यदि नीचे का अंक ऊपर के अंक से अधिक हो तो ऊपर के अंक में वह अंक मिलाओ जिस के तुल्य उस से उच्च जाति की संख्या की एकाई हो तब जोड़ने से जो प्राप्त हो उस में से नीचे के अंक के घटाने से जो मिले उसे सब से हीन जाति के अंकों के नीचे लिखो तब नीचे की संख्याओं में के सब से हीन जाति संख्या के पहिले की संख्या (अर्थात् उस से उच्च जाति संख्या) में एक मिलाकर फिर पूर्वोक्त रीति से चलो और इसी रीति के अनुसार करते जाव जब तक कि सब जाति के अंक न घटा दिये जायं ॥

उदाहरण—५५ रुपया १३ आना ३ पाई में ४५ रुपया १५ आना ५ पाई घटाओ ।

रु॰		आ॰		पा॰
५५	—	१३	—	३
४५	—	१५	—	५
रु॰ ९	—	१३	—	१०

पहिले रुपये के नीचे रुपया आने के नीचे आना और पाई के नीचे पाई रखा तब एक लकीर खींचा अब देखते हैं कि ५ तीन में नहीं जाता इसलिये तीन में १२ जोड़ा क्योंकि १२ पाई का १ आना होता है तो १५ मिला १५ में से ५ घटाया तो १० बचे इसलिये १० को पाई के नीचे रखा अब १५ में १ मिलाया तो १६ हुआ फिर १६, १३ में से नहीं जाता इसलिये १३ में १६ मिलाया क्योंकि १६ आने का १ रुपया होता है तब २९ हुआ २९ में से १६ घटाया तो १३ बचा इसे आनों के नीचे रखा तब ४५ में एक मिलाया सो ४६ हुआ और ४६ को ५५ में से घटाया तो ९ बचे इसलिये ९॥।-)१० उत्तर है ॥

प्रश्न ।

(१) ५२६॥ ≡) ९ में से २३६॥।-) ११ पाई घटाओ ।

उत्तर १८९॥।-) १०

(२) १३ तोला ७ मासा और ३ रत्ती में से ९ तो॰ ६ मा॰ ५ रत्ती घटाओ ।

उत्तर ४ तो॰ ६ रत्ती

(३) ५८६ मन २९ सेर ९ छटांक में २५३ मन ३५ सेर ७ छटांक घटाओ ।

उत्तर ३३२ म॰ ३४ से॰ २ छटांक

(४) ५५ गज़ २ अंगुल में ७ गज़ ६ गिरह घटाओ और जो बचे उस में से २५ गज़ ३ गिरह एक अंगुल घटाओ ।

उत्तर २२ गज़ ७ गि॰ १ अं॰

(५) ५६७ बीघा ११ बिस्वा ७ कचवांसी में से १९३ बीघा ८ बिस्वा १३ बिस्वान्सी ९ कचवांसी घटाओ ।

उत्तर ३७४ बी० २ बि० ६ बि०

(६) १५ घंटा ९ मिनिट और ६ सेकंड में ३ घंटा ५५ मिनिट ५७ सेकंड घटाओ ।

उत्तर ११ घं० १३ मि० ९ से०

(७) ५७६७ बरस ९ महीना ३ दिन में से ५७६० बरस ११ महीना २९ दिन घटाओ ।

उत्तर ६ ब० ९ म० ४ दिन

॥ मिश्र गुणन ॥

यदि किसी मिश्र संख्या को किसी अंक से गुणना हो तो गुण्य के सब से हीन जाति की संख्या के नीचे गुणक को रखो और पहिले इस से सब से हीन जाति के अंक को गुणो और जो मिले उस में देखो कि दूसरे उच्च जाति की कितनी इकाइयां हैं जितनी ऐसी इकाइयां हों उन को हाथ लगा समझो और जो शेष बचे उसे सब से हीन जाति की संख्या के नीचे लिख दो तब सब से हीन जाति की संख्या की बाईं ओर जो उस से उच्च जाति का अंक है उसे गुणक से गुणकर गुणन फल में हाथ लगा अंक मिला दो तो फिर देखो कि इस में इस के उच्च जाति की संख्या की कितनी इकाइयां हैं जो बचे उसे इस जाति के अंकों के नीचे लिखो और फल को हाथ लगा मानलो और शेष जाति के अंकों को अलग २ गुणक से पूर्वोक्त प्रकार से गुणते जाव यहां तक कि कोई अंक बच न जाय ॥

उदाहरण—१५ रुपया १० आना ११ पाई को ६ से गुणो ।

रू॰		आ॰		पा॰
१५	—	१०	—	११
				६
९४	—	२	—	६

· यहां पाई सब से हीन जाति है इसलिये उस के नीचे ६ रखा पहिले ११ को ६ से गुणा तो ६६ हुए इस में १२ का भाग देने से ६ शेष बचता है और ५ आना मिलता है इसलिये ६ को पाई के स्थान में रख दिया फिर १० को ६ से गुणा तो ६ हुआ इस में ५ मिलाया तो ६५ हुआ इस में १६ का भाग देने से १ शेष बचता है इसलिये १ आना के स्थान में रखा और ४ हाथ लगा तब १५ को ९ से गुणा और इस से जो ९० मिला उस में ४ जोड़ कर ९४ रुपये के स्थान में रखा ॥

प्रश्न ।

(१) १३६॥≈)५ को ५ से गुणो और उत्तर को ९ से गुणो ।

उत्तर ६१४९।)९

(२) ३५ तोला ९ मासा ३ रत्ती को २७ से गुणो ।

उत्तर ९६६ तो॰ १ मा॰ १ र॰

(३) १४८ मन ३६ सेर ९ छटांक को ५३ से गुणो ।

उत्तर ७८९२ म॰ १७ से॰ १३ छ॰

(४) ५५ गज़ ६ गिरह १ अंगुल को २ से गुणो और उत्तर को २४ से गुणो ।

उत्तर ३९८८ गज ८ गिरह

(५) ५०३ बीघा ९ विस्वा ५ कचवांसी को १३ से गुणो ।

उत्तर ६५४४ बी॰ १७ बि॰ ३ बिस ५ कच॰

(६) २३ घंटा ५७ मिनिट ५ सेकंड को १५ से गुणो ।

उत्तर १४ दि॰ २३ घं॰ १६ मि॰ १५ से॰

(७) १०३ बरस ४ महीना २७ दिन को २६ से गुणो ।

उत्तर २६८८ ब० ७ म० १२ दि०

मिश्र भाग ।

यदि भाजक कोइ अंक हो तो इस से किसी मिश्र संख्या के भाग देने की यह रीति है ।

पहिले भाज्य और भाजक को अंक के भाग में जिस प्रकार से रखते हो वैसे ही रखो तब यह देखो कि भाज्य के सब से बड़ी जाति के अंक में भाजक कितनी बेर जाता है और इसे लब्धि के स्थान में रखकर भाजक से इसे गुणो और गुणन फल को सब से उच्च जाति के संख्या के नीचे रखो और ऊपर की संख्या में से घटाओ जो शेष बचे उसे एक आड़ी लकीर के नीचे लिखो इस शेष में हीन जाति के संख्या के जितने अंक हो उन में दिये हुए भाज्य में के इस जाति के अंकों को जोड़ कर रक्खो तब पूर्वोक्त रीति से इसे भाग दो और ऊपर की रीति करते जाव यहां तक कि भाज्य में किसी जाति की संख्या न शेष रह जाय ॥

उदाहरण—५३६॥≈) ७ को ३५ से भाग दो ।

```
                 ३५ ) ५३६—१०—७ ( १५
                         ३५
                         ——
                         १८६
                         १७५
                         ——
३५ ) १३९ ( ३             ११
     १०५                 १६
     ——                  ——
      ३४                 १७६
                          १०
```

```
३५ ) १८६ आने ( ५
     १७५
     ———
      ११
      १२
     ———
     १३२
```

उत्तर १५।-) ३ $\frac{३४}{३५}$ पाई

पहिले भाज्य और भाजक को अंकों के भाग की रीति के अनुसार रखा ।

तब ५३६ को ३५ से भाग दिया इस से १५ लब्ध मिला और ११ शेष बचा तो ऊपर की रीत्यानुसार ११ को १६ से गुणा करके १० जोड़ दिया तो १८६ हुआ इस में ३५ का भाग दिया तो ५ मिला और ११ शेष बचा इसे १२ से गुणा और जो मिला उस में ७ जोड़ा तो १३९ हुआ इस में ३५ का भाग दिया तो ३ मिला और ३४ शेष बचा इसलिये १५।-) ३ $\frac{३४}{३५}$ उत्तर है ।

ऊपर के प्रश्न का यथार्थ में यह अर्थ है कि यदि ५३६॥=) ७ पाई को ३५ मनुष्यों में बाटें तो प्रत्येक को कितना मिलेगा ॥

यदि भाज्य और भाजक दोनों मिश्र संख्या हों तो नीचे लिखी हुई रीति से भाग देना चाहिये ।

पहिले भाज्य और भाजक दोनों को एकही जाति की संख्या में लाओ जो अंक भाज्य की संख्या से मिले उसे भाजक की संख्या से जो अंक मिले उस से अंकों के भाग देने की रीति से भाग दो ॥

उदाहरण—२५।=) ९ को ७।-) ३ पाई से भाग दो ।

```
 २५           ७
 १६          १६
———         ———
४००         ११२
  ६           ९
———
```

४०६ आना	१२१ आना
१२	१२
४८७२	१४५२
९	३
४८८१ पाई	१४५५ पाई

२५।≈)९ = ४८८१ पाई   ७॥-)३ = १४५५ पाई

१४५५) ४८८१ (३
४३६५
५१६

३ $\frac{५१६}{१४५५}$ उत्तर — अथवा ३ $\frac{१७२}{४८५}$

यहां पर पहिले २५।≈)९ की पाइयां बनाया तो ४८८१ पाई हुई और ७॥-)३ में १४५५ पाइयां हैं ४८८१ को १४५५ से भाग दिया तो ३ $\frac{१७२}{४८५}$ उत्तर है ॥

प्रश्न ।

(१) ५२६ ॥≈)७ को ४५ से भाग दो और जो उत्तर आवे उसे ४ से भाग दो ।

उत्तर २॥≈) १० $\frac{७}{१८०}$ पाई

(२) ५३० ≈)३ को २०३।-)५ से भाग दो ।

उत्तर २ $\frac{२२७१२}{३६०४१}$

(३) यदि ५०६ मन ३४ सेर १३ छटांक अनाज १७ मनुष्यों में बाटें तो प्रत्येक को क्या मिलेगा ।

उत्तर २९ मन ३२ सेर १० $\frac{११}{१७}$ छटांक

(४) ३०४ मन ९ सेर ३ छटांक को ३५ मन ८ सेर से भाग दो ।

उत्तर ८ $\frac{१४४८३}{१४५६८}$

(५) २२५ गज़ ७ गिरह १ अंगुल को ७ से भाग दो और जो उत्तर आवे उसे ९ से भाग दो ।

उत्तर ३ गज़ ९ गिरह $\frac{१}{८}$ अंगुल

(६) ५६ तोला ७ रत्ती को १२ तोला ३ रत्ती से भाग दो ।

उत्तर ४ $\frac{७६३}{११५५}$

(७) २५८ बीघा ९ बिस्वा १७ बिस्वांसी को ७ से भाग दो और जो उत्तर आवे उसे ६ से भाग दो ।

उत्तर ६ बी॰ ३ बि॰ १ बिस॰ १६ $\frac{२}{३}$ क॰

(८) २३ घंटा १० मिनिट ५५ सेकंड को ८ घंटा ५ मिनिट ७ सेकंड से भाग दो ।

उत्तर २ $\frac{२५२४१}{२९१०७}$

(९) २०३ बरस १० महीना ७ दिन को ८ से भाग दो और जो उत्तर आवे उसे २३ से ।

उत्तर १ ब॰ १ म॰ ८ $\frac{१५५}{१८४}$ दिन

(१०) ५५ बरस ९ दिन को ६ महीने से भाग दो ।

उत्तर ११० $\frac{१}{२०}$

यदि किसी मिश्र संख्या को भिन्न से गुणना हो तो पूर्वोक्तरीति के अनुसार अंश से गुणो और जो मिले उसे हर से भाग दो यदि भिन्न से भाग देना हो तो अंश से भाग देकर हर से गुणो ॥

॥ त्रैराशिक ॥

त्रैराशिक यह नाम इस कारण से पड़ा है कि इस में तीन राशि दियी हुई रहती हैं और चौथी राशि निकालना पड़ता है त्रैराशिक में यह अवश्य है कि दियी हुई तीन राशियों में से दो राशि में जो संबंध है वही संबंध तीसरी राशि और उस राशि

में है जो ज्ञात नहीं है । प्रायः इन तीन राशि में दो एक जाति की होती हैं और तीसरी और अज्ञात राशि एक जाति की होती है चौथी राशि के जानने की रीति आगे लिखते हैं ।

जो तीन राशि दियी हैं उन में से उस राशि को अलगा लो जिस की जाति की राशि अज्ञात है इस राशि को तीसरे स्थान पर रखो * तब यह विचार करो कि उत्तर अर्थात् चौथी राशि इस से अधिक अथवा न्यून आवेगी यदि यह जानपड़े कि उत्तर अधिक आवेगा तो दियीं हुई एक जाति की दो राशों में से बड़ी को दूसरे स्थान और छोटी को पहिले स्थान में रखो यदि यह जानपड़े कि उत्तर तीसरी राशि से न्यून आवेगा तो छोटी राशि को दूसरे और बड़ी राशि को पहिले स्थान पर रखो तब यदि पहिले और दूसरे स्थान की संख्या में सब अंक एक जाति के न हों तो पहिलों को एक हीन जाति में लाओ और उसी जाति में दूसरी को लाओ और यदि तीसरी राशी में कई जाति के अंक हों तो उन सब को भी एकही जाति में लाओ तब दूसरे और तीसरे स्थान के नये अंकों को आपस में गुण दो और जो मिले उसे पहिले स्थान के अंक से भाग दो तो इस प्रकार से जो लब्धि मिलेगी वही उत्तर होगा और यह उसी जाति में होगा जिस में तीसरी राशि है अर्थात् यदि इस राशि के पूर्व में हीन जाति किया हो तो उत्तर भी इसी हीन जाति में आवेगा ॥

उदाहरण—यदि २५ गज कपड़े का दाम ५।≈) है तो २७ गज १२ गिरह कितने पर मिलेगा ।

---

* तीनों राशि एक आड़ी पंक्ति में इस प्रकार से रखी जाती है ।

अ : इ :: उ

ग·　　ग· गि·　　रु· आ·

२५ : २७ — १२ :: ५ — ६

१६　　१६　　१६

४००　　४३२　　८०

　　१२　　६

　　४४४　　८६

　　८६

　　२६६४

　　३५५२

४००) ३८१८४ (९५

　　३६००

　　२१८४

　　२०००

　　१८४

उत्तर ९५ आ· और $\frac{१८४}{४००}$ अर्थात् $\frac{२३}{५०}$

= ५ रु· १५ $\frac{१३}{५०}$ आना

= ५ रु· १५ आ· ५ $\frac{१३}{२५}$ पाई

यहां पर २७ गज १२ गिरह और २५ गज एक जाति की राशि है इसलिये ५।≈) और उत्तर एक जाति के होंगे अर्थात् उत्तर रुपये आने आदि में आवेगा ।

तब ५।≈) को तीसरे स्थान में रखा, प्रश्न पर ध्यान देने से यह भी जान पड़ता है कि उत्तर ५।≈) से अधिक होगा इसलिये २७ गज १२ गिरह को जो २५ गज से अधिक है दूसरे स्थान में रखा और २५ को पहिले स्थान में रखा अब २७ गज १२ गिरह का गिरह बनाया तो ४४४ गिरह हुए और पहिले स्थान के अंक को

भी गिरह में लाये तो ४०० मिला और क्योंकि तीसरे स्थान की संख्या में रुपया और आना है इसलिये सब का आना बनाया तो ८६ मिला तब पूर्वोक्त रीति के अनुसार ४४४ को ८६ से गुणा तो ४३८१८४ मिला इस को ४०० से भाग दियां तो ९५$\frac{२३}{५०}$ मिला इसलिये २४०$\frac{२३}{२५}$ आना उत्तर हुआ इस को रुपया आदि में लिखने से ५ रु० १५ आ० ५१$\frac{१३}{२५}$ पाई हुआ ।

त्रैराशिक करने में यह भी चेत रखना चाहिये कि यदि पहिले और दूसरे अथवा पहिले और तीसरे स्थान के अंकों में किसी अंक का भाग बिना शेष के लगे तो उस से इन को भाग दे करके इन लब्धियों को अपने २ स्थान पर रखकर त्रैराशिक के रीति से चलना चाहिये ॥

प्रश्न ।

(१) यदि ५६ रु० का ८६ गज़ ४ गिरह कपड़ा मिले तो ५$\frac{१}{२}$ गज़ का क्या दाम होगा ।

उत्तर ३॥-)१$\frac{३३}{११५}$

(२) ४४ मन ६ सेर अनाज जो २$\frac{१}{२}$ महीने तक चलता है तो १२ दिन के लिये कितना अनाज अवश्य है ।

उत्तर ७ म० २ से० $\frac{१४}{२५}$ से०

(३) जिस दीवाल को १५ मनुष्य बीस दिन में बनाते हैं उसे ३५ मनुष्य कितने दिन में बनावेंगे?

उत्तर ८$\frac{४}{७}$ दिन

(४) यदि कोई कपड़ा २० गज़ लंबा और १२ गिरह चौड़ा है तो उतनाही कपड़ा १२ गज़ के लंबाई का लेना हो तो किस चौड़ाई का लेना चाहिये ।

उत्तर १ गज़ ४ गिरह

(५) एक मनुष्य दूसरे को दौड़ाता है पर उस से १४० गज़ पीछे है पर इतना है कि जब तक अगिला मनुष्य ४ गज़ दौड़ता है तब तक वह ७ गज़ दौड़ता है तो बतलाओ कि वह अगले को कितनी दूर में पकड़ लेगा ।

उत्तर १८६ १/३

(६) बनारस और जौनपूर के बीच में १९ कोस हैं एकही समय एक मनुष्य बनारस से जौनपूर की ओर चला और दूसरा जौनपूर से बनारस की ओर जो बनारस को आता है वह घंटे में २ १/२ कोस चलता है और दूसरा घंटे में २ कोस चलता है तो बतलाओ कि दोनों बनारस से कितनी दूर पर मिलेंगे ।

यदि बनारस से जो चला है वह ३ कोस जाकर घंटा भर और ३० मिनिट ठहर जाय और जौनपूर से चलनेवाला कोस भर जाकर १५ मिनिट ठहरे तो दोनों कहां मिलेंगे और जो दोनों आठ बजे सबेरे चले हों तो कै बजे मिलेंगे ।

उत्तर ८ ४/९ कोस

(७) एक मनुष्य जब ७ १/२ घंटा दिन भर में काम करता है तो किसी काम को ११ दिन में करेगा यदि ५ घंटे करे तो कितनी देर में करेगा ।

उत्तर १० दिन

(८) जिस काम को २० मनुष्य और ९ लड़के ४० दिन में करते हैं उसी काम को ९ मनुष्य और २० लड़के कितने दिनों में करेंगे जितना काम एक लड़का करता है उस का दूना मनुष्य करता है ।

उत्तर ५१ ११/१९ दिन

(९) १५०० मनुष्यों के लिये १२० दिन के खाने की सब वस्तु हैं

जो ७५ दिन पीछे ३०० मनुष्य चले जायं तो शेष कितने दिनों तक खायंगे ।

उत्तर ५६ $\frac{१}{४}$ दिन

(१०) एक मनुष्य किसी काम को ५ दिन में करता है और एक लड़का उसी को ८ दिन में करता है पर दोनों ९ घंटा दिन भर में काम करते हैं तो जो मनुष्य और लड़का मिलकर ७ घंटा प्रति दिन करें तो किस समय में वही काम करेंगे ।

उत्तर ३ $\frac{८७}{९१}$ दिन

(११) बनारस और कलकत्ते के बीच में रेल की राह से २७० कोस पड़ता है इन दोनों नगरों के बीच आज कल दो प्रकार की रेलगाड़ी चलती एक का नाम फास्टट्रेन है यह दूसरे से जिस को स्लोट्रेन कहते हैं शीघ्र चलती है कोई स्लोट्रेन १२ बजे के ५ मिनिट उपरांत रात को और फास्टट्रेन सबेरे ५ बजे के २० मिनिट पीछे बनारस से चली तो यह जानना है कि फास्टट्रेन स्लो को कलकत्ते से कितनी दूर पर छूवेगी यह ज्ञात है कि स्लोट्रेन बनारस से कलकत्ता ३५ घंटा और ५ मिनिट में पहुंचती है और फास्टट्रेन २३ घंटा ३० मिनिट में पहुंचती है ॥

उत्तर १४७ $\frac{८७}{१३९}$ कोस

व्याज ।

जो रुपया किसी को उधार दिया जाता है उसे मूल कहते हैं और जो कुछ उधार लेनेवाला रुपयों को अपने काम में लाने के बदले देता है उसे सूद अथवा व्याज कहते हैं और सौ रुपये के लिये जो व्याज महीना भर रखने से मिलता है उसे व्याज का दर कहते हैं ॥

कुछ मूलधन का व्याज कुछ दिन में एक दिये हुए दर के अनुसार जानने की रीति लिखते हैं मूलधन को दर से पहिले

गुणो और तब जो मिले उसे १०० से भाग दो तो इस प्रकार से एक महीने का व्याज ज्ञात होगा तब जितने महीनों का व्याज जानना हो उस से इसे गुणो। यदि महीने से न्यून समय का व्याज जानना हो तो एक महीने का व्याज निकाल कर त्रैराशिक के रीति से जिस समय का जानना हो निकालो ।

व्याज समेत मूलधन को पूर्णधन कहते हैं ॥

उदाहरण—यदि व्याज का दर १॥) सैकड़ा हो तो ९ महीने में ५५।≈) का क्या व्याज होगा ।

```
          १५५।≈)
              ३
     ─────────────
     २ | ४६६≈)
     ─────────────
१०० ) २३३⌣) ( २
       २००
       ────
        ३३
        १६
       ────
       ५२८
          १
       ────
१०० ) ५२९ ( ५
       ५००
       ────
        २९
```

रु.   आ.

२   ५ $\frac{२९}{१००}$ एक महीने का हुआ

२०   —१५ $\frac{६१}{१००}$ आना उत्तर

पहिले ५५।≈) को १$\frac{१}{२}$ अर्थात् $\frac{३}{२}$ से गुणा (३ से गुणाकर दो से भाग दिया) तो २३३⌣) हुआ अब इसको १०० से भाग दिया तो

२।-)$\frac{२६}{१००}$ मिला यह एक महीने का व्याज है इसको ९ से गुणा तो ९ महीने का व्याज मिला इस प्रकार से २०॥≡) $\frac{६१}{१००}$ उत्तर आया ॥

प्रश्न ।

(१) डेढ़ बरस में ॥) सैकड़े २५३॥) का क्या व्याज होगा ।

उत्तर २२॥-) $\frac{१२}{२५}$ पाई

(२) ३ बरस ९ महीने में ८४॥) का $\frac{१}{५}$ रुपये सैकड़े के सूद पर कितनो संपूर्णा अंक होगा ।

उत्तर २२॥≡) ४ $\frac{४}{५}$ पाई

(३) ३५ दिन में ५६७८॥) पर १$\frac{१}{२}$ रुपये सैकड़े सूद से कितना व्याज होगा ।

उत्तर ८८।-) ११ $\frac{१६}{२५}$ पाई

(४) यदि २५० रुपया ३ बरस ४ महिने में ३०० होजावे तो सूद इसपर किस दर से है ।

उत्तर ॥) सैकड़ा

(५) एक बरस के अंत में २५५ रुपये का ॥) सैकड़े सूद पर कितना संपूर्णांक हुआ इस संपूर्णांक का ॥) सैकड़े के दर बरिस दिन के पीछे कितना हुआ ।

उत्तर १६≡) ५ $\frac{१०३}{१२५}$ पाई

(६) कितने काल में २५० रुपया २ रुपये सैकड़े सूद पर अपना दूना होजायगा ।

उत्तर ४ बरस २ महिना॰

(७) पहिली मार्च सन् १८६९ से २१ अक्टूबर तक २५०) पर १॥) सैकड़े के दर कितना सूद हुआ और किस तारीख तक यह रहने से सूद मिलकर ३०० रुपया होजायगा ।

उत्तर २२॥) और ११ अपरैल सन् १८७० तक

नीचे लिखे हुए नियमों अच्छी तरह से जानने से बहुत से गणित के प्रश्न अति शीघ्र होजायंगे ।

१ जितने रुपये सेर कुछ मिलता है उतने आने का एक छटांक मिलेगा ॥

२ जितने रुपये मन वस्तु मिलती है उतने आनों की ढ़ाई सेर मिलेगी ॥

३ जितने रुपयों का एक गज़ कपड़ा बिकता है उतने आनों का एक गिरह मिलेगा ॥

४ एक रुपये की जो सेर वस्तु मिलेगी एक आने की उतनीही छटांक मिलेगी ॥

इति ।

———o———